कुछ नहीं मिलता। मुरखा लक्का कबूतर लाल रंग का चतुर कबूतर शिखर=चोटी। दिक कुंजर=दिशाओं का हाथी।

शब्दार्थ पृष्ठ ३ टंटी=झगड़ा कबन्ध=हाथी। प्रतिबिम्ब= परछाईं। सोहागिन=पति वाली। सिंधोरा=सिंदूर की डिबिया, सिन्दूरदान। बोरा है=डुबाया हुआ। आलोक=प्रकाश।

वापूर्व दिशा.................सोलह गुनी है।

अर्थ यह गद्यांश भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र द्वारा लिखित 'सूर्योदय' नामक पाठ का अंश है। प्रातः काल के नवोदित सूर्य की तुलना वे अनेक प्रकार की वस्तुओं से करते हुये कहते हैं कि वह ऐसा प्रतीत होता है मानो प्राची दिशा रूपी तरुणी के सिर का लाल-मणियों से बना हुआ सिर का आभूषण है या काल को बच्चों की भांति खेल खेलने की सूझी है और उसने यह पतंग उड़ाई है। जिस प्रकार रेल के अग्रभाग पर लगी हुई लालटेन को देखकर उसके आने की सूचना मिलती है उसी प्रकार प्रातःकाल का लाल सूर्य भी समय रूपी रेल के आगमन की सूचना दे देता है अर्थात् इस बात का ज्ञान कराता है कि दिन का समय, जिसमें कि मनुष्य कार्य करता है, आगया। अथवा वह लाल प्रकाश है जिसे किसी बाजीगर ने उस स्थान पर उत्पन्न कर दिया है जहां उसका कोई आधार नहीं। वह ऐसा प्रतीत होता है मानो कोई काल रूपी विकराल गृद्ध संसार को खाने के लिये मुंह फाड़े चला आ रहा है और लाल सूर्य उसके लाल मुख की भांति है। अथवा यह किसी बड़ी टकसाल की अशरफी है जो मूल्य मे चन्द्रमा से सोलह गुनी है। यहां सूर्य का मूल्य चन्द्रमा से सोलह गुना इस लिये बताया गया है क्यों कि सूर्य चन्द्रमा से आकार मे सोलह गुना है।

पृष्ठ २ व्याख्या व कर्मकाण्डी.......पिटारा है।

श्री भारतेन्दु जी सूर्य की अनेक प्रकार की कल्पना करते हुए कहते हैं:-

सूर्य कर्मकाण्डी के अग्नि कुण्ड के समान है जिस प्रकार कर्म-

कर्मकाण्डी अग्नि कुण्ड में सामग्री को भस्म करता है उसी प्रकार सूर्य भी प्रतिदिन दिन निकल और दिनों का निर्माण कर संसार के प्राणियों को कम करता जाता है। अथवा यह मङ्गला मूर्ति देवी की मङ्गलमयी आरती है जिस प्रकार आरती की लौ से लाल जग-मगाता हुआ थाल इधर-उधर घूमता रहता है उसी प्रकार लाल सूर्य भी चारों ओर घूमता रहता है। अथवा यह गोल गोल सूर्य दरबार की घड़ी के समान है। जिस प्रकार दरबार में घड़ी गजर बजाकर एक काम की समाप्ति की सूचना देती है उसी प्रकार यह भी सायङ्काल के समय अस्त होकर लोगों के कामों के समाप्त होने की सूचना दे देता है। अथवा लाल-लाल सूर्य लाल शीशा अथवा नग लगी हुई गोल आरसी के समान है। अथवा सूर्य प्रकाश से भरे हुए आकाश में और अधिक प्रकाश करने वाला एक झरोखा है। अथवा यों समझो कि यह सरोवर रूपी आकाश का लाल कछुआ है। अथवा यह मछुए के समान है जो जाल के समान अपनी किरणों को फैलाता है अथवा यह एक जादूगर है जो अपनी छूमन्तर रूपी मृग तृष्णा से संसार को माया जाल में फाँसे हुए है।

नोट कर्मकाण्डी=वेद और पुराणों के अनुसार संस्कार करने वाला।

पृष्ठ २ व्याख्या या उसके दरबारके ······ कबन्ध का मुँह है।

सूर्य के सम्बन्ध में भिन्न-भिन्न कल्पनाएँ करते हुए श्री भारतेन्दु जी कहते हैं: यह संसार एक रणभूमि की नदी के समान है और सूर्य उसके फेन के समान है जो संसार को फेन के समान अस्थायी बताता है। अथवा यह काल रूपी सर्प का फन है जो अपने दिन २ के उदय से लोगों की आयु को खाता जाता है। अथवा सूर्य समय रूपी मतवाले हाथी का घन्टा है जो निरन्तर चलता चला जाता है। अथवा यह जगत को जाल में फँसाने वाला मन है जिसके कारण यह सारा माया जाल फैला हुआ है। अथवा यह लोगों की बुद्धि रूपी सर-स्वती का कुण्ड है जो उन्हें सरस्वती के समान ज्ञान का प्रकाश देता है।

अभ्यासार्थ प्रश्न

प्रश्न १ इस लेख के आधार पर आलंकारिक भाषा में चन्द्रोदय का वर्णन करो।

उत्तर—चन्द्रोदय का वर्णन।

सूर्यास्त अभी हुआ है। पक्षी गण अपने-अपने घरों को लौट रहे हैं। कान्त प्रतीक्षा में गृहिणियों ने अपने घरों में दीप जला दिये हैं। आकाश में चन्द्रमा निकल आया है, उसके आस पास ही अनेक तारागण भी आकाश में चमक रहे हैं वह अपनी असंख्य प्रजा में प्रतापी राजा की भांति चमक रहा है, अथवा आकाश रूपी सरोवर में कोई बड़ा श्वेत कमल खिला है, या किसी संसार को ढक देने वाली चाँदनी के बीच का चन्दोवा है अथवा किसी बड़े थाल में पारा भरा हुआ है या किसी विश्व सुन्दरी के मस्तक पर चाँदी की बिन्दी है, अथवा किसी टकसाल का चाँदी का सिक्का है या किसी महान पुरुष के यश का एकत्रित समूह है, या किसी राजकीय भवन का चाँदी का कलश है अथवा रात्रि के राहगीर रूपी पोतों के लिये प्रकाश स्तम्भ है, या धर्मात्माओंके पुण्य कार्यों को लिखने की दवात है अथवा शीशे का विशाल गोला है, या किसी चान्दी के रथ का पहिया है अथवा किसी रमणी की साड़ी का सितारा है अथवा आकाश रूपी दिगम्बर का भीख माँगने का सिलवर का कटोरा है, अथवा सदैव वस्त्र बदलने वाले की श्वेत पगड़ी है अथवा दूध का भरा हुआ थाल है या किसी रानी के हार की मणि है अथवा प्रकाश का पिण्ड है या किसी संसार सम्राट के छत्र का हीरा है या चूने के घोल का कुण्ड है, अथवा किसी खिलाड़ी की श्वेत गेंद है या किसी की जेबी घड़ी का डायल है या दूध का फुहारा है, या कटे हुये नारियल का अर्द्ध भाग है अथवा आकाश गंगा में बहता हुआ रजत थाल है।

प्रश्न २- गद्य काव्य का साहित्य में क्या महत्व है? लेखक को इस पाठ में कहां तक सफलता मिली है? स्पष्ट करो।

सृष्टि के साथ ही साथ काव्य पुरुष का भी जन्म हुआ। अनादि काल से लेकर आज तक काव्य ने प्राणिमात्र का जो उपकार किया वह दूसरा कोई भी नहीं कर सका। अतएव काव्य कला को सर्वोत्कृष्ट कला माना है। काव्य ने अपने निर्माता और पाठक को यशस्वी, धनी और लोक व्यवहार कुशल बनाकर एक योग्य नागरिक बनाया है।

काव्य के दो भेद है। पद्य काव्य और गद्य काव्य इनमे गद्य काव्य। उत्कृष्ट है क्योंकि गद्य काव्य को ही कवियों की कसौटी कहा गया है। संस्कृत में गद्य काव्य की अपेक्षा पद्य काव्यों की ही अधिकता है इसका सीधा सादा कारण प्रेसों की आज जैसी सुविधा का अभाव ही है। प्रेसों के अभाव मे पुस्तकें लिखित थीं और छात्र-परम्परा तक लेख के द्वारा ही पहुँचती थीं। लय के कारण पद्य शीघ्र कण्ठ हो जाता था अतः विद्वानों ने अपने भाव प्रकाशन का माध्यम पद्य काव्य को ही बनाया अब प्रेसों की सुविधा के कारण गद्य काव्य लिखे जाने लगे हैं।

छन्द का बन्धन होने के कारण पद्य में कर्ता, कर्म, क्रिया आदि का क्रम निश्चित नहीं होता है अतएव कभी कभी वह साधारण पाठक के लिये कठिन हो जाती है। इसी कठिनाई को ध्यान मे रखकर विद्वानों ने गद्य काव्य की ओर ध्यान दिया। गद्य काव्य में कवि अपना अन्तःकरण अपने पाठक के सामने खोलकर सरलता से रख सकता है। क्योंकि उसके सामने छन्द बन्धन की कोई कठिनाई नहीं रहती है। गद्य काव्य में कवि को अपनी विविध कल्पनाओं के प्रकाशन का अच्छा अवसर रहता है क्योंकि पद्य में कल्पनायें पुनरुक्ति का रूप धारण कर नीरस हो जाती है। इसमें अन्योक्ति अलंकार के द्वारा कवि पाठक के पास अपने यथेष्ट भाव सरलता से पहुँचा सकता है।

हिन्दी गद्य को जन्म देने के साथ साथ श्री भारतेन्दु जी ने गद्य काव्य को भी जन्म दिया। आपके गद्य काव्य के द्वार खोल देने पर

फिर अनेक गद्य कवियों ने इस क्षेत्र में पदार्पण कर इसे हरा भरा बनाना प्रारम्भ किया। श्री बालकृष्ण जी भट्ट का 'चन्द्रोदय' एक सफल गद्य काव्य का उदाहरण है। इसी प्रकार अनेक कवियों श्री ने गद्य काव्य का निर्माण किया जिनमें श्री वियोगी हरिजी का स्थान महत्त्व पूर्ण है। श्री भारतेन्दु जी को इस गद्य काव्य में बहुत अधिक सफलता मिली है। आपने सूर्य भगवान् के विविध रूपों को दिखाकर अपनी विविध कल्पनाओं का चमत्कार दिखाया है। कहीं उसे बम का गोला बताया है तो कहीं लाल कमल का सुन्दर फूल खिलाया है। कहीं उसकी रात दिन तौलने की तराजू की कल्पना की है तो कभी जगत के जगाने को नगाड़े की। इसी प्रकार कल्पनाओं के चमत्कार से लेख को अत्यन्त रोचक बना दिया है।

प्रश्न नं० ३ भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र की गद्य शैली विशेषतायें बताओ।

उत्तर भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र ने हिन्दी भाषा की गद्य शैली को एक नया रूप दिया। इनसे पूर्व हिन्दी भाषा का कोई स्थिर रूप न था। भारतेन्दु जी ने न तो विशुद्ध संस्कृत को ही अपनाया और न खिचड़ी भाषा को ही उन्होंने बीच का मार्ग लिया और हिन्दी को दल दल से निकाल कर निर्मल पद प्रदान किया। उन्होंने विषय के अनुसार ही भिन्न २ शैलियों का प्रयोग किया। किस्से कहानी आदि ऐतिहासिक विषयों पर लिखते समय चलती हुई भाषा का प्रयोग किया और गंभीर विषयों का विवेचन करते समय संस्कृत मिश्रित भाषा का प्रयोग किया जिससे भाषा भी गम्भीर हो गई है। भाव पूर्ण लेखों में आपके भावावेश का ज्ञान होता है। वहां आपकी शैली में मधुरता और मार्मिकता है। आपने विदेशी शब्दों का भी प्रयोग किया है।

संस्कृति शब्दों युक्त गम्भीर शैली का उदाहरण देखिये।

"इसके बदले यदि कालिदास कण्व ऋषि का छाती पीट कर रोना वर्णन करते तो उनके ऋषि जनोचित धैर्य की क्या दुर्दशा

होती अथवा कण्व का शकुन्तला के जाने पर शोक ही न वर्णन करते तो कण्व का स्वभाव मनुष्य स्वभाव से कितना दूर जा पड़ता।"

आपकी भाषा की मधुरता 'माधुरी' और 'चन्द्रावती' में देखने को मिलती है। भाषा विषयक सिद्धान्तों का भी आपने भली भांति पालन किया है। भाषा में जहां तक हो सका है अपने पक्ष की रक्षा की है। भावों के अनुसार ही शैली का अपनाना आपकी विशेषता है।

भारतेन्दु जी ने भाषा को अत्यन्त ही सरल और मधुर बनाया। व्यंग्य का पुट देकर उसकी सरसता में वृद्धि की। लोकोक्तियों और मुहावरों का प्रयोग करके उसकी शक्ति और चमक को बढ़ाया।

प्रश्न ४ सविग्रह समास का नाम बताओ :

उत्तर शुभाशुभ=(शुभ और अशुभ) द्वंद्व समास। क्योंकि इसमें दोनों पद प्रधान हैं।

दिगम्बर (दिशायें ही है अम्बर जिसकी अर्थात् शिवजी) बहुव्रीहि समास।

मंगल मूर्ति=(मंगल की मूर्ति) सम्बन्ध तत्पुरुष समास।

काल कबन्ध=(काल रूपी कबन्ध) रूपक कर्म धारय समास।

दिक-कुंजर दिशा रूपी कुंजर रूपक कर्म धारय समास।

प्रश्न ५ पद परिचय दो :- घिसने से, जो प्रकाशित, फैलाने वाला, जहाँ।

उत्तर घिसने से घिसना क्रिया से क्रियार्थक संज्ञा कृदन्त, करणकारक 'लाल हो गया है' क्रिया का करण। जो सम्बन्ध वाचक सर्वनाम, 'बैलून' का प्रतिनिधि।

प्रकाशित गुण वाचक विशेषण, भवन की विशेषता बताता है।

फैलाने वाला फैलाना क्रिया से कृदन्त का वाला प्रत्यय लगा कर संसार बना है।

जहाँ क्रिया विशेषण पड़े हैं' क्रिया की विशेषता बताता है।

जवानी की उमंगे २

सारांश

मनुष्य जीवन में तरुणावस्था भी ईश्वर प्रदत्त वस्तुओं में एक महत्व पूर्ण वस्तु है। जिस प्रकार फूल के खिलने पर उसके गुण अवगुणों का ज्ञान होता है उसी प्रकार किसी नवयुवक के गुण अवगुण उसकी तरुणावस्था के विचार और कार्यों से प्रकट हो जाते है। उस अवस्था मे हृदय मे उत्साह भरा हुआ होता है। वह उत्साह मनुष्य के संस्कारो तथा विचारों के अनुसार उसे उन्नति अथवा अवनति की ओर ले जाता है। अतः नवयुवकों को इस अवस्था में बहुत सोच समझ कर सरलता और सत्य के मार्ग पर दृढ़ रहकर सादा जीवन व्यतीत करना चाहिये ताकि वे अपने को बुरे व्यसनों को विनाश कारी आंधी से बचा सकें।

युवक को अधिक बातें करने वाला न होकर गम्भीर और कर्तव्य शील होना चाहिये। तरुणावस्था में अपने को बुरी आदतों से बचाना चाहिये क्योंकि बुरी आदत ही स्वभाव में बदल जाती है फिर छुटाये नहीं छूटती। कारण यह है कि यदि स्वभाव में गम्भीरता, विचार शीलता संयम आ जाता है तो छिछोरापन कुटिलता चंचलता से स्वयं ही घृणा हो जाती है। यदि बुरी आदतें निन्दा करने की प्रवृति कुटिलाई आदि आ जाती है तो इनमें मनुष्य को इतना आनन्द आने लगता है कि वह उन्हे कठिनता से छोड़ पाता है।

आत्म गौरव की भावना मनुष्य को सब बुराइयों से दूर रखती है और उसे उन्नति की ओर अग्रसर करती है अतः नवयुवकों को आत्म गौरव का ध्यान रखना चाहिये। बड़ों की बड़ाई रखना उनका कर्त्तव्य है। असावधानी करने पर वे अपना सब कुछ खो बैठते हैं।

२ जवानी की उमंगे

(श्री बालकृष्ण भट्ट)

शब्दार्थ पृष्ठ ४ उमर = आयु। बरकत = ईश्वरीय देन। सुवास

=अच्छी गंध (खुशबू) सोहावनेपन=सुन्दरता । सौन्दर्य= सुन्दरता । मन मधुप=मन रूपी भौंरा । अवगुण=दोष, बुराई । एक बारगी=एक बार ही । विकाश=खिलना । आशाबंध=आशा का बन्धन । आत्मानंनावमन्येत=अपने को कभी हीन न समझे । उन्नतमना=ऊँचे मन वाला, उदार विचार वाला । जघन्य=अत्यधिक दोष पूर्ण । निकृष्ट=नीच । मलिन=मैले, बुरे । दृढ़=मजबूत । अभाव=कमी । आशालता=आशा रूपी लता ।

व्याख्या हम हर श्रेणी .... काम है ।

यह गद्यांश श्री बालकृष्णजी भट्ट द्वारा लिखित 'जवानी की उमंगे नामक पाठ से लिया गया है । भट्ट जी नवयुवकों को नेक सलाह देते हुये कहते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने को उन्नत और योग्य बनाने का समानाधिकार है । श्रेष्ठ और योग्य बनना किसी विशेष व्यक्ति की जायदाद नहीं है जिसे वह अकेला ही भोग सके । उसके लिये प्रयत्न करना संसार के प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है और प्रयत्न करने पर ही उसका मनुष्य जीवन सफल हो सकता है ।

शब्दार्थ पृष्ठ ५ वर्ताव=व्यवहार । क्रम=सिलसिला । बेहतर =अच्छा । कुटिलाई=नीचता । रीढ़=पीठ का बाँस (मूल आधार) । विकास=खिलना । तारुण्य=जवानी दुव्यसनी=बुरी आदतों वाला । तराश-खराश=वस्त्रों की काँट छाँट । लोहे ताँबे उतर-चुकते हैं=अवनत हो जाते हैं; चरित्र खो बैठते हैं । जरा जर्जरित=बुढ़ापे के कारण दुर्बल । कृमि=कीड़ा । गंभीराशय=गंभी विचार वाला ।

बोलचाल........ ......रहना चाहिये ।

व्याख्या नवयुवकों के स्वभाव और आदतों के बारे में लेखक कहता है कि कुछ विशेष आदतों को अपनाने पर वे अपने को सुखी और उन्नतिशील बना सकते हैं । वे अपने कार्यों और बोलचाल में किसी प्रकार का कपट न रक्खें अर्थात् जैसा मन में हो वैसा ही

कर्म में हो। कपट का त्याग उनके चरित्र को ऊँचा उठाने में मुख्य आधार का कार्य करेगा। सत्य का पालन करना और सारी कठिनाइयों को झेलते हुये भी उस पर अटल रहना चरित्र की विशेषता है। इसलिये उन उत्साही युवकों को, जिनका लक्ष्य अपने चरित्र को ऊंचा बनाना है, निष्कपटता और सत्य इन दो साधनों को अपनाना चाहिये और उनका पालन दृढ़ता के साथ करना चाहिये।

नौजवानों में.....................सहकारी होती हैं।

तरुणावस्था आने पर नवयुवकों को दिखावट और बनावट का शौक लग जाता है। इसका कारण उनकी आयु और उत्साह है। यदि यह दोष उनमें प्रविष्ट नहीं होता तो यह उनका सौभाग्य है। यदि किसी नवयुवक के हृदय में किसी श्रेष्ठ कार्य को करने की उमंग उठती है तो यह उसके जीवन निर्माण के लिये महान कल्याणकारी है क्योंकि दिखावट और बनावट के लिये उठने वाली उमंग उसे विनाश के पथ पर ले जाती हैं। उत्तम कार्यों के लिये उठने वाला उत्साह उसे महा पुरुष बनने में सहायक होता है।

शब्दार्थ पृष्ठ ६ -जाहिरदारी = दिखावट। महोपकारी = अत्यन्त उपकारी, बहुत कल्याण करने वाली। महत्व = गौरव। आलीशान = श्रेष्ठ। इमारत = भवन। शरत कालीन = जाड़े की ऋतु के। वसुधा = पृथ्वी। जलमग्न = जल प्लावित। ओछे छिछोरे = नीच और चंचल स्वभाव वाले। करतूत = कर्त्तव्य। गुरुता सम्पन्न = गम्भीरता युक्त "फलानुमेयाः प्रारम्भाः संस्काराः प्राक्तना इव।" जिस प्रकार इस जन्म के संस्कारों से पूर्व जन्म के संस्कारो का ज्ञान हो जाता है उसी प्रकार रघुवंशियों के उत्तम कार्य से उनके अच्छे आरंभों का ज्ञान हो जाता है। करतूती कहि देत आप नहि कहिये साई = कर्तव्य करने वाले व्यक्ति के कार्य ही उसकी योग्यता प्रकट कर देते हैं स्वयं प्रशंसा की आवश्यता नहीं होती। गर्जति शरदि न वर्षति = शीत ऋतु के बादल वर्षने वाले नहीं होते वह केवल गरजने वाले ही होते हैं। वर्षति वर्षासु निःस्वनो मेघः = वर्षा ऋतु के बिना शब्द के बादल

ही वर्षा करते हैं। नीचो वदति न कुरुते, न वदति सुजन करोत्य वश्यम =नीच व्यक्ति बातें बनाते है कार्य नहीं करते और कर्तव्य करने वाले सज्जन कहते नहीं है अपितु अवश्य ही करते हैं। दूर देशी=दूर की बात सोचना, आगे की बात सोचना। पूर्व विधान=पहले से सोच कर काम करना। हिम संहति=बर्फ का समूह, ढेर। अल्हड़पन= वह आयु जिसमें आगे पोछे की कोई चिन्ता नहीं रहती है।

इसी तरह······ ·· ··· रखना चाहिये।

अर्थ तरुणावस्था की मस्ती मे अनेक बुरी आदतें स्वयं गृह कर लेती है उस समय युवकों का ध्यान उन बुरी आदतों की ओर नहीं जाता धीरे २ वे इस प्रकार जम जाती है कि जीवन भर उनके लिये रोना पड़ता है और हजारों उपाय करने पर भी उनसे पीछा नहीं छूटता। इसलिये जब तक पच्चीस वर्ष तक की आयु न निकल जाय कदम फूंक फूंक कर रखना चाहिये। इस अवस्था मे कोई ज्ञान नहीं रहता अतः यह मदह पच्चीसी कहलाती है।

शब्दार्थ पृष्ठ ७ दृढ़=मजबूत। बद्धमूल=बहुत दिन तक रहने वाली। आमरणान्त=मरनेतक। दामनगीर=साथ की। खुलासा= सारांश। सबूत=उदाहरण कारगर=सफल। नाजुक वक्त=कठिन समय। उर्वरा=उपजाऊ। गांभीर्य=गम्भीरता। छिछोरापन चंचलता। दार्शनिक=दर्शन शास्त्र जानने वाला। विचार शीलता =विचार करने का स्वभाव। ओछापन=नीच कार्य करने की आदत। चवाव=निन्दा। संयम=मन और इन्द्रियों को वश में करना। साहस=हिम्मत। कुशीला=कलंकित। अवगुण=बुराई। प्रतिक्षण=हर समय।

यथाहि ···· ···न···रक्षति जिस प्रकार कि मैले कपड़ों के पहनने से जहाँ कही भी बैठ लिया जाता है उसी प्रकार चरित्र से गिरा हुआ मनुष्य अपने शेष चरित्र की भी रक्षा नहीं करता है।

शब्दार्थ आत्म गौरव=आत्मा की बडाई। अणुमात्र कण भर, थोड़ा भी। आँख का पानी ढरक गया है=लज्जा त्याग दी है।

इजाव=आदर। बदनाम=निन्दित। धृष्ट=उद्धखल, धूर्त ढीट। वड़प्पन=गौरव।

अभ्यासार्थ प्रश्न

प्रश्न १- आजकल के नवयुवकों के जीवन में जवानी की उमंगों के कौन-कौन से दोष आ जाते हैं? और क्यो?

उत्तर तरुणावस्था में नवयुवको में अनेक दोष आ जाते हैं क्यों कि जवानी की उमंगें उनके मन रूपी सागर में हिलोरे लेने लगती है और किनारे की सुन्दर और असुन्दर चट्टानों की बिना परवा किये सबको काट डालती है। तरुण नवयुवक भी भले बुरे की कोई ज्ञान नहीं रखता और उन साधनों को अपना लेता है जो अवनति के गर्त में ढकेल देते हैं।

नवयुवक दिखावट और बनावटीपन को बहुत पसन्द करते हैं और इस सजावट के कारण उनमें अनेक प्रकार की बुरी आदतें आ जाती हैं जिनके कारण अल्पायु में ही वृद्ध की भांति दिखाई देने लगते हैं। यदि नवयुवक की ये उमंगें किसी सत्कार्य के लिये होती हैं तो वह अपने अन्दर अच्छी आदते उत्पन्न करता है और भविष्य में महापुरुष बन जाता है।

नवयुवकों में बुरी आदतें धीरे धीरे आती जाती हैं वह उनकी ओर कोई ध्यान नहीं देता यह उसकी कमजोरी है। बुरी आदतों से उसे शीघ्र पीछा छुड़ाना चाहिये और हर समय प्रत्येक कार्य बड़ी सावधानी के साथ करना चाहिये। इस समय बुराई को दूर करके भलाई का बीज न बोया गया तो बुराइयों से छुटकारा मिलना असम्भव है।

तरुण व्यक्ति अक्सर छिछोरे और वाचाल हो जाते हैं। उन्हें अपने कर्तव्य का ध्यान नहीं रहता दूसरों के एव उन्हे दिखाई देते हैं अपने नहीं। संयम, विचार शीलता, नम्रता आदि का उन्हे कोई ध्यान नहीं रहता। यदि दूसरों की निन्दा करने की आदत पड़ गई तो उन्हे विना निन्दा किये भोजन ही नहीं पचता।

अधिकांश नवयुवक उन कार्यों को कर डालते हैं जिनके कारण उनका सारा आत्म गौरव नष्ट हो जाता है और जिसके कारण उनका सारा जीवन ही नष्ट हो जाता है। बिना विचारे किसी कार्य को वे जवानी की उमंग में कर डालते हैं परिणाम की उन्हे चिन्ता नहीं रहती किन्तु बाद में उसके दुस्परिणाम को जानकर सारे जीवन पछताते रहते हैं। अतः नवयुवकों को प्रत्येक कार्य भविष्य के जीवन और उसके परिणाम को विचार कर करने चाहिये।

बहुत से नवयुवक जवानी के जोश में अपने से बड़ों की बातों की कोई परवा नहीं करते उनके अनुभव से वे कोई लाभ नहीं उठाते। परिणाम यह होता है कि उनका कुछ समय पश्चात ही चारो ओर अपमान होने लगता है। लोग उनकी निन्दा करने लगते हैं और वे अपना सारा आत्म गौरव खो बैठते हैं जिसके कारण उनको स्वयं अपना जीवन ही भार स्वरूप मालूम होने लगता है। अतः नवयुवको को अपने से बड़ों की बात माननी चाहिये और उनके बड़प्पन की रक्षा करनी चाहिये ताकि उनका यश बढ़े।

प्रश्न २ लेखक के अनुसार जवानी की उमंगों को किस प्रकार सन्मार्ग पर लगाना चाहिये, जिससे कि चरित्र गठन और मनोबल प्राप्त हो सके।

उत्तर लेखक के अनुसार जवानी की उमंगों को सन्मार्ग पर लाने के लिये छल कपट का त्याग और सत्य का पालन अत्यन्त आवश्यक बताया गया है। क्योंकि जब तक मनुष्य छल कपट का त्याग नहीं करता वह दूसरों से प्रेम नही कर सकता वह अपने स्वार्थ में ही रत रहेगा। स्वार्थी मनुष्य का कोई चरित्र नही होता। सत्य का पालन चरित्र गठन के लिये रीढ़ के समान सहारा है। सत्य के साथ दृढ़ता का होना आवश्यक है। राजा हरिश्चन्द्र की भांति अनेक आपत्तियों का सहन करते हुये भी सत्य के मार्ग से विचलित नहीं होना चाहिये। जब नवयुवक 'एकहि साधै सब सधै।' वाले सिद्धान्त को अपना लेगा तो उसे उत्तरोत्तर सफलता मिलती

चली जायगी।

तरुण व्यक्तियों को अपनी उमंगो का दुरुपयोग नहीं करना चाहिये उन्हे अपनी बनावट और दिखावट की ओर अधिक ध्यान नहीं देना चाहिये किन्तु अपने जीवन के कल्याण कारी कार्यों की ओर ध्यान देना चाहिये। उन्हे संयमी, गम्भीर विचार शील और नम्र होना चाहिये वाचालताको त्याग कर शान्ति पूर्वक कार्य करना चाहिये।

बुरी आदतों से उन्हे सदैव सतर्क रहना चाहिये। अपनी बुराइयों को ढूंढ़ ढूंढ़ कर बाहर निकालना चाहिये और भलाइयों का प्रवेश करना चाहिये क्योंकि जवानी का समय ही ऐसा होता है कि इस समय पर जैसी आदत पड़ जाती है उससे फिर जन्म भर छुटकारा नहीं मिलता।

जवानी के जोश मे मनुष्य प्रत्येक कार्य कर सकता है। उस समय प्रत्येक कार्य को करने की जल्दबाजी होती है किन्तु परिणाम सोच कर कार्य करने वाले व्यक्ति ही अपने जीवन को सफल बना लेते हैं। यदि युवक के अन्दर अच्छी आदतें हैं और वह अपनी उमंगों का प्रयोग उनसे भी श्रेष्ठ तर आदतों की वृद्धि मे कर रहा है तो वह निश्चय ही एक दिन महापुरुष हो जायगा और संसार उसके मार्ग पर फूल बिछायेगा। युवक का लक्ष्य सदैव ऊंचा होना चाहिये और साथ ही सद्प्रयत्न भी। नीचे की ओर देखने वाले नीचे ही गिरते है।

जवानी के जोश में अपने से बड़ों की बात का और उनके बड़प्पन का ध्यान रखना चाहिये। प्रत्येक कार्य को करते समय अपने आत्म गौरव को न भूलना चाहिये।

प्रश्न ३ -पं० बालकृष्ण भट्ट की गद्य शैली पर प्रकाश डालो।

उत्तर पं० बालकृष्ण भट्ट प्रारम्भिक काल के गद्य लेखको में अच्छे लेखक थे। इन्होंने अपने लेखो द्वारा हिन्दी साहित्य भण्डार की वृद्धि की। इनके लेख विनोद पूर्ण और वक्रता लिये हुये होते थे। भाषा में अलंकारों का प्रयोग भी खूब किया है। अलंकारों के प्रयोग से इनकी शैली की चमक ही बढ़ी है उसमे किसी प्रकार की वक्रता

नहीं आई है। संस्कृत प्रधान शैली में अलंकारों का प्रयोग खूब किया है। साधारण वस्तुओं पर चमत्कारिक ढंग से लेख लिखने में आप बड़े कुशल थे। 'चन्द्रोदय' नामक लेख का एक उदाहरण देखिये:

"अथवा जंगम जगतमात्र को डसने वाले अनंग भुजंग के फन पर का चमकता हुआ मणि है, या निशा नायिका के चेहरे की मुस्कराहट है, या संध्या नारी की काम केलि के समय में उसकी छाती पर लगा हुआ नखक्षत है, अथवा जगज्जेता काम देव का धन्वा है।"

आपकी शैली के तीन मुख्य रूप है। एक में संस्कृत शब्दो की बाहुलता होती थी, दूसरी में उर्दू और फारसी के शब्द पाये जाते हैं और तीसरी में विदेशी शब्द अर्थात अंगरेजी भाषा के चलते शब्दों की-अधिकता होती थी। संस्कृत प्रधान शैली में आपने गम्भीर विषयों पर लिखा है अलंकारों का प्रयोग किया है किन्तु फिर भी भाषा की सरसता में अन्तर नहीं आया है। मुहावरो से तो आपको विशेष प्रेम होने के कारण उनकी उपेक्षा आपने किसी भी स्थान पर नहीं की है। संस्कृत प्रधान भाषा का उदाहरण देखिये

"शान्ति और क्षमा के यह आधार थे, तृष्णालता गहन वन के काटने को मानो कुठार थे, अज्ञान तिमिर के हटाने को सहस्त्रांशु थे, हठ और दुराग्रह आदि महाक्रूर ग्रह के अस्ताचल थे, उदार भाव के हृदयगिरि थे।"

उर्दू की ओर झुकी हुई आपकी दूसरी झांकी है जिसमें अरबी और फारसी के शब्दों का आपने खुलकर प्रयोग किया है। इसमे केवल चलते हुये शब्द ही न थे बल्कि साहित्यक शब्दों का भी प्रयोग कर दिया था। इस शैली में आपने साधारण विषयो पर लिखा है। इस शैली में आपने अजहद, मोतकिद, खामख्वार वेतकल्लुफी हिमाकत आदि शब्दों का प्रयोग किया है

आपका विदेशीपन अरबी फारसी का ही नहीं अंगरेजी का भी था। पुलपिट, कनवर सेसन, फारमेलिटि आदि शब्दों का प्रयोग करते थे।

मिश्रित और संस्कृत प्रधान आपकी दो भाषायें थीं जिनका प्रयोग

वे विचारो के अनुसार करते थे गम्भीर विषयों पर लिखते समय संस्कृत प्रधान भाषा को अपनाते थे और साधारण विषयो पर लिखते समय मिश्रित भाषा का प्रयोग करते थे। आपकी भाषा शैली पं० प्रताप नारायण मिश्र से मिलती जुलती थी किन्तु फिर भी अपना पन लिए हुए थी। मिश्रित भाषा में वे संस्कृत के तद्भव रूपों का वे अक्सर प्रयोग कर दिया करते थे जैसे विन, लिलार, तरुनाई साखी आदि। संस्कृत अंग्रेजी पारसी आदि भाषाओं की सूक्तियों का भी प्रयोग कर देते थे कभी-कभी दो भाषाओं के शब्दों को या लगाकर एक साथ ही रख देते थे 'अपव्यय या फिजूल खर्ची'। मुहावरों का प्रयोग खूब करते थे। घरेलू कहावतें भी आपकी भाषा में आ गई हैं जैसे 'नाऊ ब्राह्मण हाऊ' जाति देख गुर्राऊ।

प्रश्न ४ इन प्रयोगो का आशय समझाओ:

आँखों का पानी ढरक जाना, जो बादल गरजते हैं, वे बरसते नहीं, मदह-पचीसी का वक्त।

उत्तर आँख का पानी ढरक जाना = लज्जात्याग देना; बेशरम हो जाना।

जो बादल गजरते है, वे बरसते नहीं = जो व्यक्ति ज्यादा बातें करते हैं वे काम करने वाले नहीं होते।

मदह पचीसी का वक्त = वह अवस्था जिसमे उचित अनुचित का कोई ध्यान नहीं रहता।

प्रश्न ५ अधोलिखित शब्दो की व्युत्पत्ति बतलाओ और इनमें से कृदन्त और तद्धित कौन-कौन से है? उन्हे दर्शाओ बर्ताव, बोलचाल, कुटिलाई, बनावट, हेर फेर, गाम्भीर्य, चवाग, दशीला।

उत्तर बर्ताव = कृदन्त है जो बरतना धातु से बना है। बोल-चाल कृदन्त। बोलना धातु से बना है। कुटिलाई तद्धित। कुटिल विषेशण से भाववाचक संज्ञा बनी है। बनावट कृदन्त। बनना धातु से भाववाचक संज्ञा बनी है हेर फेर = कृदन्त। हेरना और फेरना धातुओं से हेर फेर बना है। गम्भीर्य = तद्धित। गम्भीर विषेशण से

बना है। चबाव=कृदन्त। चबाना क्रिया से बना है। दगीला=तद्धित। दाग संज्ञा से बना है।

प्रश्न ६ समास विग्रह का नाम निर्देश करो:

उन्नतमना, नौजवान, जराजर्जरित, दुर्व्यसनी, गुरुता। सम्पन्न, पूर्वविधान, हेरफेर, और प्रतिक्षण।

उत्तर उन्नतमना उन्नत है मन जिसका-बहुव्रीहि। नौजवान - नौ जो जवान कर्मधारय। जराजर्जरित जरा से जर्जरित करण तत्पुरुष। दुर्व्यसनी दुर है व्यसन जिसमें बहुव्रीहि। गुरुता-सम्पन्न- गुरुता से सम्पन्न करण तत्पुरुष। पूर्वविधान पूर्व जो अवधान कर्मधारय। हेर-फेर हेर और फेर द्वन्द्व। प्रतिक्षण क्षण-क्षण अव्ययी भाव।

प्रश्न ७ शब्द	हिन्दी रूपान्तर
बरकत	समृद्धि
नुमायश	प्रदर्शिनी
तकाजा	माँग
आलीशान	उत्कृष्ट
कारगर	सफल
दामनगीर	साथी
खुदबखुद	स्वयं
दगीला	कलंकित

प्रश्न ८ पद-परिचय दो: क्या-क्या, सूझ कर, बेहतर, उचित, रोसों, पहने, आपसे आप, छूटेगी।

उत्तर क्या-क्या गुण वाचक विशेषण गुण अवगुण की विशेषता बताता है।

सूझकर—पूर्वकालिक क्रिया, सूझना अकर्मक क्रिया से बनी है।

बेहतर गुणवाचक विशेषण, आदमी की विशेषता बताता है।

उचित गुणवाचक विशेषण, यहाँ संज्ञा की तरह प्रयुक्त 'है' क्रिया का पूरक है।

ऐसों ही निश्चय वाचक सर्वनाम 'ओछे-छिछोरे' का प्रतिनिधि।

पहनने पहनना क्रिया से क्रियार्थक संज्ञा।

आपसे आप प्रकार वाचक क्रिया विशेषण। आ जाती है क्रिया की विशेषता बताती है।

छूटेगी अकर्मक क्रिया, कर्तृ वाच्य, सामान्यावस्था, भविष्यत् काल, प्रथम पुरुष एक वचन इसका कर्ता 'वे' है।

६ उपवाक्य विश्लेषण करो:

कली होने पर वह किस उठान से······ ······प्रकट कर देता है।

उत्तर (१) कली होने पर वह किस उठान से उठा था प्रधान उपवाक्य।

(२) तथा क्या क्या उसमे गुण अवगुण थे समान स्वतंत्र उपवाक्य नं० १ का।

(३) यह सब खिलने के साथ ही एकबारगी खुल पड़ते हैं संज्ञा उपवाक्य 'थे' क्रिया का पूरक नं० २ में।

(४) आगे को अब उससे क्या क्या उम्मेद है समान स्वतंत्र उपवाक्य नं० २ का।

(५) सो भी उसका इस समय का विकास प्रकट कर देता है संज्ञा उपवाक्य है क्रिया का पूरक। सम्पूर्ण वाक्य संयुक्त।

अर्थात् इसेशा······ दिखला देते हैं।

यह गद्यांश श्री पं० बालकृष्ण भट्ट द्वारा लिखित जवानी की उमंगे नामक पाठ से लिया गया है। नवयुवकों को नेक सलाह देते हुये भट्ट जी कहते हैं कि युवकों को सदैव इस बात का प्रयत्न करना चाहिये कि वे अपनी बात को बिना छिपाये हुये ही ज्यों की त्यों प्रगट कर दें अधिकांश नवयुवक बनावट की ओर अधिक ध्यान देते हैं यदि किसी के अन्दर यह आदत नही है तो यह उसके सौभाग्य की बात है। वह उमंग जिसमे दिखावट की भावना नहीं है युवक के जीवन निर्माण में सहायक होती है और उसे महापुरुष बना देती है। इसके द्वारा वह आत्म गौरव प्राप्त करता है और दूसरों की दृष्टि मे आदर

का पात्र बन जाता है। जिस प्रकार शीत ऋतु में आने वाले बादल केवल गरजने वाले होते हैं बरसने वाले नहीं उसी प्रकार ज्यादा बातें करने वाले और तड़क भड़क से रहने वाले नवयुवक केवल बातें ही बनाते हैं किन्तु कुछ करके नहीं दिखाते। गम्भीर नवयुवक ही वर्षा ऋतु के बादलों की भांति कार्य करके दिखाते हैं।

३ दाँत

(स्वर्गीय पं० प्रतापनारायण मिश्र)

सारांश ब्रह्मा ने दाँतों की रचना मे सबसे अधिक कौशल दिखाया है। यद्यपि कवियों ने आँख भौं इत्यादि का भी वर्णन किया है किन्तु मुख के पोपले हो जाने पर सब अङ्गों का सौन्दर्य बेकार हो जाता है। दाँतों के रहने पर पाक शास्त्र के छहों रसों का और काव्य शास्त्र के नौओं रसों का आनन्द आता है।

हमारे दाँत हमें शिक्षा दे रहे हैं कि हमारी हड्डियाँ हाथी दाँत की नहीं जो मरने के बाद भी काम आवें अतः जीतेजी जो कुछ भी परमार्थ हो सके कर लीजिये। दाँत अपने स्थान पर ही शोभायमान होते हैं। टूटने पर अपवित्र स्थान पर फेंक दिये जाते हैं। इसी प्रकार शरीर में जब तक प्राण हैं तब तक उसकी शोभा है अन्यथा वह बेकार है।

जिस प्रकार हँसी के समय दाँतों के बाहर निकल आने से मुख की शोभा बढ़ जाती है उसी प्रकार स्वदेश चिन्ता के लिये विलायत जाने में बड़ाई ही है। किन्तु यदि आप विलायत जाकर स्वदेश की चिन्ता छोड़ दें तो आपका जीवन दाँतों के समान है जो होठ या गाल के कट जाने से बाहर निकल कर मुख की शोभा नष्ट कर देते हैं। हम उन लोगों को धन्यवाद देंगे जो दाँत काटी रोटी का बर्ताव रखते हैं। परमात्मा करे सब हिन्दू मुसलमानों का देश हित के लिये चाव रहे।

चाहे हमारे लेख को देखकर कोई दाँतों तले उँगली दबाये या दाँता किलकिल बताये किन्तु हमारा दाँत जिस ओर लगा है लगा रहेगा औरों की दाँत कटाकट से हमको क्या ?

दाँतों के वर्णन में अनेक ग्रन्थ लिखे जा सकते हैं। पुष्पदन्ताचार्य ने एक दन्त गणेशजी को प्रणाम कर महिम्न स्तुति लिख डाली। यदि हम दाँतों से कौड़ी उठाने वाले कंजूसों की निन्दा करें तो बहुत लिख सकते हैं। हाथी दाँत से क्या क्या वस्तु बनती है। कौड़ी के प्रत्येक दाँत का हिसाब किस प्रकार लगाया जा सकता है? दन्त धावन (दातुन) से क्या लाभ है? "लम्बे दाँत वाला कोई विरला ही मूर्ख होता है" यह क्यों लिखा? भिन्न-भिन्न जानवरों के दाँत भिन्न-भिन्न रूप से क्यों बनाये गये? इत्यादि बातों के लिये बड़ा विस्तार चाहिये। बड़ी-बड़ी विद्याओं का पढ़ना लोहे के चने है और वे हरएक से नहीं फूटेंगे।

पृष्ठ ११ शब्दार्थ कौशल=चतुरता। मुँह में दाँत हैं=मुख में शक्ति है। यावत्=सम्पूर्ण। भोग्य पदार्थ=खाने योग्य पदार्थ। बरुणी=बरौनी। बाल की खाल निकालना=बारी की निकालना। नासिका=नाक। सुघराई=शोभा। नैनबाण की तीक्ष्णता=वह नेत्र जिनके कटीलेपन का वर्णन बाणों से किया जाता है। भ्रूचाप=भौंरूपी धनुष। अलक पन्नगी=सर्पिणी के समान लम्बे लम्बे बाल। अवयव=अङ्ग। छः रस=कड़वा, तीता, कसैला, मधुर, नमकीन, खट्टा। काव्य शास्त्र के नौ रस १. शृङ्गार २. हास्य ३. करुण ४. रौद्र ५. वीर ६ भयानक ७. वीभत्स ८. अद्भुत ९. शान्त। प्रमुदित=प्रसन्न। गूँगे की मिठाई=अवर्णनीय। होठ चबाना=क्रोध करना। दाँत दिखाना=दीनता दिखाना। रिस=क्रोध। दाँत पीसना=क्रोध करना। दाँत बाना=आश्चर्य करना। मुँह फैलाना=भौंचक्का रह जाना। उत्पादनार्थ=पैदा करने के लिये।

इस दो अक्षरों " ...नहीं रहता।

व्याख्या। श्री प्रतापनारायण मिश्र उन सफल लेखकों में से थे जो किसी भी विषय को रोचक बनाने मे सिद्धहस्त थे। आप दाँतों के सम्बन्ध में कहते हैं :

दाँतों के निर्माण में ब्रह्मा ने जो चतुरता दिखाई है उसका वर्णन

करने की शक्ति किसी में नहीं है। मुख की सारी शोभा और खाने की वस्तुओं का स्वाद दाँतो पर ही निर्भर है। यद्यपि कवियों ने बाल, भौं और बरौनियों की शोभा के वर्णन में बड़ी कुशलता दिखाई है किन्तु बिना दाँतों के जब मुँह पोपला हो जाता है और ठोड़ी और नाक मिल जाती है उस समय मुख की सारी शोभा नष्ट हो जाती है। जिस प्रकार बाण शरीर को वेधते हैं उसी प्रकार तेजी से हृदय पर प्रभाव डालने वाले नेत्रों का कटीलापन, धनुष के आकार की बिना झुर्री पड़ी आँखें और सर्पिणी के समान लम्बे, काले और मादक बाल भी मुख में दाँत न रहने से शोभाहीन हो जाते हैं।

अङ्ग गलित ....भज मूढ़ मते।

अर्थ अङ्ग गल गया, सिर सफेद हो गया, और मुख पोपला हो गया, और (हे वृद्ध) तू लकड़ी पकड़ कर चलने लगा तब भी धन की आशा नहीं छोड़ता। हे मूर्ख इस समय तू भगवान् का भजन कर।

पृष्ठ १२ शब्दार्थ परमार्थ = परोपकार। दन्तावली = दाँतो की पंक्ति। मुखारविन्द = कमल के समान मुख। अपावन = अपवित्र। दशन = दाँत। प्राण-पण = जी जान से।

मुख में....... ...निकसत हाड़।

व्याख्या दाँत मुख मे तो माणिक के समान शोभायमान होते हैं किन्तु बाहर निकलने पर केवल हड्डी ही रह जाते हैं।

स्थान भ्रष्टा ....नखा नराः।

व्याख्या = दाँत, केश, और नख अपने स्थान से अलग होकर शोभायमान नहीं होते।

सच है .... हड्डी हो जाते हैं।

व्याख्या जब हम किसी काम के करने योग्य नहीं रहे तब हमारा आदर कौन करे। जब हम मृत्यु शय्या पर पड़े है, और हमको मरणासन्न देखकर यदि जल में फेंक दिया जाय तो कछुआ मछली और स्थल पर कौए और कुत्ते हमारे मांस को खाने के लिये तैयार हैं। यदि ऐसे समय मे भी हमने भगवान् का स्मरण न किया

तो हमारा मनुष्य जन्म लेना ही व्यर्थ है। हाथी के दाँत मरने पर भी काम आते हैं किन्तु तुम्हारी हड्डियाँ मरने के बाद किसी काम नहीं आयेंगी। अतः जीवन में कुछ परोपकार कर जीवन को सफल कर लीजिये। मानों दाँत आपको शिक्षा दे रहे हैं कि इनकी शोभा तब तक ही की है जब तक कि ये अपने स्थान पर है। अपने स्थान पर रहने पर तो दाँतों की बड़े बड़े कवि प्रशंसा करते हैं क्योंकि मुख की शोभा इन्हीं के कारण बनी हुई है। किन्तु मुख से बाहर निकलने पर ये ही दाँत अपवित्र और घृणित स्थान पर फेंक दिये जाते हैं।

हाँ यदि........ .... पसीना आता रहे।

व्याख्या मिश्रजी देश हित के लिये विदेश-गमन से हँसने के समय दाँतो के निकलने से और विदेश मे जाकर स्वदेश को भूल जाने की होंठ कटे हुए दाँतो से तुलना करते हुए कहते है।

अपने देश भारत को छोड़कर विलायत जाने को अपने स्थान से भ्रष्ट होना नहीं समझना चाहिये। देश हित के लिये विलायत जाना इसी प्रकार शोभा देता है जिस प्रकार हँसने के समय दाँत बाहर निकलकर मुख की शोभा बढ़ा देते हैं। किन्तु विदेश में जाकर स्वदेश की चिन्ता छोड़ देना उन दाँतों के समान है जो होंठ या गाल के कट जाने पर बाहर निकलकर मुख की सारी शोभा नष्ट कर देते हैं। हमारी दृष्टि से वे लोग प्रशंसा के पात्र है जो अपने देश वासियों से घनिष्ठ मित्रों का सा व्यवहार रखते है। भगवान् की कृपा से देश हित की रक्षा के लिये सब हिन्दू मुसलमानो मे उत्साह और प्रसन्नता बनी रहे।

कायर कपूत........ ....भारत तन हरौ।

व्याख्या मिश्रजी चापलूसों पर व्यङ्ग करते हुए कहते हैं कि तुम लोग कायर बनकर और भारत के कुपुत्र कहलाकर दीन बनकर भारत के अज्ञान को दूर करो। इसमें व्यङ्ग यह है कि यद्यपि तुम कायर होने के कारण भारत के कुपुत्र हो तो भी देश के अज्ञान को दूर करने का दावा करते हो।

मिश्रजी का मुहावरों पर अच्छा अधिकार था। इस पाठ में आप ने दाँत के सम्बन्ध में अनेक मुहावरों का प्रयोग किया है। यहाँ उनका अर्थ और प्रयोग दिखाया जाता है।

मुँह में दाँत होना शक्ति होना। प्रयोग मैं देखूँगा कि किसके मुँह में दाँत हैं जो मेरा मुकाबला कर सके।

बाल की खाल निकालना बारीकी निकालना। प्रयोग जिरह करने के समय वकील लोग बाल की खाल निकालते हैं।

गूँगे की मिठाई अवर्णनीय। प्रयोग। ब्रह्म के ध्यान में जो आनन्द आता है वह तो गूँगे की मिठाई है जो ध्यान लगाता है वही आनन्द लेता है। दूसरे से कह नहीं सकता।

होठ चबाना क्रोध करना उस समय वह होठ चबाकर ही रह गया उसने गुस्से पर काबू कर लिया।

दाँत दिखाना दीनता दिखाना -भगवान् न करे किसी के सामने दाँत दिखाने पड़ें।

दाँत पीसना–क्रोध करना–शत्रु को देखते ही राम दाँत पीसने लगा।

दाँत बाना भयभीत होना सिंह को देखकर उसने दाँत बा दिये।

मृत्यु की डाढ़ में मरणासन्न इस समय वह मृत्यु की डाढ़ में पड़ा हुआ है।

दाँत काटी रोटी घनिष्ठता यदि तुम राम से काम निकालना चाहते हो तो श्याम को पकड़ो क्योंकि उन दोनों की तो दांत काटी रोटी है।

दांतों पर पसीना आना प्रेम उत्पन्न होना परमात्मा करे इस पवित्र कार्य में उन दोनों के दांतों पर पसीना आता रहे।

दांतों तले उँगली दबाना आश्चर्य करना राम ने ऐसी आश्चर्य जनक बात कही कि उपस्थित मनुष्यों में से सभी ने दांतो तले उँगली दबा ली।

दांत बजाना साधारण प्रशंसा करना राम की बात को सुन कर वह केवल दांत बजाकर रह गये।

दांता किल किल- व्यर्थ की लड़ाई इस व्यर्थ की दांता किल-किल से कोई लाभ नहीं। गृहस्थ के काम में तो सबको ही सहयोग देना चाहिये।

दांत लगाना लेने की तीव्र इच्छा मेरी इस पुस्तक पर राम का दांत लगा हुआ है। भगवान् ही बचाये।

दन्त कटाकट व्यर्थ की बातें इस व्यर्थ की दन्त कटाकट से क्या लाभ ? कोई सार की बात कहो।

कौड़ी को दांत से उठाना -बहुत लोभ करना- रामलाल से चन्दा लेना बड़ा कठिन है क्योंकि वह दांतों से कौड़ी को उठाता है।

लोहे के चने बहुत कठिन काम विद्या पढ़ना लोहे के चने चबाना है।

प्रश्न १ 'दांत' नामक लेख पर एक छोटा सा निबन्ध लिखो।

उत्तर --शरीर के प्रत्यंगों में दांत अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इसका महत्व दिखावट तथा कार्य दोनों में ही है। मनुष्य को सौंदर्य से प्रेम है। सौंदर्य दिखाने की वस्तु है। मनुष्य अथवा स्त्री कोई भी हो उसके मुख की सुन्दरता दांतों से ही है। बिना दांतों के सारा सौंदर्य नष्ट हो जाता है। दूसरे रूप में दांतों को देखा जाय तो वे शरीर के लिये अत्यन्त महत्व पूर्ण कार्य करते हैं। खाने वाली वस्तुयें दांतों द्वारा चबाकर खाने में स्वाद देती है और शीघ्र पच जाती है। दांतों के अभाव में भोजन चबाकर नहीं खाया जा सकता और परिणाम यह होता है कि भोजन भलीभांति नहीं पचता और अनेक बीमारियों का सामना करना पड़ता है।

दांतों के द्वारा मनुष्य हृदय के भिन्न-भिन्न भावों को प्रकट कर सकता है। करुणा के समय वह अपने होंठ चबाने लगता है। क्रोध के समय दांतों को चबाकर अपना क्रोध प्रकट करता है। इसके अतिरिक्त दांत मनुष्य को शिक्षा प्रदान करते हैं। वे इस बात की शिक्षा देते हैं कि जब तक मनुष्य अपने कर्तव्यों का पालन करता है तभी तक उसकी प्रतिष्ठा होती कर्तव्य भ्रष्ट होने पर उसका कोई

मूल्य नहीं रह जाता। दांत जब तक मुँह के अन्दर रहकर कार्य करते रहते है तब तक मनुष्य उनका आदर करते हैं टूटने पर वे दूध की मक्खी की भांति निकाल कर फेंक दिये जाते हैं।

साधारणतः यह देखा जाता है कि प्रारम्भिक अवस्था में मनुष्य दांतों की सफाई की ओर कोई ध्यान नहीं देते। जब दांतों की बीमारी हो जाती है और एक एक करके उखड़ना आरम्भ होते हैं तब मनुष्यों को उनकी चिन्ता होती है। जो कुछ होना है वह तो होकर ही रहता है। अपनी गलती का परिणाम भी भुगतना पड़ता है। मुँह के अन्दर दांत नहीं रहते। मुख का सौंदर्य नष्ट हो जाता है। भोजन की वस्तुयें पहले जैसी नहीं रह जाती फिर तो सत्तू चाटकर, रोटी दूध अथवा दाल मे भिगो कर चबानी पड़ती है। सच पूछो तो फिर भोजन भार स्वरूप मालूम पड़ने लगता है। उदर ज्वाला की शांति के लिये चाहे जो किसी भी रूप में खा लिया जाय किन्तु जीवन का सारा आनन्द नष्ट हो जाता है। यदि वे मनुष्य दांतों की कीमत को पहले ही समझ लेते तो उन्हें इस आपत्ति का सामना न करना पड़ता। दांत मनुष्य शरीर के लिये अत्यन्त आवश्यक कार्य करते है अतः उनकी रक्षा करना प्रत्येक का कर्तव्य है।

प्रश्न २ दांत पर लेखक ने कविता के नव रसों को किस प्रकार घटाया है? संक्षेप में उसका विवरण दो।

उत्तर दांतों पर कविता के नवो रसों का लेखक ने बड़े सुन्दर ढंग पर दिग्दर्शन कराया है। शृंगार रस जो सब रसों मे श्रेष्ठ है उस पर लगभग सभी कवियो ने सुन्दर कवितायें रची है। उन्होंने सुन्दरियों की सुन्दरता का वर्णन करते समय उनकी दन्तावली का वर्णन अवश्य ही आकर्षक ढंग से किया होगा। रसिकों के सम्मुख जब चटकीले तथा सुन्दर ढंग से जड़े हुये दांतों का दृश्य आता है तो वे एक अभूतपूर्व आनन्द का अनुभव करते हैं।

कविता का हास्य रस जभी पूर्ण समझा जाता है जब उसे पढ़कर इतनी हंसी आये कि हसते २ दांत निकल पड़ें। जिस कविता ने

इतना नहीं हँसाया वह हास्यरस का महत्व ही न-ी रखती।

करुणा रस का प्रदर्शन यदि दूसरों के प्रति हो तो होंठ चबाकर किया जाता है। अपनी दीनता के समय तो दांत दिखाकर अपनी दीनता प्रकट की जाती है और दूसरों के कृपा की याचना की जाती है।

क्रोध के समय दांत स्वयं ही एक दूसरे से टकराने लगते हैं होंठ के ऊपर आकर दृढ़ता से जम जाते है। वीर रस में भी दांत वीर की सत्कीर्ति या उसके शत्रु की सेना अथवा दुःखियों के दुःख को दूर करने में ही अपना महत्ता समझता है।

भयानक रस का प्रदर्शन सिंह अथवा व्याघ्रादि के दांत कराते हैं उनके दाँतों का ध्यान करते ही भयानक दृश्य उपस्थित हो जाता है फिर प्रत्यक्ष का कहना ही क्या।

वीभत्स रस का दर्शन किसी जैनी महाराज के दाँतों को देखकर होता है। उनके दांत इतने मैले होते है कि उस मैले में पैसा चिपक जाय।

अद्भुत रस मे तो आश्चर्य की वात सुनकर मनुष्य हक्का बक्का हो जाता है और दाँत और मुँह फैलाकर मुख की अद्भुत आकृति बना लेता है।

शान्त रस के लिये श्री शंकराचार्य का यह वाक्य प्रसिद्ध है कि "दशनं विहीनं जातं तुण्ड।" अर्थात मुख दन्त हीन हो गया।

रौद्र रस का प्रदर्शन तो दाँतों से होठों को चबाकर भली भांति होता है।

प्रश्न ३ दाँत मानव समाज को क्या शिक्षा देते हैं? स्पष्ट करो।

उत्तर दाँत मानव समाज को इस वात की शिक्षा देते हैं कि अपने स्थान पर दृढ़ रहकर कर्तव्य करने से अपनी प्रतिष्ठा बढ़ती है। यदि मनुष्य अपने कर्त्तव्यों का पालन दृढ़ होकर नहीं करता वह इस संसार में आदर नहीं पा सकता। उसका मनुष्य जीवन व्यर्थ जायगा। जिस प्रकार दाँत जब तक मुँह के अन्दर अपने स्थान पर

दृढ़ रहकर अपना कार्य करते रहते हैं तभी तक उनकी शोभा है तभी तक मनुष्य उन्हें अपने पास रखने में गौरव समझता है। जब दाँत टूट जाता है तो मनुष्य उसे निकाल कर फेंक देता है। इतना ही नहीं वह उसे पुनः मुँह में लगाने की इच्छा नहीं रखता और उससे घृणा करने लगता है। इसी प्रकार जो जाति अपने कर्तव्य पर दृढ़ रहती है वह संसार मे आदर की पात्र होती है अन्य जातियाँ उसकी प्रशंसा करती है। कर्तव्य से विमुख होने पर वह दो कौड़ी की भी नही रह जाती।

प्रश्न ४ पण्डित प्रताप नारायण मिश्र की गद्य शैली पर प्रकाश डालो।

मिश्र जी भारतेन्दु जी की शैली को आदर्श मानते थे किन्तु भारतेन्दुजी की सी सरलता गम्भीरता और स्निग्धता इनकी शैली में नहीं पाई जाती। आपकी रचनाओं में दो प्रकार की शैली का दिग्दर्शन होता है। गम्भीर तथा हास्य और व्यंग्य से पूर्ण, किन्तु विनोद तथा मनोरंजन की शैली अधिक है। आप गम्भीर स्थलों पर भी हास्य रस को नहीं भूले हैं। गम्भीर स्थानों पर भाषा भावों के अनुसार ही गम्भीर हो गई हैं।

आप भाषा में प्रान्तीयता रखते थे। इनके विनोद पूर्ण लेखों में पश्चिमी तथा अवधी भाषा का प्रभाव है। मुहावरों और कहावतों का खुल कर प्रयोग किया यहाँ तक कि ग्रामीण कहावतों जैसे 'खरी बात शहिदुल्ला कहें' 'मुंह विचकाना' आदि का भी प्रयोग किया है।

आपकी भाषा सरल और सुबोध है किन्तु साहित्यिक दृष्टि से परिमार्जित नहीं। व्याकरण की अशुद्धियों की ओर भी आपने कोई ध्यान नहीं दिया है। वैसे आपकी शैली में एक अद्भुत आकर्षण और जिंदा दिली है। मुहावरों के प्रयोग से भाषा की रोचकता और चमक में वृद्धि हुई है। आपने भाषा को अलंकारिक बनाने का प्रयत्न नहीं किया है। विदेशी भाषाओं के चलते हुये शब्दों का प्रयोग किया है। भाषा से पण्डिताऊ पन की स्पष्ट झलक दिखाई देती है। रचना।

विचित्र और मनोहरता आपकी रचना शैली की विशेषतायें हैं।

५- निम्नलिखित शब्दों में से कृदन्त और तद्धित छांटो और उनकी व्युत्पत्ति बताओ :

भोज्य, सुघराई, खिंचावट, चटकीले, वर्ताव, उप जाने।

उत्तर भोज्य कृदन्त। भुज धातु से 'य' प्रत्यय लगकर संज्ञा बनी है।

सुघराई तद्धित। सुघर से भाववाचक संज्ञा बनी है।

खिचावट कृदन्त। 'खींचना' क्रिया से 'वट' प्रत्यय लगा है।

चटकीले तद्धित। चटक संज्ञा से 'इले' प्रत्यय लगा है।

वर्ताव कृदन्त। 'वर्तना' क्रिया से संज्ञा बनी है।

उपजाना कृदन्त। उपजाना क्रिया से क्रियार्थक संज्ञा।

६ अधोलिखित प्रयोगो का आशय समझाते हुए उन्हें अपने वाक्यों मे प्रयुक्त करो।

(अ) बाल की खाल निकालना। दाँत दिखाना, दाँत काटी रोटी, लोहे के चने।

उत्तर बाल की खाल निकालना- बारीकी निकालना। तुम तो बहस करके बात की खाल निकालना चाहते हो।

दाँत दिखाना- दीनता दिखाना हमारा यह काम नहीं कि हर एक के सामने दीनता दिखावें।

दाँत काटी-रोटी घनिष्ठता राम और मोहन की दाँत काटी रोटी है।

लोहे के चने कठिन काम विद्या पढ़ना लोहे के चने चबाना है।

(ब) 'हाथी के दाँत खाने के और होते है और दिखाने के और' इस लोकोक्ति का क्या आशय है ?

उत्तर कुछ लोग दिखावटी रूप में हमारे साथ गहरी सहानुभूति रखते है। किन्तु काम के समय धोखा देते हैं।

७ दाँत शब्द के जितने मुहावरे उपयोग में आते हैं, उनके प्रयोग अपने वाक्यों मे करो।

उत्तर दाँत दिखाना प्रयोग धनियो के सामने दाँत मत दिखाओ।

दाँता किल किल इस घरमें प्राय: दाँता किल किल होती रहतीहै।

दाँतों में पड़ा रहना हम तो उनके दाँतो में पड़े हुए है।

दाँत होना हमारे देश पर अंग्रेजों का दाँत लगा हुआ था। इत्यादि।

४ श्यामा की राम कहानी

सारांश

श्यामापुर नाम का एक बहुत पुराना गांव था। यह गांव अब भी स्थित है किन्तु अब उसकी दशा बहुत गिर गई है। आज कल इन गांव के लोगो की आर्थिक दशा भी बहुत खराब है। इस गांव के रहने वाले लोग कथा कहानी कहकर अपने दिन बिताते हैं। कोई आल्हा पढ़ता है तो किसी को रामायण से प्रेम है।

श्यामा इसी गांव की रहने वाली है। श्यामा के पूर्वज ब्रह्मावर्त के रहने वाले थे। बाद में वे उड़ीसा मे जाकर बस गये थे किन्तु जलवायु अनुकूल न होने के कारण वे उत्कल को छोड़ राज दुर्ग मे रहने लगे। श्यामा के प्रपितामह ऋषि वंश के थे अतः वे अपना समय पूजा पाठ में व्यतीत करते थे।

एक बार उस प्रदेश में अकाल पड़ा। नदी नाले सब सूख गये। पशु, पक्षी, मनुष्य सभी भूख से व्याकुल होकर मरने लगे। स्त्रियाँ अपने बच्चों को अनाज के बदले में बेचने लगी पर्दे मे रहने वाली बड़े घरों की स्त्रियां पैदल चलकर सड़को पर भीख मांगने लगी। इसी अवसर पर श्यामा के प्रपितामह राजदुर्ग आये और कथा और पुराण वांचकर अपनी जीविका चलाने लगे।

श्यामा के प्रपिता मह का नाम अविधेश था। उनके दो स्त्रियां थी। एक का नाम कौशल्या और दूसरी का नाम अहिल्या था। पहले कौशल्या के एक पुत्र उत्पन्न हुआ। यही श्यामा के पूज्य पिता थे।

कुछ समय पश्चात् कौशल्या का शरीरान्त हो गया और थोड़े दिनों बाद ही अहिल्या के एक बालक और बालिका हुई। बालक का नाम नारद और बालिका का नाम गौमती रक्खा गया। अभाग्य से गौमती। बाल्यावस्था में ही विधवा हो गई।

युवावस्था प्राप्त होने पर श्यामा के पिता का विवाह सुखा नामक स्त्री से हुआ। इसी अवसर पर श्यामा के पितामह का देहान्त हो गया। और श्यामा की दादी अहिल्या तीर्थ यात्रा को निकल पड़ी। श्यामा के पिता को सर्वप्रथम एक कन्या की प्राप्ति हुई जो अत्यन्त रूपवती थी। वह स्वयं श्यामा ही थी। इसके पश्चात् उसे एक भाई मिला किन्तु वह कुछ समय पश्चात ही इस संसार से विदा हो गया। इसके पश्चात श्यामा को सत्यवती और सुशीला दो बहनों की प्राप्ति और हुई जिनके साथ श्यामा इसी गाँव में रहती है।

४ श्यामा की राम कहानी

(ठाकुर जगमोहन सिंह)

पृष्ठ १५ अनुच्छेद शब्दार्थ दिवाले=दीवारें। प्राचीनता=पुरानापन। साखी=गवाह। सीमान्त=गाँव का अन्तिम भाग। बसेरा=रात में विश्राम करना गँवई=छोटा गाँव। पौ फटने पर=प्रातःकाल होने पर। गोधूली=वह समय जब गौएँ जङ्गल से घर लौटती हैं। खिरके=गौओं के रहने के स्थान; बाड़े। कुहिरा=पाला। अभिसार=प्रेमिका का प्रेमी के पास जाना।

अनुच्छेद २ शब्दार्थ गोप=ग्वालिये। अथाइत=बैठकें। ते=से। गोरज=गोधूली। गैल=रास्ता; मार्ग। अली=सखी। सम्हौखी=सजी हुई है। सैन=स्थान।

अर्थ ग्वालिये अपने स्थानों से उठ खड़े हुए हैं। मार्ग में गौओं की धूलि छाई हुई है। हे सखि चल अभिसार करने का यह अच्छा समय है।

अनुच्छेद ३ कोविद-विद्वान। भरथरी, गोपीचन्द, भोज, विक्रम, लोरिक, चदैनी, मीराबाई, आल्हा, ढोला मारु हरदौल=ये सब

व्यक्ति विशेषों के नाम है। इनके नामों पर पुस्तकों की रचना हुई है। जिनमें इनका चरित्र गाया है। भरथरी (भर्तृहरि) एक राजा थे। इन्होंने स्त्री की चरित्र हीनता से खिन्न होकर सन्यास ले लिया था। इनके नीतिशतक, शृङ्गार शतक और वैराग्य शतक ये तीन ग्रन्थ अत्यन्त प्रसिद्ध हैं।

गोपीचन्द एक राजा था जो अपनी सौतेली माँ के दोष लगाने पर बचपन में घर से निकल गया। और बड़े होने पर फिर प्रजा ने उसे ही सिंहासन पर बैठाया। भोज राजा भोज विद्या के बड़े प्रेमी थे। ये विद्या-प्रचार के लिये विद्वानों को अच्छा पुरस्कार दिया करते थे। विक्रम एक बहुत बड़ा राजा हुआ है। यह प्रजापालन और न्याय के लिये प्रसिद्ध था। लौटिक मारवाड़ में एक राजा हुआ था। चदैनी यह भी एक राजा था। मीराबाई पति के मर जाने पर भी श्री कृष्ण को पति मानकर उनकी परम उपासिका बन गई थी। आल्हा आल्हा ऊदल दो बड़े वीर हुए हैं। इन्होंने बड़ा चमत्कारी युद्ध किया था। ढोलामारु ढोला राजा नल का लड़का था मारु उसकी स्त्री थी। इस पुस्तक में इन्ही का चरित्र गाया गया है। रसिक=प्रेमी। कोड़े आग तापने का स्थान। पयाल=धान का भूसा। परिजनों=कुटुम्बियों। युवती=जवान स्त्री। युवा=जवान पुरुष।

व्रजविलास व्रजभाषा की एक पुस्तक जिसमें श्री राधाकृष्ण का चरित्र दिया हुआ है।

निरस्तपादपे·······द्रुमायते। जहाँ वृक्ष नहीं होता वहाँ अकुआ (आक) ही वृक्ष समझा जाता है।

अनुच्छेद ६ बेहाल=मूर्च्छित (लोट पोट)। प्रबल=बहुत बड़ी। वेदना=दुःख, दर्द। सोल्हो=व्यंग्य; कुछ कहा जाय और कुछ निकले।

व्या० पौ फटने पर··············समय होता है।

ये पंक्तियाँ ठा० जगमोहन सिंह द्वारा लिखित "श्यामा की राम

कहानी नामक पाठ की हैंठाकुर साहब ग्राम की शोभा वर्णन करते हुये कहते है कि

ऊषाकाल और सायङ्काल के समय गायो का अपने बाड़ों (गौशाला) से निकलना और आना बड़ा ही शोभायमान होता है मार्ग में उनके चलने से उड़ने वाली धूल गलियों मे इस प्रकार छा जाती है मानो ओस पड़ रही है। ग्राम मे यह घूमने का समय भी कितना सुहावना होता है।

पृष्ठ १६ शब्दार्थ प्रशंसनीय=बड़ाई करने योग्य। पुरुषा=पूर्वज। उत्कल=उड़ीसा। तजना=त्यागना अवतंश=आभूषण। अनन्तर=पश्चात। दुर्भिक्ष=अकाल। उदर पोषण=पेट भरने के लिये। जीविका=पेट भरने का साधन। स्मृति=स्मरण शक्ति। भ्रांति=भ्रम; धोखा। जलद पटल=बादलों का समूह। विस्मरण=भुला देना। सूक्ष्म=पतली; छोटी। मही=पृथ्वी। तृणों=घास के तिनके। संकुलित=आवृत; ढकी हुई। जलद=बादल। धरनी=पृथ्वी। पयोद=बादलो। क्षुधा=भूख। क्षुधित=भूखा। रोड़ोमय=ढलों से भरा हुआ। शालि=धान। अंश=भाग; हिस्सा। धान्य=धानजिनसे चावल निकलताहै। पलटे=बदलेमें। धनाढ्य=धनवान्।

व्या० उन लोगों की········ ······भांति हो गये।

यह गद्यांश श्री जगमोहन सिंह द्वारा लिखित "श्यामा की राम कहानी" नामक पाठ से लिया गया है। जिन दिनों श्यामा के पूर्वज 'राज दुर्ग' नामक स्थान पर रहते थे उन्हीं दिनों वहाँ भयानक अकाल पड़ा। श्यामा के पूर्वजों का पेशा पूजा पाठका था इस कारण अकाल के समय उनको जीविका का कोई साधन न रहा और यदि कुछ था भी तो वह अब याद नहीं रहा। उस समय नदी नाले सब सूख गये थे। बड़ी-बड़ी नदियों की धारा जनेऊ के धागों की भांति पतली रह गई थी। पृथ्वी पर घास के तिनके भी नहीं रह गये थे। वर्षा ऋतु के पानी बरसाने वाले बादल शीत ऋतु के बादलो की भांति भयानक हो गये।

व्याख्या प्यासी धरनी को देख...... ...दिखने लगे।

यह गद्यांश श्री ठा० जगमोहन सिंहजी द्वारा लिखित 'श्यामा की राम कहानी" से लिया गया है। दुर्भिक्ष के समय की दुर्दशा का वर्णन करते हुए लेखक कहता है :

पृथ्वी को जल की आवश्यकता थी किन्तु पानी न बरसा। पपीहे की 'पीपी' की रटन तो सुनाई पड़ती थी किन्तु पानी की एक बूंद भी नहीं गिरती थी। भूखे नर नारी दुःखी होकर भूख बुझाने के लिये इधर उधर मारे मारे फिरने लगे। पशु होने के कारण गौओं की तो बुरी दशा हो ही गई खेत भी ढेलों से भरे हुए दिखाई देने लगे।

पृष्ठ १७-- शब्दार्थ बे मर्याद=कुल के नियम विरुद्ध। उधरे= खुले। सुचाल=अच्छे नियम। पथिक=राहगीर। गति=दशा। वृत्ति=योनि, जन्म। आँचल पसार पसार=दीनता दिखाकर। करुणा=दया। निर्वाह=गुजारा। वृत्ति=जीविका का साधन। रुद्राभिषेक=एक कर्म जिसमें शिवजी का मन्त्रों द्वारा स्नान कराया जाता है। हंस=श्रेष्ठ। पितामही=दादी। कुलीना=उत्तम कुल की। साध=इच्छित वस्तु को प्राप्त करने वाला। पूज्यपाद=जिनके चरण पूजने योग्य हैं। वलिष्ठ=बलवान। परमोदार=अत्यन्त उदार स्वभाव वाला। सौजन्य=सज्जनता। आगर=घर। जनक=पिता। दैव=भाग्य, ईश्वर। उपरान्त=पश्चात्। चक्रधर=श्री विष्णु। वालवैधव्य=बचपन से ही विधवापन प्राप्त होना। सोहाग=पति के कारण प्राप्त होने वाला सौभाग्य। अभागिनियाँ=दुर्भाग्यवाली।

पृष्ठ १८- सुहावनी=अच्छी लगने वाली। चाव चाव=अत्यन्त हर्ष के साथ। विदित=ज्ञात। विवरण=हाल। यथा नाम तथा गुण=जैसा नाम वैसा ही गुण। सलिलबुंद=जल की बून्द। अनस्थ=नाशवान। काल कर चुके थे=मर चुके थे। तीर्थाटन= तीर्थ यात्रा, धार्मिक स्थानों की यात्रा। जेठी कन्या=बड़ी पुत्री। सुत=पुत्र। याचकों=माँगने वाले। पुनाम नरक=वह नरक जिसमें बिना पुत्र वाले लोग जाते हैं। उजागर=प्रकाशित। कुटिल काल=

दुष्ट काल। कवल=ग्रस लिया।

धिक धिक.................जात न वरनी।

अर्थ हे काल! तेरे इस मूर्खता भरे कार्य को बार बार धिक्कार। है तेरे द्वारा किये जाने वाला अन्याय संसार के द्वारा वर्णन नहीं किया जा सकता।

शब्दार्थ - डाह मार मारकर=बिलख बिलखकर। प्रबोध किया=समझाया; ज्ञान कराया। दुस्तर=कठिन।

काल ऐसा है.....................समा गया।

समय की गति बड़ी विचित्र है। ज्यों ज्यों समय बीतता जाता है मनुष्य अपने कठिन से कठिन दुःखों को धीरे धीरे भूलता जाता है। जो वस्तु आज हमारे सन्मुख है वह कल नहीं रहती और जो कल है वह परसों दिखाई नहीं पड़ती और धीरे धीरे सब कुछ भूल जाते हैं किन्तु पुत्र का शोक अत्यन्त कष्ट दायक होता है उसका भूलना मनुष्य के लिये अत्यन्त कठिन होता है। यही कारण था कि श्यामा के पिता के हृदय में एक अनन्त वेदना सदैव के लिये समा गई।

पृष्ठ १६-- शब्दार्थ - काँटा छाती में समा गया=एक अनन्त वेदना सदैव के लिये हृदय में घरकर गई। दारुण=कठिन। स्मरण=याद करके। सजल=आँसू भरे। नैनों=नेत्रों। भगिनी=बहन। संज्ञा=चेतनता। स्वप्न तरंग=स्वप्न की लहरों में।

अभ्यासार्थ प्रश्न

प्रश्न १ -संक्षेप में श्यामा की राम कहानी अपनी भाषा में लिखो।

उत्तर --पाठ का सारांश देखिये।

प्रश्न २ जब उत्कल देश में दुर्भिक्ष पड़ा, तब जड़ और चेतन जगत में उसका क्या प्रभाव पड़ा? सजीव भाषा में विवरण दो।

एक बार उत्कल प्रदेश में वृष्टि के अभाव के कारण भयङ्कर अकाल पड़ा। चारों ओर त्राहि त्राहि मच गई। पृथ्वी पर घास का नाम निशान तक न दिखाई देता था। पेड़ों की दशा बहुत ही बुरी हो

गई। उन पर हरियाली का नाम न रहा। पशु पक्षी अत्यन्त व्याकुल हो गये। बेचारे मूक प्राणी अपने दुःख को किसी से कह न सकते थे किन्तु उनकी करुणा जनक दशा मौन भाषा में सब कुछ कह देती थी। अनेक पशु खाने को चारा न मिलने के कारण मौत के मुँह में चले गये। पपीहा की पी पी रटन भी व्यर्थ गई। बादलों ने एक बून्द भी पानी उसकी चोंच में न डाला।

मनुष्यों की दशा तो अत्यन्त दयनीय हो गई। खेतों में किसानों ने बीज बोये किन्तु उनसे अंकुर तक न निकले। मनुष्य भूख से व्याकुल होकर इधर उधर भटकने लगे। निर्धन ही नहीं बड़े बड़े धनी परिवारों की स्त्रियाँ जो कभी बाहर पैर भी न रखती थी वे अपनी सारी लज्जा त्याग कर सड़क पर घूम घूम कर मुट्ठी भर अन्न माँगने लगीं। माताओं को अपने पुत्रों से कोई प्रेम न रह गया। वे अन्न के बदले अपनी सन्तान को बेचने लगीं। भूख के मारे लोगों के शरीर अत्यन्त क्षीण हो गये। हजारों व्यक्ति भूख से तड़प तड़प कर मर गये। माता के सामने पुत्र, पति पिता के सामने स्त्री, पुत्र और पुत्र के सामने माता, पिता भूख से तड़पते हुये मरे किन्तु उन्हे कोई न बचा सका। उस भयानक अकाल की लपेट में हजारों ही प्राणी स्वर्ग लोक सिधार गये।

प्रश्न ३ इस पाठ के आधार पर ग्रामीण जीवन का चित्रण करो।

उत्तर दूर दूर तक खेतों की पंक्तियाँ चली गई हैं जिनमें धान के पौधे लगे हुये है। एक ओर कुछ पेड़ सघनता से लगे हुये हैं इनके बीच ही मिट्टी से बने हुये घर हैं। प्रातःकाल का समय है। पेड़ों पर चिड़ियाँ चह चहा रही हैं। किसान हल बैल लेकर खेतों की ओर जा रहे हैं। गाँव की स्त्रियाँ घड़े लेकर जल भरने चल पड़ी हैं। ग्वाले अपनी गायों को लेकर जङ्गल की ओर चले जा रहे हैं। यह प्रातःकाल का दृश्य कितना शोभा मान है। सूर्य ने निकलते ही अपनी स्वर्णिम आभा धान के हरे हरे खेतों पर डाल दी है प्रकृति अपनी सुन्दरता से हर एक के मन को मोह रही है।

आपकी रचनाओं में आपके व्यक्तित्व की छाप है।

प्रश्न ५ संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखो :

ढोलामारु, हरदौल, सोल्हो, भरथरी, ब्रजविलास।

उत्तर इस प्रश्न का उत्तर यथा स्थान पीछे देखिए।

प्रश्न ६ सविग्रह इन समासों के नाम निर्देश करो :

प्रश्नोत्तर, पूजापाठ, उदर-पोषण, रुद्राभिषेक, पयोद, चक्रधर, अनित्य, शोक, सागर।

उत्तर-प्रश्नोत्तर (प्रश्न और उत्तर) द्वन्द्व समास।

पूजापाठ (पूजा और पाठ) द्वन्द्व समास।

उदर पोषण (उदर का पोषण) सम्बन्ध तत्पुरुष समास।

रुद्राभिषेक (रुद्र का अभिषेक) सम्बन्ध तत्पुरुष।

पयोद (पय का देने वाला अर्थात् मेघ) बहुव्रीहि।

चक्रधर (चक्र को धारण करने वाले अर्थात् विष्णु) बहुव्रीहि समास।

अनित्य (न + नित्य) नञ तत्पुरुष।

शोक-सागर (शोक रूपी सागर) रूपक कर्मधारय समास।

प्रश्न ७ निम्नलिखित प्रयोगों का आशय समझाओ :

यह कलियुग नहीं, करजुग है। इस हाथ ले उस हाथ दे। कोख उजागर करना। मेटन हितु सामर्थ को लिखें भाल के अंक, सब भवन में उजेला छा जाना।

यह कलियुग नहीं करजुग है चार युगों में से वर्तमान युग कलियुग कहा जाता है। इस युग में आजकल का समय ऐसा है जिसमें प्रत्येक काम हाथ की सफाई (छल कपट) से होता है। इस हाथ लेना उस हाथ देना फिर का किसी को भरोसा नहीं।

इस हाथ ले उस हाथ दे तत्काल हिसाब बराबर करना।

कोख उजागर करना जन्म लेना।

मेटन हितु सामर्थ को लिखें भाल के अंक भाग्य में लिखे हुये को कोई नहीं मिटा सकता अर्थात् जो होना है वह होकर ही रहता

है उसे कोई नहीं रोक सकता।

सब भवन में उजेला छा जाना—भवन मे अत्यन्त हर्ष मनाया जाना।

५- साहित्य की महत्ता

(श्री महावीरप्रसाद द्विवेदी)

सारांश -ज्ञान राशि के संचित कोष को ही साहित्य कहते हैं साहित्य हीन भाषा सुन्दर और पूर्ण होने पर भी आदरणीय नही हो सकती। किसी जाति के साहित्य को देखकर ही हम उस जाति की उन्नति या अवनति अथवा उसकी एतिहासिक स्थिति जान सकते हैं। समाज की अवस्था के अनुसार ही उसका साहित्य होता है।

जिस प्रकार भोजन से शरीर पुष्ट होता है उसी प्रकार साहित्य से मस्तिष्क। बुरा साहित्य मस्तिष्क को इसी प्रकार दूषित बना देता है जिस प्रकार बुरा भोजन शरीर को रोगी बना देता है। यदि हम अन्य सभ्य जातियों के समान आदर चाहते हैं तो हमें चाहिये कि हम उत्तम साहित्य का निर्माण करें और प्राचीन साहित्य की रक्षा।

और देशों के साहित्यों ने ही वहाँ की सामाजिक और राजनैतिक स्थिति में बड़ा परिवर्तन कर डाला है। योरोप की हानिकारिणी धार्मिक रूढ़ियाँ साहित्य के द्वारा ही नष्ट की जा सकी। जातीय अथवा व्यक्तिगत स्वतंत्रता के भाव साहित्य ने ही भरे और पोप की प्रभुता को भी उसने ही कम किया। साहित्य ने ही प्रजा को सचेत किया और इटली को स्वतंत्र कराया।

साहित्य मृत-प्राय जाति को भी जीवित जाति बना सकता है। अतः प्रत्येक जाति का कर्तव्य है कि वह साहित्य की सेवा और उन्नति करे। यदि वह ऐसा नहीं करता है तो उसका अस्तित्व नष्ट हो जाता है। जो मनुष्य साहित्य सेवा में योग नहीं देता वह देश द्रोही अथवा आत्म-द्रोही है।

कभी कभी समृद्ध भाषाओं का अधिकार दूसरी भाषाओं पर हो

जाता है जैसा कि फ्रेन्च ने जर्मन इत्यादि भाषाओं पर कर लिया था। इस प्रकार के प्रभाव से भाषाओं की गति मन्द पड़ जाती है। पर यह अधिकार क्षणिक होता है क्योंकि अन्य भाषा वाले जब सचेत होते है तब इस दबाव को फेक देते है। पहले योरोपीय देश लैटिन के दबाव में थे किन्तु अब वे अपनी भाषा मे ही ग्रन्थ लिखते हैं। अपनी भाषा के साहित्य से ही अपनी उन्नति होती है। अपनी भाषा को छोड़कर जो विदेशी भाषा मे साहित्य रचता है वह ऐसा ही पापी है जो अपनी माता को निःसहाय छोड़ कर दूसरे की माता की सहायता करता है।

इसका यह अभिप्राय नहीं कि हम दूसरी भाषाओं से द्वेष करें समय मिलने पर हम अनेक भाषाओं का अध्ययन कर सकते है। किन्तु प्रधानता अपनी भाषा को ही देनी चाहिये क्योंकि अपना, अपने देश का और अपनी जाति का उपकार जितना अपनी भाषा के साहित्य से संभव है उतना दूसरी भाषा के साहित्य से नही। ज्ञान, विज्ञान, राजनीति और धर्म इत्यादि की भाषा अपनी ही भाषा होनी चाहिये। और इसीलिये अपने साहित्य की सेवा करना हमारा परम धर्म है।

शब्दार्थ पृष्ठ २२ ज्ञान राशि''नाम साहित्य है=अनादि काल से मानव समाज द्वारा इकट्ठा किया हुआ ज्ञान का बृहत् भण्डार ही साहित्य है। रूपवती भिखारिन=यहाँ भाषा की तुलना सुन्दर भिखारिन से की गई है। जिस प्रकार सुन्दर भिखारिन अच्छा रूप होने पर भी अपने भोजन के लिये दूसरों पर अवलम्बित रहती है उसी प्रकार सब प्रकार के भावों को प्रकट करने की योग्यता रखने वाली साहित्य हीन भाषा के पाठकों को साहित्य के लिये दूसरी भाषाओं का आश्रय लेना पड़ता है। श्री सम्पन्नता=शोभा से पूर्ण होना, अवलम्बित=निर्भर। उसकी शोभा अवलम्बित रहती है=किसी भाषा की शोभा, आदर और महत्व उसके साहित्य के कारण होता है।

जाति विशेष के ········साहित्य ही है।

व्याख्या- किसी जाति विशेष ने किस प्रकार उन्नति की या अवनति की, उस जाति के सामाजिक विचार ऊँचे रहे या नीचे रहे, उसके धर्म सम्बन्धी विचार उदार थे या संकुचित थे, वह जाति मेल से रही या आपस में लड़ती रही, इतिहास में उसने वीरता के काम किये अथवा कायरता के और राजनीति में वह कुशल रही या पिछड़ी हुई इत्यादि सभी बातों का संक्षिप्त ज्ञान हमको उस जाति के साहित्य के अध्ययन से हो सकता है। दूसरे साधनों से नहीं। इसी प्रकार समाज की शक्ति या उत्साह अथवा उसकी सभ्यता का परिचय भी हमें उस जाति के साहित्य के अध्ययन से ही लग सकता है।

जिस जाति विशेष में·········कितनी और कैसी थी।

व्याख्या यदि किसी जाति की भाषा का साहित्य नहीं है या बहुत ही कम है तो यह निश्चय समझ लेना कि वह जाति संसार की अन्य जातियों के समान सभ्य नहीं है। जाति की उन्नति या अवनति अथवा उच्च या नीच विचारों के अनुसार ही जाति विशेष का साहित्य उन्नति अथवा हीन-या अश्लील होता है। जिस प्रकार हम आइने मे अपनी आकृति देखकर उसके गुण दोषों को जान सकते हैं उस प्रकार हम साहित्य को पढ़कर किसी जाति विशेष की सामर्थ्य शक्ति या उत्साह को जान सकते हैं। साहित्य को पढ़ते ही हमे उस जाति की भूत-काल की तथा वर्तमान काल की जीवन शक्ति का पूर्ण परिचय प्राप्त हो जाता है।

नोट इस खण्ड में साहित्य की तुलना आइने से की गई है।

शब्दार्थ अचिरात्=शीघ्र। नाशोन्मुख=नाश की ओर अग्रसर। रसास्वादन=साहित्य के अध्ययन का आनन्द। वंचित कर दीजिये=रहित कर दीजिये। निष्क्रिय=निकम्मा। खाद्य=खाने योग्य वस्तु।

शब्दार्थ पृष्ठ २३ सतत=निरन्तर। पौष्टिकता=ठोसपन। उत्पादन=रचना। विकृत=दूषित रुग्ण=रोगी। विकृत साहित्य

से मस्तिष्क भी विकार ग्रस्त होकर रोगी हो जाता है=बुरे साहित्य के अध्ययन से मस्तिष्क दूषित होकर अच्छे विचारो के ग्रहण करने मे असमर्थ हो जाता है। मस्तिष्क का बलवान और शक्ति सम्पन्न होना अच्छे साहित्य पर ही अवलम्बित है=उत्तम साहित्य के अध्ययन से ही मस्तिष्क पुष्ट होकर अच्छे अच्छे विचारो को ग्रहण कर सकता है और अच्छा चिन्तन कर सकता है। निर्भ्रान्ति=सन्देह रहित। मस्तिष्क के यथेष्ट विकास का साधन अच्छा साहित्य है=अच्छे साहित्य के अध्ययन से ही मस्तिष्क की पूर्ण उन्नति हो सकती है। सभ्यता की दौड़ मे अन्य जातियो की बराबरी करना है=दूसरी जातियों के समान ही सभ्य कहलाना है।

योरोप में हानि कारिणी''' '''' ऊँचा उठाया है।

व्याख्या इस खण्ड में द्विवेदी जी ने साहित्य की महत्ता बतलाते हुए कहा है कि साहित्य की शक्ति अस्त्र शस्त्रों से बढ़ कर है। योरोप में पोप की सत्ता होने पर उसने अनेक धर्म कर लगा कर लोगों को ठगना प्रारम्भ कर दिया और हर प्रकार देश में धर्म के नाम पर अनेक अत्याचार फैलने लगे थे। उस समय लूथर ने साहित्य रचना द्वारा लोगों को संचेत किया और धार्मिक सुधारो का आरम्भ हुआ। इसी प्रकार फ्रांस में भी लुई के राज्य-काल में प्रजा पर घोर अत्याचार बढ़ गये। तब रूसो और वाल्टेअर के लेखों ने समानता, स्वतंत्रता और भ्रातृत्व के भावों का प्रचार किया, साहित्य के अध्ययन से ही जनसाधारण को अपने धार्मिक आर्थिक और राजनैतिक अधिकारों का ज्ञान हुआ। पराधीनता से दुःखी योरोपीय अन्य राष्ट्रों की मुक्ति भी साहित्य के प्रचार द्वारा हुई। मेजिनी के लेखों ने ही इटली निवासियों में वह शक्ति भर दी कि वे आस्ट्रिया की पराधीनता से मुक्त हो गये।

जो साहित्य.................आत्म हन्ता भी है।

व्याख्या साहित्य का अध्ययन निराश व्यक्तियों में आशा का संचार इसी प्रकार कर देता है जिस प्रकार संजीवनी औषधि मुर्दों

में प्राणों का संचार कर देती है। इसी प्रकार साहित्य के अध्ययन से अवनति की दशा में पड़े हुए मनुष्य उन्नति में हो जाते हैं और उन्नत मनुष्य स्वाभिमान पूर्वक जीवन बिताते हैं। ऐसी शक्ति से पूर्ण साहित्य की रचना और उन्नति का उद्योग जो जाति नहीं करती वह संसार की उन्नति से अपरिचित रह कर बिलकुल नष्ट हो जाती है। अतएव साहित्य की रचना या उन्नति करने मे समर्थ होकर भी जो मनुष्य उसकी उन्नति नहीं करता वह समाज को बड़ी भारी हानि पहुँचाता है। वह देश की उन्नति में बाधा डालता है। और साथ ही साथ अपनी मस्तिष्क की उन्नति करके अपनी आत्मा को भी दुर्बल बनाता है।

शब्दार्थ पृष्ठ २३- समृद्ध भाषा=अच्छे साहित्य से पूर्ण? अपने ऐश्वर्य के बल पर=अच्छे साहित्य के कारण। प्रभुत्व स्थापित कर लेती है=जनता की भाषा से अधिक सम्मान प्राप्त कर लेती है। विजित=जीते गये। जेता=जीतने वाले। अनैसर्गिक आच्छादन को दूर फेक देते हैं=अस्वाभाविक मोह को बिल्कुल छोड़ देते है। माया जाल मे फँसे थे=फ्रेंच और लैटिन भाषाओ को अधिक महत्त्व देते थे। उस जाल को उन्होंने तोड़ डाला=फ्रेंच और लैटिन भाषा के अनिवार्य अध्ययन के नियम को उन्होंने तोड़ दिया। चूड़ान्त ज्ञान=पूर्ण ज्ञान। कृतघ्नता=उपकारों का न मानना प्रायश्चित=पाप को दूर करने के लिये किया हुआ काम। मनु, याज्ञवल्क्य और आपस्तम्ब=स्मृत बनाने वाले। जिनमें और बातों के साथ साथ पापो का प्रायश्चित भी होता है। ज्ञानार्जन=ज्ञान प्राप्ति। अभिवृद्धि=उन्नति।

अभ्यासार्थ प्रश्न

प्रश्न १ पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी की गद्य शैली की विशेषतायें बतलाते हुये यह सिद्ध करो कि वे आधुनिक हिन्दी गद्य के प्रवर्तक है।

उत्तर पं० महावीरप्रसाद हिन्दी साहित्य की नवीन गद्य शैली के प्रवर्तक कहे जाते हैं। यह साहित्य में द्विवेदी युग के नाम से

प्रसिद्ध हैं। आपके साहित्य क्षेत्र मे आने से पूर्व हिन्दी साहित्य मे यद्यपि भिन्न प्रकार की रचनायें होती थीं किन्तु उनकी शैली निश्चित न थी। आपने हिन्दी भाषा की सरल और प्रचलित शैली मे रचना कर उसे नवीन जन्म दिया। द्विवेदी जी ने व्यंगात्मक आलोचनात्मक और गवेषणात्मक तीनों प्रकार की रचनाओं के लिये अलग शैलियो को निश्चित किया तथा उनके रूप को स्थिर किया।

व्यंगात्मक शैली में व्यवहारिक और सरल भाषा का प्रयोग किया है और आलोचनात्मक शैली गम्भीर तथा संयत भाषा मे है। गवेषणात्मक लेखो को लिखते समय आपने विशुद्ध हिन्दी का स्वरूप अपनाया है। इसमें संस्कृत के तत्सम शब्दों का प्रयोग किया है।

द्विवेदीजी की भाषा विषय के अनुसार सरल और क्लिष्ट है। आपने विदेशी शब्दो का पूर्ण बहिष्कार नहीं किया है बल्कि उन शब्दों को जो हिन्दी साहित्य मे और बोलचाल मे आ गये है उनको इस ढाँचे में ढाल दिया है कि वे विदेशी शब्दो की भांति प्रतीत नहीं होते। आपने सरल भाषा में गूढ़ विषयों को अत्यन्त ही रोचक ढंग से व्यक्त किया है। भाषा की सजीवता और स्वाभाविकता पाठक को मोह लेती है।

वास्तव में द्विवेदीजी ने हिन्दी भाषा रूपी बाग को झाड़ झखाड़ो से रहित कर माली का कार्य किया है। आपने उसे शुद्ध रूप प्रदान किया, व्याकरण सम्मत बनाया और परमार्जित कर उसमे चमक उत्पन्न की। उन्हीं की कृपा से हिन्दी भाषा को आधुनिक रूप प्राप्त हुआ। अतः यह प्रत्यक्ष है कि द्विवेदी जी भी आधुनिक हिन्दी गद्य के प्रवर्तक हैं।

प्रश्न २ इस पाठ के आधार पर साहित्य राष्ट्र की जान है इस विषय पर अपने विचार प्रकट करो।

उत्तर निसन्देह साहित्य राष्ट्र रूपी शरीर की जान है। राष्ट्र यदि जीवित रहता है तो अपने साहित्य के बल पर ही जीवित रहता है। सेना और हथियार राष्ट्र को जीवित नहीं रखते बल्कि वे तो

मरुभूमि के रक्षक है। साहित्य किसी जाति की प्राचीन उन्नति और अवनति को बताता है। यदि जाति प्राचीन काल में उन्नति शील थी तो वर्तमान अविनति में वह उन्नति की प्रेरणा प्रदान करता है। यदि अविनति शक्ति थी तो उन भूलों को न दुहराने का पाठ पढ़ाता है जिनके कारण उसकी अविनति हुई।

सामाजिक अवस्था और साहित्य का गहरा सम्बन्ध है। सभ्य समाज मे श्रेष्ठ साहित्य की रचना होती है। असभ्य समाज का साहित्य भी अपूर्ण होता है। जाति की उन्नति सामाजिक उन्नति पर आधारित होती है। और साहित्य उनको दिखाने वाला आइना है। इसके अतिरिक्त श्रेष्ठ साहित्य सभ्य समाज का निर्माण करता है। अन्य जातियों का साहित्य इसका उदाहरण है। वहां पर साहित्य सामाजिक सीमा तक ही नहीं किन्तु राजनैतिक उथल पुथल करने मे सहायक हुआ है। साहित्य मे वह शक्ति है जो भयंकर हथियारों में नहीं। योरोप मे धार्मिक रूढ़ियो का विनाश साहित्य द्वारा हुआ। फ्रांस प्रजातन्त्र शासन का अग्रणी हुआ। इटली ने अपनी स्वतन्त्रता प्राप्त की। यह सब कुछ साहित्य की शक्ति से ही हुआ।

वर्तमान समय मे साहित्य का सम्बन्ध मनुष्य के जीवन में है। साहित्य का प्रभाव मनुष्य जीवन के प्रत्येक अंग पर पड़ता है जिससे उसकी भावनाओं का निर्माण होता है और उन भावनाओं की प्रेरणा से कर्तव्य करता है। साहित्य द्वारा उसके चरित्र का निर्माण होता है। जन समुदाय का चरित्र समाज से सम्बन्धित है। समाज का चरित्र और उसकी उन्नति राष्ट्र की उन्नति है। अवनति राष्ट्र की अवनति है। साहित्य द्वारा राष्ट्र क्रान्ति के पथ पर बढ़ता है और अपने लिये ऐसे राष्ट्र का निर्माण करता है जो सबके लिये सुख और शान्ति का विधायक हो।

प्रश्न २ साहित्य की महत्ता पर संक्षेप में एक निबंध लिखो।

उत्तर साहित्य का समाज और राष्ट्र से गहरा सम्बन्ध है। प्रत्येक जाति संसार मे कुछ सिद्धान्तों पर ही आधारित होती है।

उसकी अपनी भाषा है अपना साहित्य होता है और अपना धर्म होता है। किसी भाषा की शोभा उसके साहित्य से ही होती है। जिस भाषा का अपना साहित्य नहीं वह भाषा अपना कोई महत्व नहीं रखती।

साहित्य समाज के ज्ञान का दिग्दर्शक है। साहित्य इस बात को प्रकट करता है कि जिस भाषा और जाति से वह सम्बन्धित है वह कितनी सभ्य तथा उन्नत है। उसकी सामाजिक स्थिति और राजनैतिक दशा क्या है वह भूतकाल तथा वर्तमान दोनों ही स्थितियों पर प्रकाश डालता है।

साहित्य समाज की उन्नति अवनति दोनो मे ही सहायक होता है। निकृष्ट साहित्य अवनति तथा उत्कृष्ट साहित्य समाज तथा राष्ट्र की उन्नति में सहायक होता है। साहित्य के द्वारा समाज मे आमूल परिवर्तन हुआ है, धर्म का आडम्बर नष्ट हुआ है और बड़े २ राष्ट्रों की राजनीतिक व्यवस्था उलट गई है। जिस कार्य को राज्य की विशाल सेना नहीं कर सकती, बड़े बड़े भयानक हथियार नहीं कर सकते वह साहित्य के द्वारा सरलता पूर्वक सम्पन्न हो जाते है। अब से दोसौ वर्ष पूर्व योरोप मे पोप का धार्मिक साम्राज्य था। धर्म के विरुद्ध एक वाक्य भी कहने वाले व्यक्ति मृत्यु के घाट उतार दिये जाते थे संसार का प्रसिद्ध वैज्ञानिक गैसीलियो पोप की अदालत से दण्ड का भागी हुआ क्योंकि उसने अपनी सत्य बात कि "पृथ्वी सूर्य के चारो ओर घूमती है, सूर्य पृथ्वी के नहीं" को कहा था। इस प्रकार की धार्मिक रूढ़ियों के कारण संसार की उन्नति को अनेक धक्के लगे। इस प्रकार के धर्म की प्रभुत्व को साहित्य ने ही नष्ट किया। फ्रांस मे प्रजातन्त्र की स्थापना तथा राज्यतन्त्र का उन्मूलन साहित्य द्वारा ही हुआ। परतन्त्र इटली भी साहित्य की कृपा से ही स्वतन्त्र तथा उन्नति शील हुआ।

साहित्य का प्रभाव मनुष्य के जीवन पर पड़ता है। अच्छे साहित्य द्वारा उसका चरित्र बनता है वह अवनति की ओर से लौट कर उन्नति की ओर बढ़ता है। साहित्य के द्वारा मनुष्य का अज्ञान

अन्धकार दूर होता है और वह अपनी स्थिति को भली भांति जान जान जाता है। समाज का निर्माण मनुष्यों के समुदाय से है और मनुष्यों की उन्नति समाज की तथा समाज की उन्नति राष्ट्र की उन्नति है। अतः साहित्य अत्यन्त महत्वपूर्ण वस्तु है जिसकी अभिवृद्धि करना प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है।

प्रश्न ४ व्याख्या करो:

(क) जातियों की क्षमता और सजीवता ... ...मिल सकती है।

व्याख्या- यह गद्यांश श्री महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा लिखित साहित्य की महत्ता नामक पाठ का है। द्विवेदी साहित्य को किसी जाति का सामाजिक सङ्गठन, उन्नति, अवनति, राजनैतिक, धार्मिक आदि सभी घटना चक्रों को बताने वाला बताते हैं। इसके अतिरिक्त वे कहते हैं कि

जिस प्रकार आइने मे देखकर मनुष्य अपनी सुन्दरता और रूप को पहचानता है उसी प्रकार किसी जाति के साहित्य को देखकर उस जाति की योग्यता और सजीवता का अनुमान करते है। साहित्य इस बात को भली भांति स्पष्ट कर देता है कि वह जाति कितनी प्राण शक्ति रखती है और उसकी वर्तमान दशा क्या है तथा भूत-काल में कैसी थी।

(ख) योरोप मे हानिकारिणी..... ...पुनरुत्थान भी उसी ने किया है।

व्याख्या साहित्य में क्रान्तिकारी परिवर्तन करने की महान शक्ति है। साहित्य ने अनेक सामाजिक धार्मिक और राजनैतिक परिवर्तन किये हैं। योरोप में अनेक ऐसे धार्मिक नियम प्रचलित थे जो समाज तथा राष्ट्र के लिये अत्यन्त हानिकारक थे उन नियमों का उन्मूलन साहित्य द्वारा ही हुआ। साहित्य के द्वारा ही जातियों में स्वतन्त्र होने तथा अपना देश अपना राज की भावना भरने वाला भी साहित्य ही है। व्यक्तिगत स्वतन्त्रता की भावना भी साहित्य के

द्वारा ही हुई। अनेक अवनतिशील देशों का उद्धार भी साहित्य के द्वारा ही हुआ।

५ संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखो साहित्य, आत्महंता, व्यक्तिगत स्वातन्त्र्य और आपस्तम्ब।

उत्तर साहित्य ज्ञान राशि के संचित कोश का ही नाम साहित्य है। साहित्य जाति की उन्नति में बड़ा सहायक होता है।

आत्महन्ता- अपना विनाश करने वाला। वह व्यक्ति जो अपनी हानि जान बूझकर करे।

व्यक्तिगत स्वातन्त्र्य व्यक्ति की स्वतन्त्रता। उसे सरकार की आलोचना करने तथा निजी जीवन को अपनी इच्छानुसार बिताने की स्वतन्त्रता है।

आपस्तम्ब एक ऋषि जिन्होंने स्मृति बनाई है। यह आचार-शास्त्र है और लोगों को अच्छे आचरण बनाने की शिक्षा देता है।

प्रश्न ६ सन्धिविच्छेद करो और नियम बताओ प्रत्यक्ष, निष्क्रय, सत्साहित्य, उन्नयन, अज्ञानान्धकार।

उत्तर प्रत्यक्ष = (प्रति + अक्ष)। यण् सन्धि। यदि ह्रस्व या दीर्घ से इ, उ, ऋ और लृ के बाद को असवर्ण स्वर हो तो क्रम य् व् र् ल हो जाते है।

निष्क्रिय = (निः + क्रिय) विसर्ग सन्धि। यदि विसर्ग के पूर्व इ या उ हो तो क ख या प के पहले विसर्ग के बदले ष् होता है।

सत्यसाहित्य = (सत् + साहित्य) व्यंजन सन्धि।

प्रश्न ८ आँख उठाकर जरा .... साहित्य ने।

इस गद्यांश का सारांश लिखो अथवा सारांश मे यह बतलाओ कि साहित्य ने संसार में क्या क्या करिश्मे कर दिखाये ?

उत्तर दूसरे देशों की जातियों की उन्नति तथा उनकी दशा को देखकर हमें ज्ञात होता है कि उनकी सामाजिक तथा राजनैतिक उन्नति तथा परिवर्तन का कारण उनका साहित्य है। साहित्य के द्वारा उनका समाज बदल गया उनका शासन प्रबन्ध बदल गया। उस जाति के

अन्दर फैली हुई धार्मिक बुराईयाँ दूर हो गई। परतन्त्र जातियों को स्वतन्त्र होने की प्रेरणा साहित्य ने प्रदान की। अवनति शील देश उन्नत हो गये इन सब का कारण एक मात्र साहित्य है।

उदाहरण स्वरूप फ्राँस के राजकयी अत्याचारों ने उस साहित्य को बनाया जिसने राजा अस्तित्व ही मिटा दिया और प्रजातन्त्र की स्थापना हुई। धर्म की आड़ मे पोप द्वारा किये जाने वाले अत्याचारों को साहित्य ने मिटाया। परतन्त्र इटली को स्वतन्त्र करने वाला वहाँ का साहित्य था। इस प्रकार साहित्य द्वारा वे कार्य हुये जो बम के गोले तोप और तलवार नही कर सकती।

साहित्य के द्वारा संसार मे एक नहीं अनेक परिवर्तन हुए हैं। साहित्य के द्वारा सोती हुयी जातियाँ जाग गई उन्होंने अपनी स्थिति को पहचाना और उन्नति पथ की ओर अग्रसर हुई। आयरलैण्ड के साहित्य ने आयर जाति को जगाया उन्होंने अपनी स्थिति को पहचाना और स्वतन्त्रता संग्राम छेड़ दिया वहाँ के साहित्य ने ही डी वैलरा जैसे स्वातन्त्र्य सग्राम के सेनानी को उत्पन्न किया। साहित्य के द्वारा अनेक जातियो का गिरा हुआ समाज उठा जिसने नवीन राष्ट्रों का निर्माण किया।

६- आचरण की सभ्यता

(लेखक- बाबू पूर्णसिंह)

सारांश संसार में अनेक वस्तुएं ऐसी हैं जिनके कारण मनुष्य को यश और आदर की प्राप्ति होती है। विद्या, कला, कविता, साहित्य, धन और राजत्व इनमें से किसी को प्राप्त करके मनुष्य यश का भागी बन जाता है किन्तु इन सबसे बढ़कर आचरण की सभ्यता है आचरण की सभ्यता का प्रभाव सभी के हृदय पर पड़ता है।

सभ्य आचरण क्या है इसकी परिभाषा करना कठिन है। इसकी भाषा तो पूर्ण रूप से मौन है वह कहने की वस्तु नहीं किन्तु क्रिया की वस्तु है जो मनुष्य के ऊपर चिर स्थायी प्रभाव डालती है। सभ्य

आचरण विशाल आत्मा का एक अङ्ग है जिसके कारण मनुष्य को नये विचार और नये जीवन की प्राप्ति होती है।

सभ्य आचरण के मौन व्याख्यान का प्रभाव विशेष शक्तिशाली होता है। चन्द्रमा की मन्द मन्द मौन हँसी ताराओं के कटाक्ष पूर्ण मौन व्याख्यान का प्रभाव जितना कवि हृदयों पर पड़ता है उसे कवि हृदय ही जानते हैं।

सच्चे आचरण की प्राप्ति लम्बे व्याख्यान सुनने या वेद, कुरान और इंजील के उपदेशों से नहीं होती। जब मनुष्य के हृदय पर प्रकृति और मनुष्य जीवन के मौन व्याख्यानों का प्रभाव पड़ता है तब आचरण का रूप दिखाई पड़ता है। यह एक दो दिन की बात नहीं जो सरलता के साथ प्राप्त कर ली जाय। जब व्यक्ति जाग्रत अवस्था मे रहकर प्रतिदिन सद्प्रयत्न में लगा रहता है तब कहीं उसके अंश मात्र की प्राप्ति होती है।

सभ्य आचरण की प्राप्ति पुस्तकों के अथवा वेदों के पढ़ने से नहीं होती है और न इनका प्रभाव ही मनुष्य के हृदय पर पड़ता है। प्रभाव तो सदाचरण का ही पड़ता है। मन्दिर; मस्जिद अथवा गिरजों मे रहने वाले पण्डित, मुल्ला या पादरी यदि सदाचरण वाले हैं तो हमारे ऊपर उनका प्रभाव पड़ता है। यदि नहीं तो उनका तनिक भी प्रभाव नही पड़ता है।

पृष्ठ २५ शब्दार्थ राजत्व=राज्य की प्रभुता। आचरण=चाल चलन। ज्योतिष्मती है=प्रकाशवान है। प्रभुत्व=अधिकार। अद्भुत सिद्धि=अनोखी सफलता। तीसरा शिवनेत्र=यह कहा जाता है कि शिवजी के तीन नेत्र हैं। उनका तीसरा नेत्र सदैव बन्द रहता है और इसका खुलना प्रलय के समय होता है। यहाँ इसका अर्थ अधिक ज्ञान की प्राप्ति से है। अलापने=गाने, कहने। कपोल=गाल। नयन=नेत्र। छवि=सौन्दर्य। सभ्यता मय=सभ्यता से भरी हुई। निघण्टु=वैदिक शब्दों का कोष। नाद=शब्द, आवाज। मृदुवचनों=कोमल वाणी। चिर स्थायी=सदैव रहने वाला। इस

भाषा का निघण्टु शुद्ध श्वेत पत्रों वाला है=सभ्यता का आचरण व्याख्यानों अथवा उपदेशों के द्वारा नही सीखा जा सकता इसका अभ्यास स्वयं करने से होता है। यह सभ्याचरण नाद करता हुआ भी मौन है=सभ्यता की आवश्यकता होते हुए भी यह व्याख्यानों द्वारा नहीं सीखी जा सकती।

मृदु वचनों.......... अङ्ग हो जाता है।

व्याख्या यह गद्यांश बाबू पूर्णसिंह जी द्वारा लिखित आचरण की सभ्यता नामक पाठ से लिया गया है। सभ्य आचरण किन किन गुणों का समावेश है इसका वर्णन करते हुये कहते हैं कि मीठी वाणी नम्रता, दया, प्रेम और उदारता आदि गुण सभ्य आचरण के मुख्य अङ्ग हैं इन गुणों का प्रदर्श कहने से नहीं किन्तु कर्तव्य रूप में होता है जिसे हम सभ्य आचरण की भाषा में मौन व्याख्यान कह सकते हैं किसी व्यक्ति के साथ सद् व्यवहार करने पर उसके ऊपर व्यवहार का सदैव रहने वाला प्रभाव पड़ जाता है इतना प्रभाव यदि उसे व्याख्यान देकर डालना चाहे तो नहीं पड़ सकता यही सभ्याचरण का मौन व्याख्यान है जो प्रभाव डालने के साथ ही साथ मनुष्य की आत्मा का भी एक भाग हो जाता है।

पृष्ठ २६- शब्दार्थ- कल्याण=मङ्गल। ऋतु=दशा, मौसम। तीक्ष्ण=तेज। मानसोत्पन्न=मन-में उत्पन्न होने वाली। क्लेशातुर=दुःख से पीड़ित। अटल=सदैव स्नेह वाला। अश्रु=आँसू। उन्मदिष्णु=मतवाले। काष्ठ=सूखी लकड़ी। पदार्थों=वस्तुओं। पुष्प=फूल। पात=पत्ते। अश्रुत=जो पहले न सुना गया हो। पूर्व सुन्दर=इससे पहले इतनी सुन्दर।

तीक्ष्ण गर्मी................प्राप्त होता है।

व्याख्या सभ्य आचरण मनुष्य के हृदय पर कितना प्रभाव डालता है इसका वर्णन करते हुये लेखक कहता हैं कि जिस प्रकार तेज गर्मी से जले हुये प्राणी वर्षा की बून्दों से शीतल हो जाते हैं उसी प्रकार क्रोध आदि बुरे स्वभाव की अग्नि मे जलते हुये व्यक्ति भी

सभ्य आचरण रूपी जल से शान्त हो जाते हैं। जाड़े की ऋतु के भयंकर शीत से जिस प्रकार वसन्त ऋतु छुटकारा दिलाकर आनन्द देती है उसी प्रकार मनुष्य के मस्तिष्क में उत्पन्न हुये सारे दुःख सभ्य आचरण के द्वारा नष्ट हो जाते है और चिर वसन्त की भांति सुख प्राप्ति होता है। इसके कारण सारा संसार प्रभावित हो जाता है। कठोर हृदय अथवा दुष्ट हृदय वाले व्यक्ति भी इसके प्रभाव से वंचित नहीं रहते। परिणाम यह होता है कि आचरण का मौन व्याख्यान मनुष्य को नया जीवन प्रदान करता है।

शब्दार्थ महत्ता=शक्ति। अर्थवती=मूल्यवान। प्रभावती=कान्तिमान्। तुच्छ=छोटी; हीन। प्रतीत होती हैं=ज्ञात होती हैं। दिव्य=श्रेष्ठ; सुन्दर; अनोखी। धुन=लगन। लक्ष्य=उद्देश्य। मन्द मन्द हंसी=मुस्कराहट। प्रभुता=प्रभाव डालने वाली शक्ति।

मौन रूपी व्याख्यान..................पिरो देता है।

व्याख्या आचरण कहने की वस्तु नहीं वह क्रिया की वस्तु है। सभ्य आचरण रखने वाला व्यक्ति अपने आचरण का प्रभाव दूसरे व्यक्तियों पर मुंह से कह कर नहीं डालता वरन् उसके कार्यों अथवा व्यवहार का प्रभाव दूसरों पर पड़ता है यही आचरण का मौन व्याख्यान है। इस मौन व्याख्यान में शक्ति, मूल्य और कान्ति होती हैं जिसके आगे मातृ, भाषा साहित्य या अन्य देश की भाषाये अत्यन्त हीन मालूम पड़ती है। इस मौन व्याख्यान की भाषा मनुष्य की नहीं बल्कि ईश्वरीय होती है। यह मनुष्य के हृदय मे सौंदर्य का विकास कर देता है।

पृष्ठ २७ शब्दार्थ तत्त्व=सार। अचलस्थितिसंयुक्त=अटल रहने वाला। गठा जा सकता है=बनाया जा सकता है। श्रुतियो=मंत्रो। अरण्य=वन; जंगल। यत्न=उपाय। अत्यक्त=दिखाई देना; प्राप्त होना।

प्रेम की भाषा...... अत्यक्त होता है।

व्याख्या प्रेम ऐसी वस्तु नहीं जो किसी भाषा में कहकर या

लिखकर प्रकट की जा सके। मनुष्य जीवन का क्या सार है यह भी कथन की चीज नहीं। इसी प्रकार सच्चा आचरण जो प्रभावोत्पादक और सदैव स्थिर रहने वाला हो उसकी प्राप्ति लम्बे लम्बे व्याख्यानों से नहीं होती। केवल वेदों के मीठे उपदेश, इंजील और कुरान के पाठ धार्मिक विषयों पर तर्क वितर्क अथवा सत्संग सच्चा आचरण नहीं प्राप्त करा सकते। उसकी प्राप्ति तब होती है जब मनुष्य जीवन रूपी वन में घुसता है और प्रकृति तथा मनुष्य के मौन व्याख्यानों का उस पर प्रभाव पड़ता है।

पृष्ठ २७ शब्दार्थ दुपट्टा = साफा, पगड़ी। गौरवान्वित = बड़ाई से परिपूर्ण। अगणित = अनगिनती। शताब्दियों = सैकड़ों वर्षों से। अत्यल्प = बहुत कम।

आचरण भी ...... दिखाई देती है।

जिस प्रकार हिमालय अत्यन्त ऊंचा और बर्फ के मुकुट को धारण किये हुये है उसी प्रकार आचरण भी एक ऊँचे मन्दिर की भांति है जिस पर श्रेष्ठता का कलश रक्खा हुआ है। यह मदारी के खेल की भांति नहीं है कि शीघ्र ही प्राप्त हो जाय और क्षण भर में ही विलीन हो जाय। आचरण के बनने में इतना समय लगा है कि जिसकी गणना नहीं की जा सकती। सूर्य पृथ्वी और तारागण बन गये उनके दर्शन हमें हुये और होते रहते हैं किन्तु आचरण का सुन्दर रूप हमें आज तक दिखाई नहीं दिया। कभी किसी स्थान पर उसका किंचित रूप अवश्य दिखाई देता है।

पृष्ठ २७-२८ शब्दार्थ आदर्श = अनुकरण करने योग्य। तर्क वितर्क = वाद विवाद। चोचले = नजाकत, सुकुमारता। गुप्त गुहा = छिपा हुआ स्थान। ब्रह्मवाणी = ब्रह्म (ईश्वर) के वचन। समस्त = सम्पूर्ण। अन्तःकरण = हृदय। ज्ञानोदय = ज्ञान का प्रकाश।

आचरण प्राप्ति .... प्रभाव नहीं पड़ता।

अर्थ जो व्यक्ति सभ्य आचरण प्राप्त करना चाहते हैं उन्हे ध्यान रखना चाहिये कि वाद विवाद से उनको इस कार्य में कोई सहायता

नहीं मिल सकती। व्यर्थ की बातें करना जीवन को बिगाड़ना है। क्योंकि आचरण से इसका कोई सम्बन्ध नहीं और न उसके ऊपर इसका कोई असर ही होता है।

वेद इस देश............ज्ञानोदय कर सकता है।

भारतवर्ष के निवासियों का विश्वास है कि वे वेद के मंत्र स्वयं ब्रह्मा के द्वारा कहे गये हैं और ब्रह्मा सम्पूर्ण सृष्टि का रचने वाला है किन्तु फिर भी इतना समय बीत गया लेकिन यहाँ के लोग संसार की भिन्न भिन्न जाति के लोगों को संस्कृत का ज्ञान न करा सके और न उनसे बुलवा सके। वास्तव में यह हो भी नहीं सकता क्योंकि ईश्वरीय मौन ज्ञान किसी भाषा और शब्दों के द्वारा प्रगट नहीं किया जा सकता। उसका प्रभाव आचरण पर ही पड़ता है अथवा वह किसी महान ऋषि के हृदय में ज्ञान का प्रकाश कर सकता है। वह न लिखा जा सकता है और न कहा जा सकता है।

पृष्ठ २८ शब्दार्थ गोलन्दाजी=गोला मारना। बाल तक का बांका न होना=कुछ भी अनिष्ट न कर सकता। स्पर्श=छूना। रोमांच=रोंगटे खड़े होना। कारलायल=अंग्रेजी भाषा का प्रसिद्ध लेखक व दार्शनिक। राम रौला=निरर्थक हल्ला गुल्ला। संस्कृत ज्ञान हीन=संस्कृत भाषा को न जानने वाला। जीवन व्यापी= सम्पूर्ण जीवन तक व्यापक रहने वाला। गिरजा=ईसाइयों का प्रार्थना करने का स्थान। मठ=विहार। रसूल=ईश्वर का भेजा हुआ दूत।

किसी का आचरण ....एक साधारण बात है।

उत्तम आचरण का प्रभाव मनुष्य पर पड़ सकता है किन्तु साहित्य की मनोहर इन्द्रियों से कोई असभ्य व्यक्ति सभ्य नहीं बनाया जा सकता है।

यदि आप कहें............रसूल होता है।

व्याख्या यदि आप कहना चाहें कि व्याख्यान और धार्मिक उपदेशों ने अनेक पुरुषों की जीवन धारा को ही बदल दिया है तो

इतना ध्यान रखना चाहिये कि इतना बड़ा प्रभाव डालने वाली वस्तु व्याख्यान और उपदेश नहीं थे किन्तु यह सदाचरण था। मामूली धार्मिक उपदेश और व्याख्यान मन्दिर, मस्जिद और गिरजे में सुनने के लिये प्रतिदिन मिल जाते है किन्तु प्रभाव उसी उपदेशक का पड़ता है जो सदाचारी और श्रेष्ठ गुणों से सम्पन्न होता है।

उत्तर प्रश्न १ मनुष्य की सुन्दरता गहने और वस्त्रों से नहीं बढ़ती किन्तु सदाचरण से बढ़ती है। संसार में अनेक वस्तुऐं ऐसी है जिनके कारण मनुष्य को आदर मिलता है। विद्वान को उसकी विद्वता का, कलाकार को कला का, कवि को कविता का, धनवान को धन और राजा को उसके राजदण्ड के कारण आदर की प्राप्ति होती है किन्तु लोगों की श्रद्धा नहीं मिलती। सदाचारी व्यक्ति को आदर और श्रद्धा दोनों की ही प्राप्ति होती है।

आचरण की सभ्यता का प्रभाव अत्यन्त व्यापक होता है। कला, साहित्य संगीत आदि की इस सभ्यता के कारण अपूर्व वृद्धि होती है। आत्मिक, शारीरिक सामाजिक और राष्ट्रीय उन्नति होती है। मनुष्य का जीवन सफल हो जाता है और वह अपने सुख के साथ ही दूसरो को भी सुख प्रदान करता है।

सदाचारी व्यक्ति सर्वत्र आदर प्राप्त करता है। लोगो को उस पर विश्वास होता है। जन समुदाय उसके इशारे पर अपना जीवन बलिदान करने को तैयार रहता है। महात्मा गान्धी के सदाचरण के कारण ही कोटि कोटि भारत वासी इनके लिये अपना जीवन बलिदान करने को तत्पर रहते थे। उन्ही के कारण संसार में भारत जैसे परतन्त्र देश का मान बढ़ा।

आचरण की सभ्यता का प्रभाव दूसरों पर इतना पड़ता है कि कितने ही स्त्री पुरुषो का जीवन ही बदल गया। वे अवनति के गर्त से निकल कर उन्नति के शिखर पर जा चढ़े। इसके कारण कितने ही निराश व्यक्तियों को नया जीवन मिल गया।

स्वतन्त्र भारत के सदाचरण की अत्यन्त आवश्यकता है क्योंकि

बिना इसके कोई भी क्षेत्र पूर्ण नहीं है। पहले यदि विद्यार्थियों को लिया जाय तो हम कह सकते हैं कि ये भावी भारत की आशाओं में यदि सदाचरण नहीं तो देश का कल्याण असम्भव है।

सरकारी कर्मचारियों में आजकल भयानक भ्रष्टाचार फैला हुआ है। झूठ और रिश्वत उनका प्रधान कार्य हो गया है। इसका कारण सदाचरण का अभाव है। यदि ये कर्मचारी आचरण की सभ्यता से युक्त होते तो इस प्रकार के अनुचित कार्य को कभी नहीं करते।

वर्तमान व्यापार को देखिये। अनेक प्रकार की चाल चली जा रही है। बड़े-बड़े व्यापारी माल दिखाते कुछ हैं भेजते कुछ हैं। बड़ी-बड़ी कम्पनियाँ एक बार अच्छा माल तैयार करती हैं और जब बाजार में उनके माल की खपत बढ़ती है तो घटिया सामान तैयार करके लोगों को ठगती हैं। ये कार्य राष्ट्रीय आय को कम करने वाले हैं। इस प्रकार के कार्य आचरण की सभ्यता से परे हैं। अतः स्वतन्त्र भारतवर्ष में आचरण की सभ्यता की नितान्त आवश्यकता है।

उ० प्र० २ विद्यार्थी का मुख्य उद्देश्य विद्यार्जन कर अपनी मानसिक और आत्मिक उन्नति करना है जिससे वह उस समाज का कल्याण कर सके जिसकी सहायता के कारण वह उत्तरोत्तर उन्नति करता जा रहा है। यदि कोई विद्यार्थी अपने इस कर्तव्य को नहीं करता वह समाज के प्रति अन्याय करता है।

इस महत्वपूर्ण कार्य को सरलता से नहीं किया जा सकता। सैकड़ों विद्यार्थियों में दो या चार विद्यार्थी ऐसे होते हैं जो अपने कर्तव्य को समझ कर उसका पालन करते हैं। उसी विद्यार्थी का विद्यार्जन सफल है जो अपनी प्रतिभा से देश का और समाज का कल्याण कर सके।

इस कार्य के लिये विद्यार्थी में सभ्य आचरण का होना आवश्यक है, सभ्य आचरण न रखने वाला विद्यार्थी विद्यार्जन नहीं कर सकता। सभ्य आचरण के अन्दर उन सभी गुणों का समावेश है जो मनुष्य को श्रेष्ठ बनाते हैं। ब्रह्मचर्य, सदाचार, दया, क्षमा, नम्रता, उदारता

आदि गुण सभ्य आचरण के अङ्ग है विद्यार्थी के अन्दर इन गुणों का होना आवश्यक है। इन गुणों के अभाव में उसे एक उत्तम विद्यार्थी नहीं कहा जा सकता। इन गुणों को रखने वाला विद्यार्थी विद्या की प्राप्ति करता है अपने साथियों मे और गुरुजनों में आदर का पात्र बनता है। उच्छृङ्खल विद्यार्थी केवल अपनी उदण्डता के लिये प्रसिद्ध रहते है। थोड़े समय के लिये वे अपने को बहुत बड़ा समझ बैठते हैं किन्तु शीघ्र ही उन्हें असफलता का मुँह देखना पड़ता है। यदि लज्जा हीन हुये तो वे ठोकर खाकर भी नहीं चेतते क्योंकि सभ्य आचरण का अभाव उन्हें इस दशा को प्राप्त करा देता है।

उ० प्र० ३ मनुष्य को ईश्वर द्वारा जीवन मिला साथ ही साथ बुद्धि भी। बुद्धि के द्वारा वह अपना भला बुरा सोच सकता है वह अपनी उन्नति कर सकता है और अवनति भी। उन्नति चाहे वह मानसिक हो या आत्मिक शारीरिक हो या भौतिक। किसी प्रकार की उन्नति क्यो न हो उसके लिये कुछ न कुछ प्रयत्न अवश्य करना पड़ेगा। किसी श्रेष्ठ वस्तु को प्राप्त करने के लिये श्रेष्ठ कार्य भी करने पड़ते हैं। सद्प्रयत्नों के अभाव में मनुष्य कुछ भी प्राप्त नही कर सकता।

जीवन को सफल बनाने के लिये मनुष्य को सभ्य आचरण की अत्यन्त आवश्यकता है। सभ्य आचरण के अन्तरगत वे कार्य आते हैं जो समाज के हित में और अपनी आत्मिक उन्नति करने वाले हों जिन कार्यों के द्वारा दूसरों को दुःख पहुँचता हो वे कार्य न करने चाहिये। सभ्य आचरण के द्वारा ही मनुष्य यश प्राप्त करता है। समाज उसकी उन्नति मे सहायक होता है। उन्नति होने पर साधारण जनता उसके मार्ग में फूल बिछाती है।

सभ्य आचरण वाले व्यक्ति अपने देश में ही नहीं विदेशों में भी सम्मान प्राप्त करते हैं। जन साधारण के लिये उनके वाक्य और कार्य उदाहरण की वस्तु हो जाते है। जो वस्तु मनुष्य की महत्ता को बढ़ाती है उसकी गिनती आदर्श पुरुषो मे कराती है वही उसके जीवन

का परमोद्देश है ।

उ०प्र० ४ किसी देश की उन्नति वहाँ की जन संख्या अथवा भूभाग पर निर्भर नहीं रहती किन्तु उस देश के निवासियो के चरित्र पर निर्भर होती है। प्राचीन काल में भारत सारे संसार का गुरु बना हुआ था उसका कारण यहाँ के निवासियों का चरित्र था। चरित्र के बल से ही वे नवीन वस्तुओं की खोज कर विश्व ज्ञान के भण्डार को भरते थे। विदेशी गण यहाँ के निवासियो के चरित्र और आचरण को देख कर दाँतों तले उङ्गली दबाते थे। ग्रीक राजदूत मेगास्थनीज यहाँ के निवासियो की ईमानदारी से इतना प्रभावित हुआ कि उसने अपनी डायरी के पन्ने रंग डाले किन्तु यह बात उस समय भारत के रहने वालो के लिये एक अत्यन्त ही साधारण बात थी। यही कारण था भारत विद्या धन और बल में संसार का केन्द्र था।

वर्तमान समय में भारतवर्ष में प्राचीन काल से तिगुनी जन संख्या है किन्तु फिर भी यहाँ के निवासी भूखे हैं नंगे है और सदियो तक परत न्त्र रहे। इसका कारण उनका चरित्र था, उनका आचरण था। यदि उनके पास सभ्य आचरण होता तो भारतवर्ष में एक तन्त्र राज्य होता। वह छोटे २ राज्यों में कभी विभाजित न होता। यदि एक राज्य को दूसरे से जलन न होती तो वह आपत्ति के समय अपने पड़ोसी राज्य की रक्षा के लिये योग देता किन्तु ऐसा नही था। परिणाम यह हुआ कि सदियों तक गुलाम रहे। हमारी संस्कृति और सभ्यता पर कुठाराघात होते रहे। हमारे घरो की होली जलती रही और हम बुझा तक न सके।

आज भी हम भारत को उन्नतिशील देश नहीं कह सकते क्योंकि उन्नति के स्थान पर आज भी वह अवनति की ओर अग्रसर हो रहा है दो या चार व्यक्तियो के कारण हमारे देश का चाहे जैसा मान हो किन्तु घर मे तो अब भी घुन लगा हुआ है। विद्यार्थियों पर परिश्रम और गम्भीरता के स्थान-पर उच्छृङ्खलता है सरकारी कर्मचारियों पर कर्तव्य पालन और सेवा के स्थान पर रिश्वत लेना और धोखा देना

है। इन सबका कारण सभ्य आचरण का न होना है। यदि लोगों के पास आचरण हो तो इस प्रकार के नीच कार्य न हों जिनके कारण देश की अवनति हो रही है।

उ०प्र० ५ -बाबू पूर्णसिंहजी ने हिन्दी की अन्य लेखकों की भांति हिन्दी साहित्य की अधिक सेवा नहीं की किन्तु जितना भी लिखा उससे यह प्रकट हो गया कि लेखक का महत्व उसकी रचना की अधिकता पर नहीं किन्तु उसकी लिखने की कला पर है। आपने जो कुछ भी लिखा वह भावुकतामय एवं स्पष्ट शैली मे लिखा। जिस विषय पर आपने लिखा उसका चित्र सा खींच दिया है। स्वाभाविकता और विलक्षणता आपकी शैली की विशेषतायें है। पाठकों के हृदय की राग-वृति को जाग्रत कर देने में आप अत्यन्त कुशल थे। आपके लिखे गये लेखों में बनावट का नाम निशान नहीं। वक्तृत्व कला से युक्त आपकी शैली है। आपकी भाषा अत्यन्त सरस और सुन्दर है। शब्दों के सुन्दर चयन के कारण भाषा में सजीवता आ गई है। उर्दू भाषा का आपको बहुत अच्छा ज्ञान था किन्तु हिन्दी के लेखों में आपने उर्दू भाषा के शब्दों का प्रयोग नहीं किया है। आपने मुहावरों का प्रयोग बहुत तो नहीं किया किन्तु जहाँ कही किया भी है वह बहुत सुन्दर ढङ्ग से किया है। अलङ्कारों के न होने पर भी भाषा का चमत्कार नष्ट नहीं हुआ है। कहीं कहीं हास्य का पुट देकर भाषा को रोचक बना दिया है।

उ० प्र० ६ (क) दर्शन = दर्शनात्मक। पृथ्वी = पृथ्वी सम्बन्धी।

माया = मायावी। कला = कलात्मक। अग्नि = आग्नेय।

उत्तर (ख) सभ्याचरण—सभ्यों का आचरण—सम्बन्ध तत्पुरुष।

मानसोत्पन्न—मानस मे उत्पन्न—अधिकरण तत्पुरुष।

अश्रुत पूर्व—पहले नहीं सुना है जो बहुव्रीहि।

तर्क-वितर्क—तर्क और वितर्क—द्वन्द्व।

असभ्य—न सभ्य नञ तत्पुरुष।

उ० प्र० ७ यह गद्यांश बाबू पूर्णसिंह जी द्वारा लिखित आचरण की सभ्यता नामक पाठ से है। मनुष्य के ऊपर किस वस्तु का प्रभाव

अधिक पड़ता है इसके बारे में वे कहते हैं कि बड़े बड़े लेखों और शब्दों का मनुष्य के आचरण पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। हो सकता है कि फूल की कोमल पखुड़ी को छूकर किसी के रोयें खड़े हो जाय या शीतल जल से क्रोध और विषय वासना ठण्डे पड़ जाय या बर्फ को देखकर पवित्रता आ जाय अथवा सूर्य के प्रकाश से किसी को पुनः नेत्र ज्योति प्राप्त हो जाय किन्तु अङ्गरेजी का अच्छा से अच्छा लेख जिस प्रकार बनारस के पण्डितों पर प्रभाव नहीं डाल सकता उसी प्रकार लेख और ऊंचे ऊंचे शब्द किसी के आचरण को नहीं बदल सकते। इसी प्रकार संस्कृत भाषा न जानने वाले के लिये पण्डितों द्वारा की जाने वाली ज्ञान चर्चायें कोई मूल्य नहीं रखतीं। सारांश यह है कि किसी मनुष्य के ऊपर प्रभाव सदाचरण का पड़ता है पुस्तकों और व्याख्यानों का नहीं।

शेष पृष्ठ ८८ के गद्यांश का अर्थ देखिये।

७ श्री सत्यनारायण कविरत्न।

(साहित्याचार्य स्वर्गीय पं० पद्मसिंह शर्मा)

सारांश पं० सत्यनारायण कविरत्न का जन्म धांधूपुर जिला आगरा में सम्वत १६४१ में हुआ था। आप ब्रज भाषा के श्रेष्ठ कवि माने जाते हैं। एक बार आप लेखक महोदय (स्वर्गीय पं० पद्मसिंह शर्मा) से मिलने ज्वाला पुर गये उन्होंने पहले कभी सत्यनारायण जी को न देखा था। इस सरल और सौम्य मूर्ति को देखकर उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। लेखक महोदय को उन दिनों श्री सत्यनारायण जी का कविता पाठ सुनने का भी अवसर प्राप्त हुआ।

श्री सत्यनारायण जी कविता का पाठ बड़े सुन्दर ढङ्ग से करते थे। साथ ही उनका गला भी बड़ा सुन्दर था। कोकिल कण्ठ से ब्रज-भाषा की कविता का पाठ अत्यन्त ही मधुर लगता था। एक बार मथुरा में स्वामी रामतीर्थ जी पधारे। सभा में उनका व्याख्यान होने को था। स्वामी जी के दर्शन की इच्छा से सत्यनारायण जी भी सभा में पहुँच गये। कवियों की कवितायें सुनकर उनकी भी इच्छा कविता

सुनाने की हुई और उन्होने प्रबन्धक महोदय से कुछ समय माँगा किन्तु उनकी साधारण वेष भूषा के कारण उन्हें अवसर न दिया गया किन्तु एक सज्जन के प्रयत्न से उन्हें पाँच मिनट का समय मिला। सत्य नारायण जी ने ब्रज भाषा के दो सवैये सुनाये। स्वामी जी को उनका कविता पाठ इतना अच्छा लगा कि वे उनसे पौन घण्टे तक कविता पाठ कराते रहे।

आपको व्रजभाषा से बड़ा प्रेम था। वे मन, वचन और कर्म से हिन्दी भाषा के उपासक थे। यद्यपि बी० ए० तक उन्होंने अंग्रेजी का अध्ययन किया था किन्तु, फिर भी ये अंग्रेजी कभी बोलते तक न थे। आप सरलता और सादगी की मूर्ति थे। अभिमान नाम मात्र को भी न था। अनुकूल परिस्थियों के न रहते हुये भी आपने वह कार्य किया कि आप कविरत्न की उपाधि से विभूपित है।

आपकी कविताओं का अधिकांश भाग उपलब्ध नहीं किन्तु जो कुछ भी मिला है उससे आपकी कवित्व शक्ति का भली भांति ज्ञान हो जाता है। इसमे कोई सन्देह नही आप व्रजभाषा के महा-कवियों में से एक थे।

पृष्ठ ३० शब्दार्थ प्रतिमा=मूर्ति। साक्षात्कार=मिलन। सौम्य मूर्ति=सज्जनो की आकृति।। बगल-बन्दी=बन्धन वाला कुरता। स्नेह बरस रहा था=प्रेम प्रकट हो रहा था। समागम=मिलन। प्रकरण=प्रसङ्ग।

प्रसह्य··· ···············कृतोप सम्भाषमिवेक्षितेन।

अपरिचित मनुष्यों के हृदयों मे भी हठ पूर्वक प्रेम पूर्ण भावो को भरते हुए महर्षि व्यास ऐसे प्रतीत हो रहे थे मानो वे माधुर्य और विश्वास पूर्ण देखने से बातचीत सी कर रहे हों।

पृष्ठ ३१- शब्दार्थ हृदय हारी टोन=मन को हर लेनेवाला स्वर। नवल=सुन्दर। रसिकन ढिग=प्रेमीजनों के पास। तुव=आपके। दरस=दर्शन।

नवल-नागरी ....सतनारायन नाम।

सुन्दर हिन्दी भाषा के प्रेम का पुजारी और प्रेमी जनों के पास ठहरने वाला हूँ। आपके दर्शनार्थ आया हूँ। मेरा नाम सत्य नारायण है।

पृष्ठ ३१ शब्दार्थ पुनरुक्ति=दुबारा आवृति होना। फिकरा चुस्त हो जाय=वाक्य शोभा देने लगे। पुनरालोचना=एक बार फिर शुद्धियों पर विचार करके। जीवित ब्रजभाषा=सजीव ब्रजभाषा। प्रामाणिक माना हुआ, श्रेष्ठ।

पृष्ठ ३२ शब्दार्थ मनोहारी=मन को हर लेने वाला। भावावेश=भावों का प्रवाह। मणिकाञ्चन=सोने और मणि। संयोग=मिलन। पाठ्यमान=पढ़ने के योग्य। गीयमान=गानेयोग्य। तृप्ति=सन्तोष। स्वर माधुर्य=स्वर की मिठास। उत्तरोत्तर=धीरे-धीरे। विस्पष्टता=अत्यन्त शुद्ध। स्निग्ध= कोमल। लोच=लचक लावण्य। सोज=उष्णता, गर्मी।

पृष्ठ ३२ शब्दार्थ श्रुति मधुर स्वर=कानों के लिये मीठा स्वर। वंशीरव=बांसुरी की आवाज। सम्मोहनी शक्ति=मोहित कर लेने वाली शक्ति। निरन्तर=अबाध; लगातार।

पृष्ठ ३३ शब्दार्थ स्वाभाविक सादगी के पुतले=प्रकृति से ही सादापन की मूर्ति। गुदड़ी में छिपे लाल=अप्रकट रूप में महान व्यक्ति। करामाती चोले=आश्चर्य जनक कार्य करने वाला स्वरूप मूर्ति अलौकिक=इस लोक से परे, अनोखे। अशिष्ट=असभ्यता पूर्ण। बदौलत=कारण। स्वामी रामतीर्थ=पंजाब प्रान्त में लाहौर के रहने वाले थे। पहले आप गणित शास्त्र के प्रोफेसर थे किन्तु बाद में आपने सन्यास ग्रहण कर लिया। आप वेदान्त और दर्शन शास्त्र के श्रेष्ठ विद्वान थे। आप वेदान्त का प्रचार करने विदेशों में भी गये थे। नान्दी पाठ=किसी नाटक के खेलने से पूर्व किये जाना वाला पाठ। श्रोताओं=सुनने वालों। दैवयोग=भाग्यवश। मग्न=तल्लीन। भावुक भक्त शिरोमणि=भावनाओं से युक्त श्रेष्ठ भक्त।

मद्भाग्योपचयादयम.............सर्वा गुणानां गुण: ।

मेरे भाग्य के उदय से सब गुणों का समूह इकट्ठा हो गया है ।

सत्यनारायण स्वाभाविक...............कारण बन जाती थी ।

व्याख्या- कवि सत्यनारायणजी अत्यन्त ही सादगी से रहते थे। उनकी सादगी बनावटी न थी वे प्रकृति से ही अत्यन्त सादा रहने वाले थे। उनके मुख मण्डल के भोले पन ग्रामीण ढंग के वस्त्र तथा ब्रजभाषा की बोलचाल देखकर और सुनकर कोई यह सोच भी न सकता था कि इस साधारण स्वरूप मे दैवी गुण भरे हुये है। यही कारण था कि कभी २ सभा सोसाइटियों मे लोग उनके साथ असभ्य व्यवहार कर बैठते थे।

पृष्ठ ३४ शब्दार्थ - शराबोर=तर। सुरसरि=गंगा। आकृष्ट= आकर्षित, खींचना। अभिनन्दन=स्वागत। प्रशस्तियाँ=प्रसंशा की पंक्तियाँ। प्रशस्तिपात=प्रसंशा के योग्य व्यक्ति। अपील=निवेदन। डाब्सन साहब=राजपूत हाई स्कूल के प्रधान अध्यापक थे बाद में आप होल्कर कालिज इन्दौर के प्रिन्सीपल हो गये थे।

नित ध्यान रहै.............हिन्द को।

कवि सत्यनारायण जी ने इन पंक्तियों की रचना डाब्सन साहब के अभिनन्दन में की थीं जिनमे कहा गया है कि तुम्हारा हृदय ईश्वर के कमल रूपी चरणों का सदैव स्मरण करता रहे। अपने प्रिय जनों मित्रों, छात्र गण तथा हिन्दी हिन्दू-हिन्द को आप कभी न भूलें।

पृष्ठ ३४-३५ शब्दार्थ- रुचिर=अच्छा लगने वाला। रसावन= रस बरसाने वाला। मुग्ध=मोहित। मनसा=मन से। वाचा= वचन से। कर्मणा=कर्म से। उपासक=पुजारी। दुर्व्यसन=बुरी आदत, अपवाद। हिन्दी भाषा भाषी=हिन्दी भाषा बोलने वाला। प्लुत स्वर=दीर्घ से बड़ा स्वर जिसमे SSS तीन मात्रायें होती हैं। चूं करते रहे=बोलते रहे। सर्वथा=पूर्ण रूप से। संक्रामक=छूत से फैलने वाला।

अनावश्यक अंगरेजी............ अपवाद थे।

व्याख्या भारतवर्ष के नवीन शिक्षा प्राप्त नवयुवकों को बिना आवश्यकता के अंग्रेजी भाषा बोलने की बुरी आदत पड़ गई है। वे बोलते समय हिन्दी अंग्रेजी मिश्रित भाषा का प्रयोग करते हैं जिसमे भी तीन भाग अंग्रेजी और एक भाग हिन्दी रहती है। सत्यनारायण इस बुरी आदत के कभी भी शिकार न हुये।

पृष्ठ ३६ शब्दार्थ राम नाम का बैर=अच्छी चीज बुरी लगना। उत्कर्ष=उन्नति। सत्ता=अस्तित्व। साहित्य धुरन्दरों=साहित्य के विद्वानों। सह्य=सहन। पूर्व जन्म=पिछले जन्म। जन्मांतरीण=जन्मजन्मान्तर।

सतीवयोषित्............भवान्तरेष्वपि।

जिस प्रकार सत्ती स्त्री दूसरे जन्म में अपने पति से मिलती है उसी प्रकार निश्चित प्रकृति भी मनुष्य को दूसरे जन्म से प्राप्त होती है।

पृष्ठ ३६-३७ शब्दार्थ निर्भर=आश्रित। ख्याति=प्रसिद्धि। उपलब्ध=प्राप्त। मनोविनोद की सामग्री=मनोरंजन की वस्तु। हास्योत्पादक=हंसी उत्पन्न करने वाला। सन्मित्र=अच्छे मित्र। हृदय तरंग=सत्यनारायण कविरत्न द्वारा लिखित ब्रजभाषा में काव्य ग्रन्थ। मनोरथ=मन की इच्छा। सुहृच्छिरोमणि=मित्रों में श्रेष्ठ। प्रतिकूल=विरुद्ध। कद्रदान= कद्र करने वाला। अदृष्टि=ईश्वर, भाग्य।

गरीब सत्यनारायण...... .....कैसे कहलाये गये।

कवि सत्यनारायण अत्यन्त ही निर्धन थे। वर्तमान समय मे लोगों को विज्ञापन आदि ऐसे साधन प्राप्त हैं जिनके द्वारा वे शीघ्र ही प्रसिद्ध हो जाते हैं लेकिन कवि सत्यनारायन न तो विज्ञापन आदि के द्वारा अपनी प्रसिद्धि ही चाहते थे और न उन्हें सुगम साधन ही प्राप्त थे। दुर्भाग्य से उन्हें मित्र भी मिले तो ऐसे मिले जिन्होंने उनके भोलेपन को अपनी मनोरंजन की सामग्री समझ लिया था। और उन्हें

उत्साहित करने के स्थान पर उनकी तथा उनकी रचनाओं का मजाक उड़ाया करते थे। वे इन कार्यों को अच्छे मित्र का कर्तव्य समझ बैठे थे कविजी का हृदय तरंग नामक काव्य ग्रन्थ जो उनके सम्पूर्ण जीवन की कमाई थी इसी प्रकार के किसी मित्र द्वारा निर्धन व्यक्ति की मनोकामना की भांति रह गई जिसके लिये वे आजीवन दुखी रहे। बड़े आश्चर्य की बात है कि इन विरोधी परिस्थियों में पलकर भी सत्यनारायण कविरत्न की उपाधि से किस प्रकार विभूषित हो गये।

पृष्ठ ३७ शब्दार्थ नन्दन कानन=देवताओ के विहार करने का उपवन। पारिजात=पुष्प। काल व्याध=काल रूपी बहेलिया। 'भारतीय आत्मा'=मध्यप्रान्त के हिन्दी भाषा के श्रेष्ठ कवि तथा लेखक श्री माखनलाल चतुर्वेदी।

सत्यनारायण के सद्गुणों............कोकिल उड़ गया।

व्याख्या· कवि सत्यनारायण जी श्रेष्ठ गुणों से परिपूर्ण महान व्यक्तियों में से थे। संसार उनके सद्गुणों से भली भांति परचित भी नहीं हो पाया था कि इससे पहिले ही वे इस संसार को त्याग कर चले गये। यह उनके जीवन का उदय काल ही था जब कि कठोर काल ने उनको धर दबाया। श्री माखन लाल चतुर्वेदी उनके गुणों से परिचित हो गये थे। वे उनके लिये पुकारते ही रह गये जब कि वे बिना किसी की पुकार सुने हुये की भांति इस संसार से उड़ गये।

पृष्ठ ३८ शब्दार्थ आकस्मिक=अचानक होने वाला। सार्वजनिक=जन साधारण से सम्बन्धित। जलाञ्जलि=श्रद्धा सहित जल अर्पण करना। विस्तृत रूप से=विस्तार पूर्वक। पात्रता=योग्यता। यथार्थ=उचित। तटस्थ=गम्भीर तथा पक्षपात से रहित। कालो ह्ययं निर्विधिर्विपुला च पृथ्वी=काल असीम है और पृथ्वी बड़ी है।

पृष्ठ ३८ शब्दार्थ उत्कृष्ट=श्रेष्ठ। इनायत=कृपा। उपलब्ध=प्राप्त। पर्याप्त=उचित मात्रा में। प्रवीण=चतुर। पारखी=ज्ञाता, जानने वाले। स्तुति=प्रशंसा। औचित्य=गुणों की श्रेष्ठता।

पृष्ठ ३६ शब्दार्थ—आलोचक=गुण दोषों को वर्णन करने वाला। भवभूति=संस्कृत भाषा के प्राचीन कवि। वर्डसवर्थ=एक अंग्रेजी कवि। देव=हिन्दी भाषा के कवि। सूक्ति=उत्तम कथन।

व्या० जग-व्योहारन .... जसु बढे।

यह पद्यांश श्री वियोगी हरि द्वारा कविरत्न सत्य नारायण जी के सम्बन्ध में लिखा गया है। जो संसार के व्यवहार मे अत्यन्त ही भोला और कोरा ग्राम का वासी था। ब्रज साहित्य का अपार ज्ञान रखने वाला कविता रूपी समुद्र मे बिहार करने वाला था जो अपनी श्रेष्ठ रचनाओं के द्वारा हृदय को आवर्षित कर लेता था जिनमे कृष्ण भक्ति और देश भक्ति का रस भरा हुआ था। जिसकी रची हुई 'हृदय तरंग' को पढ़कर हृदय का उत्साह बढ़ता है उस सरलता और प्रेम से परिपूर्ण श्रेष्ठ कवि सत्यनारायन की कीर्ति नित्य प्रति बढ़ती रहे।

प्रश्नोत्तर १. देखिये पाठ का सारांश।

प्रश्नोत्तर २ सत्यनारायण जी का चरित्र अत्यन्त श्रेष्ठ था। सादा जीवन उच्च विचार वाली कहावत उनके ऊपर पूर्ण रूप से चरितार्थ होती थी। साधारण वेष में रहकर निरन्तर हिन्दी साहित्य की सेवा करना उनका प्रधान उद्देश्य था। प्रत्येक व्यक्ति के साथ सज्जनता एवं नम्रता का व्यवहार उनका कर्तव्य था।

हिन्दी के प्रति उनका प्रेम अगाध था। अपना परिचय देते समय भी वे इस बात को न भूले और अपने को 'नवल नागरी नेह रत' कहा। भिन्न भाषा भाषियों के अभिनन्दन में भी आपने उनसे सदैव ही हिन्दी भाषा की सेवा करने का निवेदन किया। विश्वकवि रवीन्द्र नाथ टैगोर के अभिनन्दन में आपने लिखा है

"जैसी करी कृतारथ तुम अंग्रेजी भाषा,
तिमि हिन्दी उपकार करहुगे ऐसी आसा।

आप सभा सोसाइटियों में भी इसी उद्देश्य से सम्मिलित होते थे कि वे इस प्रकार हिन्दी भाषा की सेवा तथा ब्रज भाषा की कविता प्रचार तथा लोक रुचि को इस ओर खींच सकेंगे। यद्यपि उन्हें ऐसा

करने में पर्याप्त कष्ट उठाना पड़ता था किन्तु आपने कभी इसकी चिन्ता न की। एक बार उन्होंने अपने एक मित्र से कहा था।

'हौं तो व्रजभाषा की पुकार लैकैं जरूर जाऊँगो और कछु नाँय तो व्रजभाषा सुरसरी की हिलोर में सब को भिजाय तो आऊँगो।"

यह उनकी विचार धारा थी। आपको हिन्दी भाषा से इतना प्रेम था कि विदेशी भाषा में बात तक न करते थे। आपने अंग्रेजी पढ़ी थी और अंगरेजी विद्वानों की संगति में भी रहते थे किन्तु फिर भी अंगरेजी भाषा से बचते रहते थे। जो व्यक्ति थोड़ी बहुत टूटी फूटी भी हिन्दी जानता था उससे आपने कभी भी अन्य भाषा में बात न की। एक बार एक साधू महात्मा जो भली भांति हिन्दी जानते थे और अंगरेजी का भी कुछ ज्ञान रखते थे अभिमान में आकर आपसे एक घण्टे तक अंगरेजी बोलते रहे किन्तु आपने उत्तर में एक शब्द भी अंगरेजी का न बोला तब महात्मा जी ने स्वयं ही हार मानकर कहा "क्या आपने अंगरेजी न बोलने की कसम खाली है?" आपने अत्यन्त गम्भीरता एवं सरलता से उत्तर दिया 'मैं किसी भी ऐसे मनुष्य के साथ जो टूटी फूटी भी हिन्दी बोल या समझ सकता है अंगरेजी नहीं बोलता। हिन्दी बोलने समझने में सर्वथा ही असमर्थ किसी अंगरेजी दाँसे वास्ता पड़ जाय तो लाचारी है, तब अंगरेजी भी बोल लेता हूँ।" इससे प्रतीत होता है कि आपके हृदय में हिन्दी के प्रति प्रेम कूट कूट कर भरा था। ऐसा था इनका चरित्र और ऐसी थी इनकी भक्ति अपनी मातृ भाषा के प्रति।

प्रश्नोत्तर ३ पं० सत्यनारायण जी की तुलना करते समय हम किसी साहित्यिक पुरुष को बुरा नहीं बता सकते किन्तु कुछ गुणों का विवेचन करेंगे क्योंकि आजकल के साहित्याकार भी किसी न किसी रूप में साहित्य की सेवा ही करते हैं। सत्यनारायण जी ने हिन्दी भाषा की निस्वार्थ सेवा की। इसके लिये उन्होंने अपना तन, मन, धन सब कुछ लगा दिया। वर्तमान साहित्यकारों में इस बात का अभाव है। आज कल के लेखक और साहित्यकारों का मुख्य उद्देश्य धन

अर्जित करना है। साहित्य की सेवा में तन, मन, धन अर्पित कर देने वाला विरला ही साहित्यकार मिलेगा।

वर्तमान समय में ऐसे साहित्यकारों की कमी नहीं जो अपनी ख्याति प्राप्ति के लिये भांति भांति के साधनों का उपयोग करते है। वे विज्ञापन इसलिये निकालते हैं लोग उनके नाम से परिचित हो जायं सभा सोसाइटियों में इसलिये जाते हैं कि वे अपनी वेष भूषा तथा विद्वता का प्रभाव दूसरों पर डाल सकें, लोग उनके यश के गीत गायें परन्तु सत्यनारायण जी ने कभी भी यश प्राप्ति का साधन न अपनाया। सभा सोसाइटियों में वे हिन्दी भाषा के प्रचार का उद्देश्य लेकर गये। उन्होंने जनता पर अपने भड़कीले वस्त्रों द्वारा प्रभाव डालने का कभी भी प्रयत्न न किया।

सत्यनारायण जी विद्वता तथा श्रेष्ठ गुणों से परिपूर्ण थे। उनका सार्वजनिक जीवन-प्रेम, दया और उदारता से परिपूर्ण था। उत्कृष्ट कविता की रचना करके भी आपने न अभिमान किया न उसका प्रचार किया। दोनों ही गुणों से परिपूर्ण बहुत कम साहित्यकारों के दर्शन होते हैं।

प्रश्नोत्तर ५ शर्मा जी अपने समय के उत्कृष्ट गद्य लेखक थे। आपकी शैली में न तो वृद्धों की सी गम्भीरता है और न निराशावादियों की सी निर्जीव शान्ति है। लोक के अमंगल और वेदना के साथ उनकी शैली गम्भीर भी हो गई है किन्तु अधिकतर अस्फुट मुस्कान और चंचल मार्मिकता के दर्शन होते हैं। आपकी गद्य शैली पर आपके व्यक्तित्व की स्पष्ट छाप है। ओज पूर्ण सरस शैली में आपने हिन्दी भाषा के भण्डार की वृद्धि की है। आपने लेखकों कवियों और विद्वानों की जीवनी अत्यन्त ही सजीव भाषा में लिखी हैं। हास्य और व्यंग्य के लेख भी आपने बड़े सुन्दर लिखे हैं उनकी प्रत्येक पंक्ति से मसखरापन और गुदगुदी मिलती है। आपकी आलोचनाओं में भी चुभता हुआ व्यंग्य मिलता है।

आपकी भाषा प्रवाह युक्त और आकर्षक है। जिस विषय पर

आपने लेख लिखा उसमें मूर्तिमत्ता स्थापित कर दी है। आपने हिन्दी उर्दू के शब्दों के प्रयोग पर विशेष ध्यान नहीं दिया है। आपने अपने लेखों में उर्दू के शब्दों का प्रयोग बड़े ही सुन्दर ढंग से किया है। आपने मुहाविरों का प्रयोग अत्यन्त रोचक ढंग से किया है। आपकी फड़कती हुई भाषा का नमूना देखिये-

"और लीजिये, दूसरे मित्र विश्वनाथ हैं। बाल बच्चों वाले आदमी हैं, और रात दिन इन्हीं की चिन्ता में रहते हैं। जब कभी मिलने आते हैं; जब मैं काम से निपट चुकता हूँ। पर इस कदर थका हुआ होता हूँ कि जी यही चाहता है कि एक घंटे आराम कुरसी पर चुपचाप पड़ा रहूं।"

प्रश्नोत्तर ६ आँखों से स्नेह बरस रहा था नेत्रों को देखकर यह प्रतीत होता था कि उनके हृदय में अत्यन्त प्रेम है।

यह मौखिक 'विजिटिंग कार्ड' हृदयहारी टोन में स्वयं पढ़ सुनाया अपना परिचय पत्र जो लिखित नहीं था जबानी ही हृदय को हर लेने वाले स्वर में बिना पूछे ही पढ़कर सुना दिया।

व्रजभाषा की कोमल ....संयोग था।

व्रजभाषा में लिखे हुये पदों में स्वतः ही एक मिठास होती है फिर कविरत्न सत्यनारायण के गले का स्वर भी अत्यन्त मीठा था। दोनों वस्तुओं का संयोग यहाँ पर ऐसा प्रतीत होता था जैसे सोने में सुगन्ध हो अथवा सोने और मणि को मिलाकर किसी सुन्दर जेवर का निर्माण किया गया हो।गुदड़ी में छिपे लाल थे--अस्पष्ट होते हुये भी महत्व पूर्ण थे। जिस प्रकार किसी मूल्यवान मोती को गुदड़ी में छिपा कर रक्खा गया हो उसी प्रकार सत्यनारायण जी की साधारण वेश भूषा में महान पाण्डित्य छिपा हुआ था।

(अ) यह तो दलबन्दी..............चमक गया।

(ब) नन्दन कानन का यह पारिजात..........कोकिल उड़ गया।

प्रश्नोत्तर ७ (अ) यह गद्यांश साहित्याचार्य स्वर्गीय पं० पद्मसिंह शर्मा द्वारा लिखित 'श्री सत्यनारायण कविरत्न' नामक पाठ का

है। वर्तमान साहित्यकारों और लेखकों के सम्बन्ध में कहते हैं कि वर्तमान काल मे गुटबन्दी और विज्ञापन की ज्यादा पूछ है। सफलता उन्हीं को मिलती है जो अधिक से अधिक बनावटी प्रचार कर सकता है। जिस व्यक्ति को उपरोक्त साधनों की सहायता मिल जाती है वह प्रसिद्धि रूपी आकाश में गुब्बारे की भांति चमक जाता है।

८ दो दो बातें

(पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय, 'हरिऔध')

सारांश किसी समय आर्य उन्नति की शिखर पर थे। संसार में उनका नाम था। वे संसार को ज्ञान देते थे। वे वीर थे और बात के धनी थे। बड़े बड़े राजा उनके पराक्रम से काँपते थे। किन्तु आज वे अवनति के गढ़े में गिरे हुए हैं।

आज हमारे उपदेशक अथवा महात्मा पथ भ्रष्ट हो गये हैं। समाज में भ्रष्टाचार और दुराचार का बोल बाला है। पूँजीपतियों का पेट बढ़ रहा है। और लुटेरे देश की लूट में लगे हुए हैं। बैर फूट से समाज का नाश हो रहा है किन्तु हम भी अज्ञान में पड़े हुए हैं। तथा बुराइयों के भक्त बन गये हैं। हम बातें लम्बी चौड़ी बनाते हैं किन्तु काम के नाम पर कुछ भी नहीं करते हैं। हिन्दू जाति छूआ छूत में तथा भेदभाव में बुरी तरह फँसी हुई है जिससे प्रत्येक समझदार व्यक्ति दुःखी है। हम सबका कर्तव्य है कि हम अपनी बुराइयों पर ध्यान देकर उन्हें दूर करने का पूरा पूरा प्रयत्न करें।

पृष्ठ ४१ शब्दार्थ- जोहते थे=देखते थे। धाक=प्रतिष्ठा; रौब। रूकठे=सूखे हुए। आन बान=प्रतिष्ठा; मर्यादा। बाना=द्वेष। अठ-कपाली=बहुत बड़े विद्वान। तेवर=मुख मुद्रा।

बड़े बड़े अठकपाली............ले जा रही है।

श्री 'हरिऔध जी' भारत की प्राचीन दशा का वर्णन करते हुए कहते हैं।

कोई समय था जब बड़े बड़े विदेशी विद्वान हमारी योग्यता के सामने बिलकुल ही मूर्ख सिद्ध हो जाते थे। जब हम किसी पर क्रोध

करते थे तब बड़े बड़े प्रतापी राजाओं का भी अभिमान नष्ट हो जाता था और उन्हें मैदान छोड़कर भागना पड़ता था। जो लोग संसार में अपना बड़ा रौब और प्रताप रखते थे उनका पौरुष हमारे सामने आते ही नष्ट हो जाता था और उन्हें सफलता की तनिक भी आशा नहीं रह जाती थी। किन्तु आज हमारी पहली जैसी दशा नहीं रही है अतः हम अपने पहले गुणों का वर्णन करने में भी लज्जित होते हैं। आज हमारी इतनी हीन दशा हो गई है कि हमे देखकर कोई यह नहीं कह सकता कि ये बलवान विद्वान और धनी आर्यों की सन्तान है। हममें से ऐसे बहुत से लोग हैं जो इस बात का अनुभव नहीं करते हैं कि हमारी प्राचीन दशा क्या थी और अब क्या हो गई है। हमारी दुर्दशा का कारण न तो किसी का जादू टोना है और न हमारा दुर्भाग्य। हम जो आज बुरी दशा में पड़े हुए हैं इसका एक मात्र कारण हमारे बुरे कर्म हैं जिनके कारण हमारी अत्यधिक अवनति हो रही है।

पृष्ठ ४२ शब्दार्थ मूस कर=लूट कर। लोहू=रक्त; खून। सटे पेट वाले=दुर्बल। रवादार=इच्छुक। अनबन=वैर।

व्याख्या पृष्ठ ४२- आज हमारे घरों में ······नहीं रंगती।

श्री 'हरिऔध जी' भारत की वर्तमान दुःखों का वर्णन करते हुए कहते हैं :

आज हमारे यहाँ इतनी अधिक फूट फैली हुई है कि प्रत्येक करने पर भी वह दूर नहीं होती है। आपसी वैर के कारण हम एक दूसरे की बुराई में ही लगे हुए हैं। हममें आपस मे बहुत अधिक मनमुटाव है। और हम आपस में लड़ने झगड़ने में ही आनन्द का अनुभव कर रहे हैं। हम योजनायें तो बड़ी बड़ी बनाते हैं और बड़े बड़े काम करने के लिये भी कहते हैं किन्तु अपने आलस्य के कारण करते कुछ भी नहीं है। हम देखते हैं कि हमारी बहुत अधिक अवनति हो रही है किन्तु हम फिर भी अपनी उन्नति करने का प्रयत्न नहीं करते हैं। दूसरे लोग हमें हमारी अवनति को बता रहे हैं किन्तु हम सुनकर

भी उन्नति के लिये उद्योग नहीं कर रहे हैं। हमारे हाथ पैरों में शक्ति है किन्तु हम इस शक्ति का उपयोग कर अपनी उन्नति नहीं कर रहे हैं। हममें न तो पहली जैसी बुद्धि रही है और न विचार शक्ति। हमारी सारी आशाएँ नष्ट होगई हैं हमें अपने उद्धार का कोई उपाय नहीं सूझ रहा है। हम चेताने परभी होश मे नहीं आरहे हैं।

पृष्ठ ४२ शब्दार्थ आवरू प्रतिष्ठा, सम्मान। पतपानी = आदर खटराग = वैरभाव। तरव = हिम्मत। भूल भुलैयाँ = भेदभाव। मटियामेट = सत्यानाश।

व्याख्यान हम जाति-हित की ताने........आताही नहीं।

श्रीहरीऔधजी हमारी वर्तमान मनोवृत्ति का वर्णन करते हुऐ कहते हैं किहम जाति की भलाई के वड़े वड़े उपदेश देनेके लिये प्लेट फार्मपर आते हैं किन्तु हम दूसरो को उलाहना देने में ही अपनी योग्यता का परिचय देकर दूसरों के दिलो को दुखा रहे हैं। हम चाहते हैं कि सारी हिन्दू जाति एक होजाय किन्तु प्रत्येक जाति अपने अपने अधिकार अलग अलग मांगने में लगी हुई है। जिससे कि जातियों की आपसी एकता नष्ट होगई है। हम देश की उन्नति करना चाहते हैं किन्तु हम स्वयं बुराइयों में फसे हुए हैं। हम जाति के दोषों को दूर करना चाहते हैं किन्तु स्वयं अनेक बुराइयों के शिकार हुए हैं। हमारे विचार घृणित और नीच हैं हम जाति में नया जोश भरना चाहते हैं किन्तु इसके लिये हम बलिदान होने को तैयार नहीं हैं।

प्रश्नोत्तर १ जब हम उन्नति के शिखर पर थे तब सारे संसार में हमारा नाम था। वड़े-वड़े लोग हमारी सहायता की आशा रखते थे। सारे संसार में हमारे नाम की धूम थी। हम हवाई जहाजों में उड़ते थे, समुद्री यात्रा करते थे और जंगलों को ढूँढ डालते थे। पहाड़ों को काटकर हमने सड़कें वना दी थीं।

प्रश्नोत्तर २ हमारे नेता चरित्र हीन हो गये हैं। हमारे साधु महात्मा यद्यपि दुराचारी वन गये हैं। हमारे वीर अपनी वीरता को आपस में लड़ा कर ही दिखा रहे हैं। हमारे पूँजीपति गरीबों को

लूट कर अपना पेट बढ़ा रहे हैं। हमारा स्वावलम्बन, मातृ प्रेम इत्यादि उत्तम गुण नष्ट हो गये हैं। इन्हीं सब कारणों से हमारा (आर्यों का) पतन हुआ है।

प्रश्नोत्तर ३ "अयोध्यासिंह उपाध्याय" श्री हरि औध जी का जन्म सं० १९२२ में आजमगढ़ के जिलान्तर्गत निजामाबाद में हुआ था। सं० १९३६ में आपने मिडिल परीक्षा पास कर अंगरेजी पढ़ना आरम्भ किया किन्तु अस्वस्था के कारण इसे छोड़ कर आप घर पर ही हिन्दी फारसी का अभ्यास करते रहे। बीस वर्ष की अवस्था में आप मिडिल स्कूल में अध्यापक हुए और फिर सदर कानून गो हो गये। सं० १९६६ में इस पद से अवकाश ग्रहण कर हिन्दू विश्वविद्यालय में अवैतनिक अध्यापक हो गये। सन् १९४७ में आपका स्वर्गवास हो गया।

सर्वतोमुखी प्रतिभा सम्पन्न कवि सम्राट श्री हरिऔध जी ने गद्य तथा पद्य दोनों में ही उत्तम रचना की है। ब्रजभाषा तथा खड़ी बोली दोनों पर ही आपका समनाधिकार है। ब्रज भाषा का उनका "रस कलश" उत्तम कोटि का रीति ग्रन्थ है जिसमे रस तथा नायक नायिकाओ का वर्णन बड़ी उत्तमता से किया है। खड़ी बोली में आपके अनेक ग्रन्थ हैं। जिनमें प्रिय प्रवास सर्व श्रेष्ठ है।

आप सरल से सरल तथा कठिन से कठिन भाषा लिख सकते हैं। जहाँ आपने दिवस का अवसान समीप था। जैसी सरल भाषा लिखी है वहाँ रूपोद्यान प्रफुल्ला प्राय: कलिका इत्यादि संस्कृत मय भाषा भी लिखी हैं जिसमे हिन्दी केवल "की" "सी" और थी। मे ही सीमित है कहीं कहीं आपकी खड़ी बोली मे ब्रज भाषा के शब्द भी आ गये हैं। समासो की अधिकता और दूरान्वय के कारण भी आपकी भाषा कठिन और दुर्बोध हो गई है। आपके "चुभते चौपदे" चोखे चौपदे और बोल चाल। सरल भाषा मे है जिनमे मुहावरों का अधिकता से प्रयोग किया गया है।

श्री "हरि औध" जी का गद्य लेखकों में प्रमुख स्थान हैं आपका

गद्य बहुत ही परिष्कृत और परिमार्जित होती है। मुहावरों के सुन्दर प्रयोग से आपकी भाषा में चार चन्द लग जाते हैं। सजीवता और ओजस्विता आपकी भाषा के प्रधान गुण है आपकी भाषा शुद्ध खड़ी बोली होती है। उर्दू और फारसी के विद्वान हो कर भी आप अपनी भाषा को इन भाषाओं के शब्दों से सर्वथा मुक्त रखते है। आपके गद्य के वाक्य छोटे छोटे है। शब्द चयन और वाक्य गठन बड़ा सुन्दर है। समासों का प्रायः अभाव है। भाषा सीधी सादी है किन्तु भाव गाम्भीर्य उसका प्रधान गुण है।

प्रश्नोत्तर ५ मुहावरे और लोकोक्तियो साहित्य की अक्षय निधियाँ है। इनसे भाषा की श्री सम्पन्नता मे चार चन्द लग जाते हैं। भाषा सजीव और ओजस्विनी हो जाती है। जो प्रभाव दस पक्तियाँ नहीं डाल सकती वही प्रभाव केवल एक चुभता हुआ मुहावरा या लोकोक्तियाँ डाल देती हैं। उदाहरण के लिये दुनिया में फैली हुई अपनी कीर्ति का वर्णन करने के लिये यदि हम दस पक्तियाँ लिख डालें तो भी उनका इतना प्रभाव नहीं पड़ेगा जितना 'दुनियां में हमारे नाम लेवा थे' इस छोटे से मुहावरे से पड़ जाता है।

हर काल वचन और लिंग में लोकोक्ति का रुख एकसा ही रहता है। उदाहरण के लिये 'तेते पांव पसारिये जेती लांबी सौर' इसके लोकोक्ति का प्रयोग स्त्री पुरुषों दोनों की ही आय के अनुसार व्यय करने का उपदेश दे सकते हैं। किन्तु मुहावरों का प्रयोग काल वचन और लिंग के अनुसार बदल जाता है जैसे- 'वह आंख दिखाता है; वह आंख दिखाती है' 'उसने आंख दिखाई' इसी प्रकार अन्य भी मुहावरे और लोकोक्ति मे अन्तर हो जाता है।

प्रश्नोत्तर ६ उड़ते अकर्मक क्रिया, कर्तृ वाच्य भूतकाल, सामान्य भूत, सामान्यावस्था, पुरुष लिंग वचन, कारक कर्ता के समान। बदलते, सकर्मक क्रिया, कर्तृ वाच्य, क्रियार्मक संज्ञा, इसका कर्म 'तेवर' है।

उत्तर गई- अकर्मक क्रिया, भूत काल, सामान्य भूत, सामान्या

वस्था, पुरुष लिंग, वचन कर्ता के अनुसार इसका कर्ता 'आम्रकुञ्ज' है।

उठाना -क्रियार्थक संज्ञा, सकर्मक क्रिया, कर्तृवाच्य इसका कर्म है जानि को।

बिना सम्बन्ध बोधक अव्यय 'इसके' से सम्बन्ध बताता है।

८ बीज की बात

(रायकृष्णदास)

सारांश किसान ने किसी अपदार्थ बीज को उखाड़कर गढ़े में डाल दिया। उस बीज को अपने नाश पर बड़ा क्रोध आया और उसमें प्रतिहिंसा के भाव जाग्रत हो गये। वह बदला लेने के लिये अवसर ढूँढ़ने लगा। एक दिन वह छोटा सा बीज एक मेड़ के छेद में जाकर छिप गया।

वर्षा के आरम्भ में अन्य पौधों के साथ वह भी पल्लवित होने लगा। किसान स्वयं रूह (खुदरो) पौधों को उखाड़ कर फेंकने लगा। किन्तु मेंड़ पर होने के कारण यह बीज फलता फूलता रहा।

एक दिन बैल ने उस बीज को खाना चाहा किन्तु उसमें इतनी तेज़ गंध थी कि वह उसे न खा सका। अतः उसने जलकर उसे कुचल तो दिया ही। इससे लाभ यह हुआ कि उसकी आन्तरिक शक्ति बढ़ गई जिससे वह और भी जोरों से बढ़ने लगा।

जाड़े में ऐसे जोर का पाला पड़ा कि सारी खेती नष्ट होगई। किसान बहुत दुःखी हो गये। बीज को भी किसानों की इस दशा से दुःख हुआ। वह पर पीड़ा पर मनुष्यों को उपदेश भी देना चाहता था किन्तु भिन्न भाषा होने के कारण ऐसा न कर सका।

बसंत ऋतु के आने पर वह कासनी फूलों से लद गया। उसकी सुगंध चारों ओर फैलने लगी। इसके फूल बीजों में बदल गये। बीज ने अपने अनेक बीजों को चारों ओर फैल जाना चाहा जिससे वे अगली बार अनेक रूप में किसान की खेती को हानि पहुँचा कर उससे बदला ले सकें।

शब्दार्थ पृष्ठ ५४ - अवसर की प्रतिक्षा करने लगा=उगने के लिये उचित समय देखने लगा। स्वयं रुह=अपने आप उगने वाले। अस्तित्व=सत्ता होना। देन पोत के भार से लदे हुए=जिन्हे बहुत अधिक कर देना था। पेट काट कर=आवश्यक खर्चों में कमी कर। अपने रक्त चूसने ......तर्पण करें=किसानो की सारी कमाई ले लेने वाले जमींदारों को उनका कर उसी तरह चुकावे जिस तरह पितरों का जल दिया जाता है। यहाँ भू-स्वामी और पितर तथा रक्त और जल में रूपकालङ्कार है। वैवाहिक अग्नि में हवन हो गया=जिस तरह अग्नि में सामग्री जल जाती है उसी तरह बिलकुल नष्ट हो गया। खेतिहर=किसान। आमोद में ......मग्न थे=प्रसन्न थे। चरे रहित तृन बलि पसु जैसे=यह अयोध्या काण्ड की चौपाई का एक अंश है। कवि ने कैकेयी की ओर संकेत करके कहा है कि जिस तरह बलि का पशु हरी हरी घास बड़े प्रेम से खाता है और थोड़ी देर बाद पड़ने वाली छुरी की चिन्ता नहीं करता। इसी प्रकार कैकेयी भी मंथरा की बातों से खूब प्रसन्न हो रही थी। और आने वाली विपत्ति से निश्चिन्त थी।

व्याख्या गरमी आई" ......खुशी मना लेते है।

यह गद्यांश लेखक रायकृष्ण द्वारा लिखित बीज की बात" नामक पाठ से अवतरित है। लेखक बीज से किसान की हालत कहलवा रहा है। बीज कहता है कि ऋण, व्याज तथा लगान के भार से व्यथित व्यक्ति कृषक अपना अनाज बेचकर विवाह के आनन्द में मस्त थे। किन्तु उन्हें जमींदार के अत्याचारों का ध्यान नहीं था मानों वैवाहिक आनन्द ही उनके जीवन का सबसे बड़ा हर्षोन्मत्त, मधुर अवसर था। वह फिर इसको कैसे खोते। वह तो मस्त थे। "उन्हे भूमिपाल के वज्र का अभी ध्यान न था।

जिस प्रकार इन्द्र का वज्र (बिजली) गिरा कर सर्वनाश कर देता है उसी प्रकार सर्वनाश करने वाले जमींदार के अत्याचार हो रहे थे, और माल गुजारी वसूल करने के लिये इसी प्रकार अनेक

कष्ट दिये जा रहे थे जिस प्रकार मृत्यु के समय यमराज कष्ट देता है। किन्तु किसान विवाह के आनन्द में मस्त होने कारण इन सबसे निश्चिन्त थे। लेखक कहता है कि किसान इनकी चिन्ता कहाँ तक करें जबकि उन्हे सदा इस प्रकार के कष्ट सहने पड़ते हैं। विवाह के दिन अच्छे आ जाते हैं जिनमें वे अपने कष्टों को कुछ दिन के लिये भूल जाते हैं।

शब्दार्थ अमोद मे उलझे हुए थे=पूरा आनन्द मना रहे थे। दैवी एवं मानुषी के आपत्तियों के मेघ मँडरा रहे थे=अतिवृष्टि या अनावृष्टि के दैवी कोप तथा जमीदार के अत्याचार बड़ी तेजी से होरहे थे। यह लीला=ये अत्याचार। प्रति हिंसा वृत्ति से प्रसन्न होरहा था=किसान घास फूंस का नाश करता है तो जमीदार इनका भी नाश करते हैं इस काम को देख कर प्रसन्न हो रहा था। कृतान्त=यमराज। सारा संसार एक जलता हुआ आँवा हो उठा गर्मी इसी तरह फैल गई जिस तरह जलते हुए आँवे की गर्मी फैलती है। सींकिया जवान=सींक सा पतला। जलती हुई......... निकल पड़ा=जिस प्रकार कोई मनुष्य घोड़ी पर सवार होकर अपना काम खोजने जावे उसी प्रकार मैं भी गर्म हवा मे उड़ कर अपने उगने के लिये स्थान खोजने चल पड़ा।

पृष्ठ ४६ शब्दार्थ -प्रतिहिंसा का बीज मन्त्र- केवल किसनों की हिंसा (बदले) की ही भावना लिये हुए।

शब्दार्थ -अपने इच्छाओ को एक तीसरे के पास बन्धक रख कर=अपनी इच्छानुसार कार्य करने में असमर्थ होकर तीसरे की इच्छानुसार काम कर। विरोध के देहरे में=विरोध पैदा करने वाले स्थान में। जड़ उखाड़ने के लिये=बिलकुल नष्ट करने के लिये। जड़ जमानी थी=स्थिर होकर रहना था। गर्म ओठों से मुझे चूमा=तेज गर्मी को अनुभव । खून उबलने लगा=क्रोध बहुत बढ़ गया।

व्याख्या एक दिन आकाश में······करना आरम्भ किया।

बीज जम जाने के बाद आई हुई वर्षा का वर्णन करता है:

एक दिन आकाश में बरसने वाले काले काले बादल छा गये और बूंदे पड़ने लगीं पृथ्वी मे से एक सौंधी सौंधी गंध निकली मानो पृथ्वी ने सांस ली हो। जिस प्रकार बाजीगरनी अपने एक ही पिटारे में से अनेक वस्तुएँ निकाल कर जादू का खेल दिखाती हैं उसी प्रकार हम बीज भी एक बीज से अनेक बीज होने लगे। थोड़े ही समय में हमारे अंकुर निकल आये और अंकुर रहित पृथ्वी को बड़ी बड़ी और हरी हरी बालों से ढकना आरम्भ कर दिया।

पृष्ठ ४७ शब्दार्थ अन्तरिक्ष=आकाश। पयोदान करने लगा =जल देने लगा। जलती हुई आँखे ठंडी हुई=गर्मी के कारण व्याकुल आँखें हरियाली से प्रसन्न हुई। अंगारे की तरह=बहुत हानि कारक। परितत्र अधिकारों की वेडी=अधिकारों को छीनने वाली। उदासीनता के बल पर विजय पाने की आशा करता है=सम्बन्ध छोड़ कर लाभ उठाना चाहता है। मनुष्य की संहारैषणा पर पानी फेर दूं=मनुष्य की नाश करने की इच्छा को नष्ट कर दूं।

व्याख्या किन्तु मनुष्य के ······नहीं कर सकते।

बीज जम जाने के बाद बैल के आने से सम्बन्धित पशुओं के अधिकारों का वर्णन करता है मनुष्य के भूमि के अधिकारों को पशु नहीं मानते। वे यह बात स्वीकार करने को तैयार नहीं कि सारी पृथ्वी पर मनुष्यों का ही अधिकार है उनके मत के अनुसार पृथ्वी पर उनका भी अधिकार है। राजाओं के शासन करने के नियम पृथ्वी को कई राष्ट्रों या देशों में बांटना और अलग अलग अधिकारों में रखना, तथा पृथ्वी को अलग अलग खेतों में बाँटना और जोतना इत्यादि का बटवारा पशुओं को स्वीकार नहीं। मनुष्य को यह अधिकार है कि वह उन्हे रात दिन जोतता रहे किन्तु वे पृथ्वी पर पैदा हुए हैं और पृथ्वी पर जन्म लेने के कारण सारी पृथ्वी पर उनका अधिकार है वे अपने इस अधिकार को छोड़ने के लिये तैयार नहीं।

राज महलों के शस्त्र धारी पहरेदार मनुष्यों को तो महलों में आने से रोक सकते हैं किन्तु अपना अधिकार समझ कर सहसा आने वाले कीट पतंगों को नहीं रोक सकते।

शब्दार्थ कवलित कर जाना चाहा=खा जाना चाहा। आत्म रक्षा की कामना ने=अपने को बचाने की इच्छा ने। प्रतिकार =उपाय। उग्र=तेज। परम्परागत प्रतिक्रिया उस क्षण मेरे काम आई=आक्रमण को रोकने के लिये वंश परम्परा से प्राप्त किये हुये उपाय से ही मैं बैलों के खा जाने से बच सका।

पृष्ठ ४८ शब्दार्थ शिशु शरीर=छोटा रूप। दलित मानवता=अछूत जाति। बैलों के कुचलने पर जो पीड़ा मुझे हुई वही पीड़ा सवर्णों द्वारा सताई गई दलित जाति को होती है। मेरी बहिर्मुख शक्ति अन्तर्मुख हो उठी=अब तक तो मैं बाहर से ही बढ़ रहा था किन्तु अब मेरी अन्दर से बढ़ने की शक्ति भी बढ़ गई मेरी नींव बिल्कुल अचल कर ली=मेरी जड़ों को पुष्ट कर दिया। हेमन्त के धुंधले प्रभात में मैं गहगहा कर पनप उठा=हेमन्त ऋतु में जब कुहरा पड़ रहा था तब मेरा आकार बहुत बढ़ गया और मुझ में खूब फूल आ लगे। बाढ़ ले रही थी=बढ़ रही थी। राम भरोसे······हरियाँय=भगवान् के भरोसे रहने वाले विपत्ति में भी प्रसन्न रहते हैं। अपने प्रयोग के लिये सन्नद्ध हो रहा था =किसानों से बदला लेने के लिये तैयार हो रहा था।

शिशिर ने अपना राज्य फैलाया=धीरे-धीरे जाड़ा बढ़ गया। किये कराये पर तुषार पात हो गया=किसानों का सारा परिश्रम नष्ट हो गया अर्थात् उनकी सारी फसल मारी गई। अपनी मौज मे कलिया रहा था=कलियों से मेरी शोभा बढ़ रही थी।

जिसके प्रत्येक स्वर में······सुनाई पड़ रही थी=मैंने अपने बढ़ने के लिये और ऋतुओं में जो कष्ट सहे उनका अब अन्त हो गया था और अब मैं अच्छी तरह बढ़ गया था।

पृष्ठ ४९ शब्दार्थ अपने हृदय की वेदना कह सुनाता=

किसानों के दुख मे मुझे जो दुख हुआ उसे प्रगट कर देता।

अन्य पार्थिवों साथ.....दिया चाहता था= मनुष्यों को पृथ्वी से उत्पन्न दूसरी वस्तुओं के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिये इस पर मैं एक उपदेश देना चाहता था।

चैती बयार=चैत के महीने में चलने वाली। पुष्प कोष मे =फूलों में बीजों के एकत्रित रहने के स्थान में 'एकोहं बहुस्याम =एक से मैं अनेक हो जाऊँ। यह वेद का वाक्य है जिसमें ईश्वर कहा था कि मैं एक से अनेक हो जाऊँ। उद्यमःसाहसं..... देवस्सहाय कृत्। उद्योग, साहस, धैर्य बुद्धि शक्ति और पराक्रम ये छै बातें जिस मनुष्य में होती हैं देव उसी की ही सहायता करता है।

इनोत्तर १ श्री राय कृष्ण दास सरस्वती के उन वरद पुत्रों मे से हैं जिनका गद्य पद्य दोनों पर समानाधिकार है। आपका जन्म सं० १६४६ वि० में काशी के प्रतिष्ठित अग्रवाल वंश में हुआ था। आप भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र के कुटुम्बी हैं। ६ वर्ष की अल्पायु में ही आप कविता करने लगे थे। १६ वर्ष की अवस्था मे आपने दुलारे रामचन्द्र नाम से एक उपन्यास लिखा। आपके कविता गुरु श्री गुप्त जी हैं। आपकी 'साधना' रवीन्द्रनाथ की 'गीतांजलि' के आधार पर लिखी गई है। आप कला के बड़े प्रेमी हैं। आपने अपना सारा कला-संग्रह नागरी प्रचारिणी सभा, काशी को भेंट कर दिया है। आपने कविता, गद्य, काव्य और कहानियाँ लिखकर साहित्य के अनेक अङ्गों की दृष्टि मे योग दिया है।

परोक्ष सत्ता की भावात्मक अनुभूति लेकर आपने साहित्य क्षेत्र में प्रवेश किया। भावात्मक होने के कारण आपको कल्पना का विशेष आश्रय लेना पड़ा है। भावों के अनुकूल ही आपकी भाषा भी अत्यन्त संयत है। नित्य की चलती भाषा का आपने ऐसा सुन्दर प्रयोग किया है कि भावों की स्पष्टता पूर्ण रूपेण हो गई है। तत्सम शब्दों के प्रयोगों के साथ साथ कलपते, अचरज इत्यादि तद्भव शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। कहीं कहीं उर्दू शब्द

भी आ गये हैं। भाषा को बोध गम्य बनाने के लिये 'ढकोसला' 'कुण्डी' इत्यादि शब्दों का भी समावेश किया है।

गद्य काव्य के अतिरिक्त आपने कहानियाँ आत्म कहानियाँ और संवाद भी लिखे हैं। कहानियों में आपने अपने पात्रों के हृदय का विश्लेषण बड़ी सुन्दरता से किया है। आपकी कहानियों की भाषा सरल है। वाक्य छोटे छोटे हैं।

आपकी आत्म कहानियाँ बड़ी रोचक, शिक्षाप्रद और सोद्देश्य है। आपकी 'बीज की बात' इसी प्रकार की आत्म कहानी है। इसमें किसानों की दरिद्रता, जमीदारों के अत्याचार, कलह के दोष और स्वावलम्बन के गुणों पर बड़ी सुन्दरता से प्रकाश डाला गया है। वाक्य छोटे होने पर भी बड़े प्रभावशाली है। देखिये किसानों की हीन दशा का वर्णन किस सुन्दर ढंग से किया है: "खलिहान समाप्त हुआ गरमी आई। ऋण ब्याज और देन पोत के भार से लदे हुए कृषक अपने पेट काट कर बनियों के हाथ अनाज बेचने लगे और उसके मोल से वे अपने रक्त चूसने वाले भू स्वामि पितरों को तर्पण करें कि लग्न के दिन आपहुंचे और उस धन का बहुत बड़ा अंश वैवाहिक अग्नि में हवन हो गया।" आपके संवाद बहुत छोटे किन्तु प्रामाणिकता एवं नाटकियता लिये हुए है। मुहावरों के सुन्दर प्रयोगो ने उनमे चार चाँद लगा दिये हैं।

संक्षेप में राय कृष्ण जी वह चतुर लेखक हैं जिन्होंने हिन्दी साहित्य में गद्य काव्य की शैली को पुस्ट किया और मानव हृदय की अनूभूतियों का चित्रण कर कला को अमरता प्रदान की है।

प्रश्नोत्तर २ आत्म कहानी के लिये पाठ के सारांश से सहायता लीजिए। इस पाठ से मिलने वाली शिक्षाएँ: (१) किसी को सताना नहीं चाहिए (२) बुराई का फल बुरा होता है (३) आपस की फूट से तीसरा लाभ उठा लेता है। (४) विपत्तियों के आने पर भी जो काम करता चला जाता है उसे सफलता अवश्य मिलती है।

(५) कुचले जाने पर भी जो धैर्य नहीं छोड़ता है वह अवश्य सफल होता है। (६) हमें दीन दुःखियों के साथ सहानुभूति रखनी चाहिये (७) भाग्य उन्हीं का सहायक होता है जिनमें उद्यम, साहस, धैर्य बुद्धि, शक्ति, पराक्रम ये ६ होते हैं।

प्रश्नोत्तर ३ (अ) लेखक का आशय (१) किसानों पर किये गये जमीदारी अत्याचारों का दिखाना (२) हिन्दू मुसलमानों के भेद भाव से देश की हानि (३) किसानों के धन का दुरुपयोग (४) जो अपने जन्म सिद्ध अधिकार को खो बैठता है वह पशु से भी अधिक नीच है। विपत्ति के आने पर भी साहस नहीं छोड़ना चाहिये।

प्रश्नोत्तर ३ (ब) जमीदार जौंक बनकर किसानों को चूस लेते हैं अतः जमीदारी उन्मूलन आवश्यक है। किसान अपने धन का अधिकांश विवाह इत्यादि में खर्च कर भूखों मरते हैं अतः दहेज को कानून द्वारा बन्द कर देना चाहिये। छोटे छोटे खेतों के कारण पैदावार ठीक नहीं होती है अतः पैदावार बढ़ाने के लिये सहयोग समितियों का निर्माण आवश्यक है। प्रवृत्ति के कोप के कारण किसानों के किये कराये पर पानी फिर जाता है अतः इन प्रवृत्ति के कोपों के रोकने के लिये कोई योजना बनाई जानी चहिये।

प्रश्नोत्तर ४ देन पोत महाजन को रुपया देना और जमीदार को (कर)। अच्छी पैदावार न होने के कारण किसानों को महाजनों से रुपया लेना पड़ता है और वे जमीदार का पोता मालगुजारी नहीं दे पाते हैं।

भानुमती का पिटारा भानुमती पहली वाजीगरनी थी अतः उसी के नाम पर वाजीगरों का थैला भानुमती का पिटारा कहलाता है।

इन्द्रजाल- जादू इन्द्रजाल के द्वारा ऐन्द्रजालिक दर्शकों को विस्मय में डाल देता है।

जम की जमात जिस प्रकार जम कष्ट दे देकर मारता है

इसी प्रकार मालगुजारी भी सता सता कर वसूल की जाती है।

प्रश्नोत्तर ५ (क) तथा (ख) गद्यांशों की व्याख्या देखिये।

प्रश्नोत्तर ६- झाड़ झंखाड़ झाड़ और झंखाड़-द्वन्द्व।

देन पोत देन और पोत द्वन्द्व।

कृतान्त क्रिया है अन्त जिसने-बहुव्रीहि।

कुन्तल राशि-कुन्तलों की राशि-सम्बन्ध तत्पुरुष।

जन्म सिद्ध जन्म से सिद्ध-करणतत्पुरुष।

असंख्य न संख्य-नञ् तत्पुरुष।

तहसनहस- तहस और नहस--द्वन्द्व।

प्रश्नोत्तर ७. ऋण, ब्याज और देन-पोत के भार से लदे हुए कृषक अपने पेट काट कर बनियों के हाथ अनाज बेचने लगे प्रधान उपवाक्य

(२) उसके मोल में से वे अपने रक्त चूसने वाले भू स्वामि पितरों का तर्पण करें समान स्वतन्त्र उपवाक्य नं० (१) का

(३) लगन के दिन आ पहुंचे क्रिया विशेषण उपवाक्य को, क्रिया की बिशेषता बताता है नं० (२) में

(४) और उस धन का बहुत बड़ा अंश वैवाहिक अग्नि में स्वाहा हो गया। समान स्वतन्त्र उपवाक्य नं० (४) का

सम्पूर्ण वाक्य संयुक्त

प्रश्नोत्तर ८ झुकाया-संयुक्त क्रिया। फुफकारना नाम धातु। गाने लगा-संयुक्त क्रिया। तितर बितर हो जाना-संयुक्त क्रिया। कलिपाना नाम धातु। हथियाना नाम धातु।

उखड़वाना प्रेरणार्थक। उबलने लगा संयुक्त क्रिया।

१०· तुलसीदास का महत्व

(आचार्य पं० रामचन्द्र शुक्ल)

सारांश चौदहवीं शताब्दी हिन्दी साहित्य के इतिहास में परिवर्तन का काल थी। जबकि कवि वीर रस की कविता करना छोड़कर भक्ति और प्रेम मार्ग की ओर अग्रसर हुये। स्वामी रामानन्द और वल्लभाचार्य ने भक्ति का नया मार्ग दिखाया और कबीर, सूर आदि उसके पथिक हुये। कुतबन और जायसी आदि मुसलमान कवियों ने भी प्रेम पथ की मनोहरता से लोगों को आकर्षित किया।

भक्ति के भी दो समुदाय थे। कुछ कवियों ने प्राचीन भागवत से ही प्रेरणा ली और दूसरे वर्ग वालों ने भक्ति का व्यापक रूप न लेकर केवल उसके अंश को ही ग्रहण किया। इन्होंने ईश्वर के निर्गुण रूप की उपासना का उपदेश किया-जबकि प्रथम वर्ग वालों ने सगुण रूप को ही अपनाया।

प्रथम वर्ग में वेदशास्त्रों का ज्ञान रखने वाले व्यक्ति थे उन्होंने भगवान को लोकरंजक और धर्म रक्षक के स्वरूप में देखा। सूरदास ने भगवान का हँसता खेलता रूप दिखाया और तुलसीदास ने विश्वव्यापी मंगल रूप दिखाकर हिन्दू जाति मे शक्ति तथा पर्याप्त का संचार किया।

हिन्दू जाति ने जिस भक्ति का सहारा लिया उसी के द्वारा उसका कल्याण भी हुआ भक्ति को प्रकट करने के लिये हिन्दी कविता को माध्यम चुना। हिन्दी कविता की इस काल में अपूर्व समृद्धि हुई। राम और कृष्ण का रूप स्पष्ट करने मे उसके अंग अंग का विकास हुआ।

हिन्दू जाति को नवीन जीवन प्रदान करने वाली तुलसीदास की वह मंजुवाणी कुटी से लेकर राज-महल तक पहुंच गई। रामचरित की स्वच्छ धारा ने भगवान् के स्वरूप के दर्शन प्रतिबिम्ब

में कराये। तुलसीदास के परिश्रम का ही फल था कि आज प्रत्येक हिन्दू अपने को हर समय अकेला और निस्सहाय नहीं समझता। गोस्वामी जी की कृपा से ही आज हिन्दुओं का सामाजिक जीवन इतना सुलझा हुआ है अन्यथा समय के प्रवाह में बहकर अब तक न जाने वह किस गर्त में पहुँच गया होता।

पृष्ठ ५१ शब्दार्थ चारणों=बन्दीगण, भाट लोग। वीरगाथा काल=हिन्दी साहित्य का वह समय जिसमें वीर रस के काव्यों की रचना हुई। प्रवाह=बहाव, धारा। राजकीय क्षेत्र=राज्य की परिधि। प्रतिष्ठित=स्थापित। सम्यक=सामान्य। संचार=प्रसार कृपादृष्टिलाय=कृपा प्राप्ति। नैराश्य=निराशा से पूर्ण। प्रभूत संचय=एकत्रित। वाग्धारा=वाणी-प्रवाह।

चारणों का..............................दिखाई देता था।

व्या०—हिन्दू संवत् की चौदहवीं शताब्दी हिन्दी साहित्य का वह समय थी जब वीर रस की कविताओं की रचना छोड़कर कवियों ने दूसरा मार्ग अपनाया। उस समय देश की राजनीति में एक आँधी आई मुसलमान भारतीय साम्राज्य के अधिकारी हुये जिसके कारण वीरोत्साह के प्रचार के लिये स्थान न रहा। देश के सभी राजा महाराजा पराजित हो चुके थे। अपने पुरुषार्थ और पराक्रम से निराश होकर देश का ध्यान सर्व शक्तिमान् ईश्वर की ओर गया क्यों कि इस निराशा काल का एक मात्र वही सहारा था।

शब्दार्थ वर्ग=श्रेणियां, समुदाय। लोक धर्माश्रित=सांसारिक धर्म से सम्बन्धित। विकास=उन्नति। अनुयायी=अनुसरण करने वाला। विषम स्थिति=अनुपयुक्त समय। सामंजस्य साधन=निरूपणता के प्रयत्न।

भक्तों के भी..............................सन्तुष्ट रहे।

व्या० भक्ति काल के कवि दो भागों में बंट गये। पहले भाग के कवि वे थे जिन्होंने प्राचीन धर्म अर्थात भागवत और पुराणों का आधार लिया और उसके नवीन विकास के पक्षपाती थे। दूसरे समुदाय के

कवि भक्ति के पूर्ण अंश को न अपना सके वे अपने काल की उन्ही समस्याओं को सुलझाने में ही लगे रहे जिनमें उनका जन्म और विकास हुआ।

पृष्ठ ५२ शब्दार्थ -प्राचीन परम्परा=पुराने विचार वाले। वेद शास्त्रज्ञ=वेद और शास्त्रों को जानने वाले। तत्वदर्शी=तत्व ज्ञानी प्रवर्तित=चलाया हुआ। लोक रंजक=संसार को प्रसन्न करने वाला। सुधा रस=अमृत रसायन। मुरझाते हुये हिन्दू जीवन को हरा किया =गिरती हुई हिन्दू जाति को उठाया। नैराश्य जनित खिन्नता= निराशा के कारण उत्पन्न उदासी। प्रफुल्लता=प्रसन्नता। लोक व्यापार व्यापी=संसार में व्याप्त रह कर कार्य करने वाला। मंगलमय= कल्याणकारी। उदुगार=अन्तर के विचार।

प्रथम वर्ग के ....निराश नहीं है।

व्याख्या प्रथम समुदाय के कवियों ने उस मार्ग को अपनाया। जिसका निर्माण वेद शास्त्रों को जानने वाले तत्वज्ञानी ऋषियों ने किया था। उन्होंने भगवान् के उस स्वरूप को अपनाया जो संसार की रक्षा करने वाला और प्रसन्न करने वाला है। उनकी भक्ति में वह निराशा नहीं जो निर्गुण ईश्वर की उपासना का उपदेश करने वाले भक्त कवियों मे थी। इस भक्ति में ऐसी शक्ति छिपी हुई थी जो किसी जाति को अवनति से उन्नति की ओर ले जाने वाली थी। सूरदास और तुलसीदास की भक्ति यही भक्ति थी। सूरदास ने अपने सुन्दर पदों द्वारा जनता को भगवान का हंसता खेलता सुन्दर रूप दिखाया जिससे निराश हिन्दू जाति में कुछ प्रसन्नता विकसित हुई। पीछे तुलसीदास भगवान का विश्वव्यापी कल्याणकारी स्वरूप लेकर आये और जनता में आशा और शक्ति संचारित की। उन्हीं के सद्प्रयत्न का फल है कि आज भी हिन्दू जाति अपने को अनाथ और निराश नहीं समझती।

पृष्ठ ५२ शब्दार्थ- अभिव्यंजना करने वाली=प्रकट करने वाली समृद्धि=उन्नति। कद्रदानी=आदर सम्पन्नता। लोक मानस=

संसार के मस्तिष्क। साक्षातकार=प्रत्यक्ष। व्यंजना=निरूपण। लोक रंजन कारिणी=संसार को प्रसन्न करने वाली। अखिल=सम्पूर्ण। जीवन वृत्ति व्यापिनी कला=वह कला जिसका जीवन के प्रत्येक अङ्ग से सम्बन्ध हो। अभिव्यक्त=प्रदर्शित। स्फुरण=मन में कार्य करने के लिये उत्साह।

घोर नैराश्य .... तुलसी के रूप मे हुआ।

व्या० मुसलमानों द्वारा पराजित और शासित हिन्दू जाति अत्यन्त निराश हो गई थी। अब उनके पास केवल एक ही शक्ति थी भक्ति का सहारा और इसी शक्ति से उसकी रक्षा भी हुई। भक्त कवियों ने भगवान के भक्ति से ओत प्रोत होकर अपने भावो को कविता के रूप मे प्रकट किया जिसके कारण भाषा को शक्ति मिली और जन समुदाय को मनुष्यों को रसमय जीवन-का सार ज्ञात हुआ। भक्ति के विकास के साथ ही साथ भक्ति को प्रकट करनेवाली वाणी का भी विकास हुआ। हरिऔध जी के शब्दों में "कविता करके तुलसी न लसे, कविता लसी या तुलसी की कला"। सूर और तुलसी के समय में हिन्दी कविता की उन्नति और आदर राजाओं के दरबार के कारण नहीं हुआ किन्तु दरबारों की उन्नति उनकी कविता के कारण हुइ। इस उन्नति के करने वाले सूर और तुलसी हैं और सूर तथा तुलसी को उत्पन्न करने वाली वह भक्ति थी जिसका क्रमशः विकास राम और कृष्ण का सहारा लेने के कारण हो रहा था। जन समुदाय के सामने जब राम और कृष्ण का वास्तविक स्वरूप रक्खा गया तभी से लोग उनके प्रत्येक स्वरूप के निरूपण मे लग गये। सूरदास के समय तक भगवान को संसार के प्रसन्न करने वाले स्वरूप की पूर्ण अभिव्यक्ति हो गई। तुलसीदास जी अन्त में उस वाणी को लेकर आये जिसके कारण जीवन से सम्बन्धित कला और वाणी को मनोहर स्वरूप प्राप्त हुआ।

पृ० ५२ शब्दार्थ दिव्य वाणी=सुन्दर वाणी। मंजुघोष श्रेष्ठ शब्द। निर्गुण=गुणों से रहित, यहाँ निर्गुण से मतलब अत्याचार,

निर्दयता, राग द्वेष आदि का न होने से है। निरंजन=वह ईश्वर जिस पर माया का कोई असर नहीं पड़ता। वासना=इच्छा। दमन=नाश। आविर्भाव=उत्पत्ति। शील-शक्ति सौंदर्य मयी=वह सुन्दरता जिसमे नम्रता और शक्ति का मिश्रण हो। उत्तरापथ= भारतवर्ष का उत्तरी भाग जिसमे पंजाब, सिन्ध, उत्तरप्रदेश, बिहार बंगाल और मध्य प्रदेश के प्रदेश सम्मिलित हैं। स्पर्श=छूने। अन्यत्र=दूसरे स्थान पर दुर्लभ=कठिन, अप्राय। प्रेरणा=किसी कार्य को करने का उत्साह दिलाने वाली भावना। महत्व पर श्रद्धा करती है =जो महान है उनकी महानता के कारण उनका आदर तथा प्रेम करती है। प्रवृत्त=झुकना। विपत्ति=दुःख का समय। आर्द्र=द्रवित, पिघलना। ग्लानि=घृणा। शिष्टता=सभ्याचरण।

जहाँ हमें दिन दिन··· · ············बसा दिया।

व्याख्या तुलसीदास जी की वाणी का प्रभाव जन समुदाय पर इतना पड़ा कि उन्हे इस बात का निश्चय हो गया कि जब अत्याचार और पाप बढ़ते बढ़ते उतने ही बढ़ जायेंगे जितने कि रावण के समय मे होते थे तो उनको नष्ट करने के लिये अवश्य ही राम का अवतार होगा। तुलसीदास द्वारा रचित रामायण से जन समुदाय को ईश्वर के वास्तविक स्वरूप का ज्ञान हुआ जो उनके जीवन के प्रत्येक अंग मे प्रविष्ट कर गया। मनुष्य जीवन से 'राम चरित मानस' का अतीव घनिष्ट सम्बन्ध था इसी कारण वह धनी निर्धन, राजा रंक, मूर्ख और विद्वान सभी के गले का हार बन गया आज भी पढ़े लिखे और अपढ़ सभी लोग 'राम चरित मानस' की चोपाइयों को उदाहरण के रूप मे प्रयोग किया करते हैं।

उनकी वाणी की ·················· ·····अनुभव करती है।

व्या० तुलसी दास हिन्दू जाति की नैया को पार लगाने वाले थे। उन्हीं की कृपा से आज हिन्दू जाति सनाथ है अन्यथा इसके सभी सद्गुण मूल सहित नष्ट हो गये होते। इनकी वाणी जन समुदाय के लिये इतनी हितकर सिद्ध हुई कि उसके प्रभाव के कारण प्रत्येक

सद्‌गुणों का प्रादुर्भाव हुआ जो अवसर के अनुसार प्रगट होते हैं। आज हिन्दू सौन्दर्य पर मोहित होते है, महान व्यक्तियों में श्रद्धा रखते हैं, आपत्ति के समय धैर्य से काम लेते है और कठिन कार्यों को उत्साह के साथ करते है। वे दूसरों के दुख से कातर होते हैं, बुराइयों से उन्हें घृणा है और शिष्टाचार तथा मनुष्य जीवन के सार को भी समझते हैं।

प्रश्नोत्तर १ तुलसी दास जी ने रामचरित मानस लिखकर हिन्दू जाति का महान कल्याण किया है। उनके इस महान ग्रन्थ को हमीं भिन्न दृष्टिकोणों से देख सकते हैं क्योंकि उन्होंने 'मानस' में एक नहीं अनेक वस्तुओं का समावेश कर दिया है। हिन्दू जाति के लिये उनकी यह महान देन है।

साहित्यिक दृष्टि से:

रामचरितमानस एक प्रबन्ध काव्य है। प्रबन्ध काव्य के उसमें सभी गुण विद्यमान हैं। उसमें अयोध्या के राजा रामचन्द्र का बाल्य काल से अन्त समय तक का वर्णन है। दोहा चौपाई और छन्दों में लिखा गया यह ग्रन्थ अत्यन्त ही सुन्दर है। यह सरल अवधी भाषा में लिखा गया है। महाभारत को छोड़कर इसकी समानता का हिन्दी साहित्य में कोई दूसरा ग्रन्थ नहीं।

सामाजिक दृष्टि से:

इस ग्रन्थ का समाज के ऊपर बहुत ही प्रभाव पड़ा है। अनेक सामाजिक कुरीतियों का वर्णन किया गया है और रामचन्द्र जी के जीवन चरित्र से उदाहरण देते हुये बताया है एक आदर्श पुरुष को उन कुरीतियों को दूर करने के लिये किस प्रकार आगे बढ़ना चाहिये वर्तमान समाज मे ऊँच नीच का छुआ छूत का भेद है किन्तु रामचन्द्रजी निषाद से गंगा तट पर गले लगा कर मिलते हैं, भिलनी के झूठे बेर खाने में उन्हें कोई हिचक नहीं। व्यक्तिगत सुख के लिये वे गृह कलह नहीं चाहते और राजगद्दी छोड़ कर बन का रास्ता लेते हैं। दुष्टों को दण्ड देना तथा सज्जनों की रक्षा करना

उनका कर्त्तव्य है। राजा होने पर वे अपने राज्य में सभी सामाजिक बुराइयों को दूर कर देते हैं। इस प्रकार तुलसीदास जी का मानस सामाजिक बुराइयों पर प्रकाश और उन्हे दूर कर देने के लिये प्रेरणा प्रदान करता है। उसी का प्रभाव है कि हिन्दू जाति सन्मार्ग पर चलती है, शीलता, धैर्य, शिष्टता और उदारता आदि गुण उसमे पाये जाते हैं।

राजनैतिक दृष्टि से:

राजनैतिक उथल-पुथल में ही तुलसीदास का जन्म हुआ था। निराश हिन्दू जाति को कोई सहारा दिखाई न दे रहा था ऐसे समय में तुलसीदासजी की वाणी राम चरित मानस के रूप में मनुष्यों के सामने आई। राम चरित मानस में राजा की नीति और उसके कर्तव्यों का वर्णन है। जो राजा अपने कर्तव्यों का पालन समुचित रूप से नहीं करता वह दण्ड का भागी है। 'जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी। सो नृप अविसि नरक अधिकारी।' इसके अतिरिक्त तुलसीदासजी जनता के अन्दर खुला प्रचार न कर सकते थे क्योंकि उस समय मुसलमानों की सल्तनत थी उसका विरोध करना मृत्यु को बुलाना था। हिन्दू जाति के पतन को रोकने के लिये तथा उसको चेतना प्रदान करने के लिये उन्होंने साहित्य को अपनाया और राजनीति की शिक्षा जन समुदाय को दी।

धार्मिक दृष्टी से:

तुलसीदास जी धर्म और उसकी महत्ता को न भूले। उन्होंने उन सभी धार्मिक अंगों पर प्रकाश डाला जिनके कारण मनुष्य उन्नति कर सकता है। ईश्वर की उपासना और उसको कभी न भूलने का उपदेश दिया। 'रामचरित मानस' का आरम्भ ही ईश्वर की स्तुति से आरम्भ होता है। साकार ब्रह्म की उपासना अन्य देवताओं की उपेक्षा न करना सत्याचरण का उपदेश किया। पुत्र का धर्म है पिता की आज्ञा पालन करना, भाई के लिये अपना स्वार्थ त्याग करना और बलवानों का धर्म निर्बलों की रक्षा करना

है। आत्मिक उन्नति करना तथा सत्य के लिये अपने प्राण निछावर करना ही धर्म है।

प्रश्नोत्तर २ गोस्वामी तुलसीदास जी के समय में भारतीय साहित्य समाज में एक नवीन परिवर्तन हुआ था। परिवर्तन की रूप रेखायें तो पूर्व से ही बन चुकी थी किन्तु तुलसीदास जी के समय में कुछ स्थिरता आ गई। मुसलमानों के साम्राज्य की प्रतिष्ठा से हिन्दुओं के हृदय का वीरोत्साह क्षीण हो गया। उनको अपने ऊपर आत्म विश्वास भी न रहा। अतः निराश जाति ने उस सर्व शक्तिमान की शरण ली जो उनकी रक्षा का अन्तिम सहारा था। हिन्दी साहित्य का वह युग था जिसमें भगवान की भक्ति की रचनायें की गई। यह युग भक्ति काल के नाम से प्रसिद्ध है।

भक्त कवियों को दो समुदायों मे विभाजित किया जा सकता है। निर्गुण ब्रह्म के उपासक तथा सगुण ब्रह्म के उपासक। निर्गुण ब्रह्म के उपासकों के भी दो भेद थे। प्रथम वे जो ज्ञान मार्ग का अविलम्बन कर जनता को ज्ञान द्वारा ईश्वरोपासना का उपदेश देते थे। दूसरे प्रेम मार्गी शाखा के सूफी कवि थे।

ज्ञान मार्ग शाखा के कवि उपदेश करने के उद्देश्य से रचनायें करते थे। इनकी रचनायें सरसता और मार्मिकता से रहित हैं। मिली जुली भाषा में इन्होंने दोहे और कवित्तों की रचना कर हिन्दू और मुसलमानों के धर्म के आडम्बर की आलोचना की। संत कवियों मे कबीरदास का नाम मुख्य है।

प्रेम मार्गी शाखा के कवि मुसलमान कवि थे जिन्होंने लौकिक आख्यायिकाओं का आश्रय लेकर ईश्वर और जीव के प्रेम की सुन्दर व्यंजना की है। इन्होने ईश्वर को प्रियतमा के रूप में मान कर उपासना का मार्ग अपनाया है। इस शाखा के कवियों में मुहम्मद जायसी सर्वश्रेष्ठ है।

सगुण धारा के कवियो ने भारत की प्राचीन उपासना पद्धति

से प्रेरणा ली और उन्होंने इसी का विकसित रूप अपनाया। इन्होंने राम और कृष्ण को अपनी उपासना का आधार माना राम की उपासना करने वाले भक्त रामोपासक कहलाये रामभक्ति शाखा के मुख्य कवि तुलसीदास थे जिनके द्वारा छोटे बड़े १२ ग्रंथ रचे गये। आपने अवधी और ब्रज दोनों ही भाषाओं में अपने ग्रन्थों की रचना की। इस शाखा के अन्य कवि अग्रदास, नाभादास, प्राणचन्द आदि थे किन्तु तुलसीदास जी की प्रतिभा को अन्य कोई न पा सका।

सगुण धारा के कवियों की दूसरी शाखा कृष्ण भक्ति शाखा है जिसमें कृष्णोपासक भक्तकवि हैं। सूरदास जी इस शाखा के सर्व श्रेष्ठ कवि हुये है। आपने कृष्ण के शैशव और यौवन काल की क्रीड़ाओं का अत्यन्त ही सुन्दर वर्णन किया हैं। सूर सागर आपकी सर्व श्रेष्ठ रचना है जो पदों का संग्रह है। इस साखा के अन्य कवि कुंभनदास परमानन्द दास, कृष्णदास नंददास आदि हुये।

प्रश्नोत्तर हिन्दी गद्य के विकास में पं० रामचन्द्र शुक्ल का महत्त्वपूर्ण स्थान है। आपने अर्थ गुण सम्पन्न शैली में हिन्दी गद्य साहित्य के भण्डार की वृद्धि की है। आपकी शैली में गम्भीरता पाई जाती है। भाव व्यंजना सुन्दर और स्पष्टता लिये हुये है। आपकी रचनाओं में साधारणतः तीन प्रकार की शैली दिखाई देती है। (१) वर्णनात्मक शैली (२) भावात्मक शैली (३) विवेचनात्मक शैली।

वर्णनात्मक शैली गम्भीर और मार्मिक है। सरल और सुलझी हुई भाषा में आपने विषय को स्पष्ट कर दिया है। कहीं२ पर अत्याधिक गम्भीरता के कारण जटिलता भी आगई है।

भावात्मक शैली मे आपने अनेक विषयों पर जैसे क्रोध, घृणा, श्रद्धा, भक्ति, लोभ, प्रीति आदि पर अत्यन्त ही मनोवैज्ञानिक ढंग से लेख लिखे हैं। थोड़े से वाक्यों में गम्भीर तथा विस्तृत भावों को

अर दिया है। वाक्यों तथा शब्दो का चयन इस प्रकार हुआ है कि एक वाक्य का अस्तित्व मिटाना सबको छिन्न भिन्न कर देना है। साथ ही साथ आपने मीठी चुटकियाँ भी ली है।

आपकी तीसरी शैली विवेचनात्मक है। इस शैली में सूर, तुलसी जायसी आदि की आलोचनायें लिखी गई हैं। आलोचना के समय आपने इसमे हास्य का पुट देकर उसे रोचक बना दिया है। आपने आलोचना में नवीन युग का सूत्र पात किया।

आपकी भाषा गम्भीर संयत और परिष्कृत है। गवेषणात्मक निबन्धों की भाषा क्लिष्ठ तथा संस्कृत शब्दों की पदावली से आवृत है। आलोचनात्मक भाषा भी गम्भीर है किन्तु उसमें व्यंग करते समय उर्दू अंग्रेजी भाषा के भी शब्द प्रयुक्त किये हैं। जैसा विषय वैसी ही भाषा आपकी रचनाओं की विशेषता है। आपकी भाषा व्याकरण दृष्टि से शुद्ध और व्यवहारिक है। विदेशी भाषाओं के चलते हुये शब्दों का प्रयोग किया है। आपकी भाषा संगठित और संष्कृत शब्दों से गठी हुई है फिर भी अरुचिकर नहीं। आपका हृदय कवि है, मस्तिष्क आलोचक तथा जीवन एक अध्यापक है।

४ संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखोः

वीर गाथा काल, भागवत सम्प्रदाय, निर्गुण रूप, अखिल, जीवन वृत्ति व्यापिनी कला, शील-शक्ति-सौन्दर्यमयी स्वच्छ धारा।

उत्तर- वीर गाथा काल हिन्दी साहित्य का आदि काल। इस काल के कवि राजाओं के आश्रित रहकर उन्हें उत्साहित करने के लिये वीर रसमयी कविता करते थे।

भागवत सम्प्रदाय भगवद् भक्तों का समूह। ये लोग संसार के सुखों पर लात मारकर और भगवान् की भक्ति में लीन रह कर जनता के उद्धार में लगे रहते थे।

निर्गुण रूप निराकार रूप। वह रूप जो अवतार आदि नहीं लेता है।

अखिल जीवन वृत्ति व्यापिनी कला जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को

प्रभावित करने वाली कला।

शील-शक्ति-सौन्दर्य मयी स्वच्छ धारा वाणी का वह प्रभाव जो मानव शील, शक्ति और सुन्दरता का आदर करने की ओर प्रवृत्त करता है।

५ समास विग्रह का नाम निर्देश करो:

तत्त्वदर्शी, लोक-व्यापार-व्यापी, आनन्दोत्सव, और लोक धर्म रक्षक।

समस्त पद	विग्रह	समास नाम।
तत्त्व दर्शी	तत्त्व का दर्शी	सम्बन्ध तत्पुरुष
लोक व्यापार व्यापी	लोक का व्यापार	सम्बन्ध तत्पुरुष लोक

तत्त्व दर्शी तत्त्व का दर्शी सम्बन्ध तत्पुरुष लोक व्यापार व्यापी-लोक का व्यापार-सम्बन्ध तत्पुरुष लोक व्यापार में व्यापी-अधिकरणात त्वपुरुष।

आनन्दोत्सव-आनन्द का उत्सव-सम्बन्ध तत्पुरुष, लोक धर्म रक्षक-लोक का धर्म, लोक धर्म का रक्षक-सम्बन्ध तत्पुरुष।

६ उप वाक्य पृथक करण करो:

जब भगवान् मनुष्य······प्रत्यक्ष हो सकता है।

(१) तभी मनुष्य के भावों की पूर्णात्पत्ति हो सकती है प्रधान उपवाक्य और लोक धर्म का स्वरूप हो सकता है समान स्वतन्त्र उपवाक्य नं० १ का।

(३) जब भगवान् मनुष्य के परों से दीन दुःखियों की पुकार पर दौड़कर आते दिखाई दें क्रिया विशेषण उपवाक्य काल बताता है।

(४) और उनका हाथ मनुष्य के हाथ के रूप में दुष्टों का दमन करण और पीड़ितों का सहारा देता दिखाई दे समान स्वतंत्र उपवाक्य नं० २ का उनकी आँखें मनुष्य की आँखें होकर आँसू गिराता दिखाई दें।

सम्पूर्ण वाक्य संयुक्त।

७- कृदन्त के प्रकार बताओः

लेकर, जोड़ने से, हंसता खेलता, उठा कर, खड़ा, आते आते, समाप्त होते ही, पुकार कर, करने वाला।

उत्तर- लेकर-पूर्व कालिक क्रिया। जोड़ने से-क्रियार्थक संज्ञा। हंसता खेलता, तत्स प्रत्यय। उठाकर पूर्व कालिक क्रिया। खड़ा-खड़ा होना-शब्द प्रत्यय। आते आते- 'आना' से शब्द प्रत्यय समाप्त होते ही-शब्द प्रत्यय प्रकार पर-क्रियार्थक संज्ञा। करने वाला-करना से 'वाला' प्रत्यय।

पाठ ११ तक्षशिला का विद्यापीठ

(बाबू जयशंकर)

सारांश- प्राचीन काल मे भारतवर्ष के उत्तरी भाग मे एक विश्व प्रसिद्ध विद्यालय था जो तक्षशिला में स्थित था। भिन्न २ देशों के छात्र, राजकुमार तथा धनी व्यक्तियों के लड़के इस विद्यालय मे शिक्षा प्राप्त करने आते थे। चाणक्य-नाम का एक व्यक्ति जो स्वयं विद्यालय का छात्र रह चुका था और इस समय उसी विद्यालय में अध्यापन का कार्य कर रहा था। इसी विद्यालय में मगध प्रदेश के पूर्व सेनापति का लड़का चन्द्रगुप्त और मालव राष्ट्र के राष्ट्रपति का लड़का सिंहरण भी शिक्षा प्राप्त कर रहा था।

एक दिन जब चाणक्य और सिंहरण तक्षशिला की राजनीति के सम्बन्ध मे बातें कर रहे थे। उसी समय सहसा तक्षशिला के राजकुमार और उनकी बहिन अलिका वहाँ आ गई। आम्भिक को सिंहरण का कथन अनुचित प्रतीत हुआ और दोनों मे वाद विवाद हुआ। इसी बीच में आम्भीक ने चाणक्य को भी दोषी ठहराया और ऊपर से कुचक्र का अभियोग लगाया। सिंहरण इस अभियोग को के लिये प्रस्तुत न था।

वार्तालाप के मध्य में चन्द्रगुप्त भी उसी स्थान पर आ गया। सिंहरण के व्यंग्यात्मक वाक्य से क्रुद्ध होकर आम्भीक ने उस पर

तलवार का वार किया किन्तु बीच में ही चन्द्रगुप्त ने अपनी तलवार से सिंहरण की रक्षा करली और आम्भीक की तलवार टूट गई। अलिका उन दोनों के मध्य में आ गई और उसने अपने भाई की रक्षा की। अन्त में आम्भीक लज्जित होकर उस स्थान से चला गया।

आम्भीक के चले जाने पर चाणक्य ने चन्द्रगुप्त और सिंहरण दोनों को ही एक देश और एक जाति का उपदेश दिया और उनसे बाहरी आक्रमण से देश की रक्षा की शपथ ली। इसके पश्चात् चन्द्रगुप्त और चाणक्य दोनों ही उस स्थान से चले गये।

सिंहरण उसी स्थान पर खड़ा विचार करता रहा। उसी समय तक्षशिला की राजकुमारी अलिका उस स्थान पर आई और सिंहरण को तक्षशिला त्याग देने की मंत्रणा दी। अलिका के अनुरोध पर सिंहरण ने तक्षशिला का परित्याग कर दिया।

पृष्ठ ५५ शब्दार्थ विद्यापीठ=शिक्षालय। निर्माता=संस्थापक। सौम्य=सज्जन, भद्र। अवधि=निश्चित समय। कुलपति=विद्यालय का प्रधान आचार्य। भावी स्नातक=भविष्य मे होने वाले शिक्षा प्राप्त छात्र। अकिञ्चन=तुच्छ। अर्थशास्त्र=शिक्षा की वह शाखा जिसमें धन की प्राप्ति, रक्षा और उसको किस प्रकार बढ़ाया जा सकता है इन सबका उल्लेख हो।

पृष्ठ ५६ शब्दार्थ- यवन=अनार्य। कुचक्र=छल पूर्वक रचा गया जाल। प्रतारणा=धूर्तता, कपट। लेखनी=कलम। मसी=स्याही। प्रस्तुत=तैयार। खण्ड राज्य=छोटे छोटे राज्य। द्वेष=वैमनस्य। जर्जर=क्षीण।

मैं उसे जानने .... विस्फोट होगा।

व्याख्या=यह गद्यांश श्री जय शंकर प्रसाद द्वारा लिखित 'चन्द्रगुप्त' नाटक के अंश तक्षशिला का विद्यापीठ नामक पाठका है। चाणक्य और सिंहरण तक्षशिला की राजनीति और देश की परिस्थिति पर विचार कर रहे हैं। चाणक्य के यह पूछने पर कि

'क्या तुम जानते हो कि यवनों के दूत यहाँ क्यों आये हैं सिंहरण कहता है कि

मैं इन सब बातों पर विचार कर रहा हूँ और मैं यह समझता हूँ कि अबि आर्यावर्त का भविष्य अन्धकारमय है क्योंकि उस भविष्य के इतिहास को लिखने के लिये धूर्तता और छल कपट की कलम और स्याही तैयार की जा रही है। सारांश यह कि लोग स्वार्थ में पड़ कर देश के भविष्य को नष्ट कर रहे हैं और धूर्तता और छल कपट से कार्य कर रहे हैं। उत्तरी भारत के छोटे छोटे राज्य एक दूसरे से वैमनस्य रखते हैं और एक दूसरे को नीचा दिखाने के प्रयत्न में लगे रहते हैं। उसी का परिणाम है कि शीघ्र ही भयानक दुर्घटना होगी।

शब्दार्थ— विशेष-परिचय=पूर्ण जानकारी। दुर्विनीत=अशिष्ट। निर्भीक=निडर। वंशानुगत=वंश की परम्परा के अनुसार। गर्व=अभिमान। हाथ है=सहायक हो। विरुद्ध=प्रतिकूल। सृजन=रचना।

कदापि नहीं.................शिक्षा का भी गर्व है।

सिंहरण आम्भीक से कहता है कि आप मुझे अशिष्ट बताते हैं यह आपकी भूल है मालव क्षत्रिय नम्र होकर भी निडर होते हैं। यह उनकी वंश परम्परा है। इसके अतिरिक्त तक्षशिला में रह कर मैंने जो कुछ अध्ययन किया है उस पर भी मैं अभिमान करता हूँ क्योंकि तक्षशिला की शिक्षा ने मुझे अत्याचार अथवा अन्याय सहन करने की शिक्षा नहीं दी है।

पृष्ठ ५७ शब्दार्थ स्वराज=अपना राज्य। अमृत=अमर। मिथ्या=झूठा। गर्व=अभिमान। सामर्थ्य=शक्ति। स्वेच्छा=अपनी इच्छा के अनुसार। माया स्तूपों=सांसारिक सुखों के साधनों। प्रकृति=ईश्वर द्वारा निर्मित वस्तुयें। कल्याण=हित।

राजकुमार.................ज्ञान का दान देता है।

आम्भीक द्वारा चाणक्य पर कुचक्र का अभियोग लगाने तथा

अपने अन्न से पलने वाला बताने पर चाणक्य कहता है कि राजकुमार यह तुम्हारा झूठा अभिमान है। ब्राह्मण किसी राज्य विशेष में नहीं रहता और न उस पर किसी राजा का अधिकार ही होता है उसका तो अपना अलग राज्य होता है और वह उसी में स्वतन्त्रता पूर्वक रहता तथा घूमता है। उसका पालन पोषण किसी के अन्न से नहीं होता वह अमृत की भाँति अमर होकर जीवित रहता है। ब्राह्मण के पास अपार शक्ति होती है वह चाहे जो कुछ प्राप्त कर सकता है किन्तु फिर भी वह निस्पृही होता है और सम्पूर्ण सांसारिक सुख साधनों को त्याग देता है। वह अपने ज्ञान के द्वारा संसार का हित करता है।

शब्दार्थ काल्पनिक=अवास्तविक। महत्व=श्रेष्ठ, बड़ा। माया-जाल=छल कपट का चक्र। प्रत्यक्ष=स्पष्ट। नीच कर्म=बुरे कार्य। पर्दा नहीं डाल सकते=छिपा नहीं सकते। अविश्वासी=विश्वास न करने वाला। दस्यु=नीचा। म्लेच्छ साम्राज्य=नीच पुरुषों द्वारा शासित बड़ा राज्य। कगार=समुद्र अथवा नदी के किनारे का कटा हुआ भूभाग जो गिरने वाला हो। विशाल=बड़ा। सुमेरु=एक पर्वत का नाम। दुर्धर्ष...धृष्ट। अभिप्राय=प्रयोजन। शिरोधार्य=माननीय।

सो कैसे होगा .... राह देख रही है

किसी का विश्वास न करने वाले क्षत्रिय यह कभी नहीं हो सकता तुम्हारी जैसी बुद्धि रखने वाले व्यक्तियों की ही कृपा से नीच जातियाँ अपने विशाल राज्य का निर्माण करती जा रही हैं और आर्य जाति पतनावस्था को प्राप्त होती जा रही है। अब उसका इतना पतन हो चुका है कि मानो वह कगार पर खड़ी हुई है और एक धक्का उसे रसातल को पहुँचा देगा।

पृष्ठ ५८ शब्दार्थ वन्य=वन का, जंगल का। निर्झर=झरना। स्वच्छ=निर्मल। स्वच्छन्द=स्वतन्त्र। वेग=शक्ति। अवज्ञा=आज्ञा का पालन न करना। स्पृहणीय=स्पर्धा के योग्य। रहस्य भेद। पुष्कल =बहुत अधिक। पुलकित=प्रसन्न। सुख रजनी=सुख की रात्रि

उत्तरापथ=उत्तर का मार्ग। अर्गला=किवाड़ों के पीछे लगाने वाला डंडा। सम्भवत=शायद। उद्घाटन=प्रकट, खोलना।

हां हां रहस्य है ... . करने गये थे।

व्याख्या सिंहरण की बातों में आम्भीक द्वारा रहस्य बताने पर सिंहरण कहता है आपको अवश्य रहस्य दिखाई दे रहा है। व्यंग करते हुये आगे सिंहरण कहता है कि वह यही है कि यवनों द्वारा रिशवत में बहुत सा सोना मिल गया है और उससे प्रसन्न हो कर भारतवर्ष के उत्तरीय भाग रूपीगृह की सुख रात्रि की शान्ति निद्रा को नष्ट करने के लिये उन लुटेरे यवनों के लिये दरवाजा खोल दिया गया है। सारांश यह है कि उत्तरीय भाग की जनता जो शान्ति पूर्वक अपना समय व्यतीत कर रही थी उसके सुख को नष्ट करने के लिये यवनों को बुलाया जा रहा है। यही कारण था कि तक्षशिला के महाराज वाहीक (बलख) तक इसी का रहस्य खोलने गये थे।

पृष्ठ ५८ शब्दार्थ – असह्य=जो सहन न किया जा सके। खड्ग=तलवार। कोष=म्यान। लिप्त=सम्मिलित। निस्सहाय=जिसकी सहायता करने वाला कोई न हो।

पृष्ठ ५६ शब्दार्थ प्रत्याशा=सम्भावना। क्रोधाभिभूत=क्रोध भरे हुये। क्षुब्ध=क्रोध मिश्रित दुख। असाधारण=महत्वपूर्ण। सम्मति=मत, सलाह। परित्याग=छोड़ देना। स्थल=क्षेत्र। अकारण=व्यर्थ। रक्तपात=खून बहाना। दिव्य श्रेष्ठ। आत्मीय=आत्मा से सम्बन्ध रखने वाला, अपना। मान=प्रतिष्ठा।

आर्य संसार ... .मान मेरा ही है।

व्याख्या चन्द्रगुप्त अपने गुरु चाणक्य से कहता है कि आर्य श्रेष्ठ। केवल पुस्तकों का अध्ययन ही शिक्षा नहीं वरन अपने आत्म सम्मान की रक्षा यदि प्राणों की आहुति देकर भी हो तो इसी में जीवन की श्रेष्ठता है और उसी व्यक्ति का संसार में जीना सफल है जो आत्म सम्मान की रक्षा करता है। फिर सिंहरण और मैं दो होते हुये भी एक है और उसके अनादर में मेरा अनादर है।

पृष्ठ ६० शब्दार्थ उत्तीर्ण=सफल। अवसान=अन्त। आर्यावर्त =सम्पूर्ण भारतवर्ष। आगामी=भविष्य में आने वाले। अनन्तर=पश्चात्। विजेता=जीतने वाला। पददलित=विजित शल्य=तेज नोंक वाला हथियार बर्छी। क्षुद्र=नीच।

आत्म सम्मान .... सर्वनाश होगा।

चाणक्य चन्द्रगुप्त और सिंहरण को एक राष्ट्र और एक जाति का पाठ पढ़ाते हुये कहते हैं कि तुम आत्म सम्मान को अत्यधिक महत्व देते हो किन्तु पहले इस बात को पहिचानो भी कि आत्म सम्मान क्या है। तुम अपने व्यक्तिगत मान के लिये अपना सब कुछ निछावर कर सकते हो और तुम्हारा मान मालव और मगध के मान तक ही सीमित है। यह तुम्हारी भूल है, तुम्हारा मान तो आर्यावर्त के मान में होना चाहिये तभी तुम्हारा आत्म सम्मान सन्तुष्ट हो सकता है। शीघ्र ही आर्यावर्त के छोटे छोटे स्वतंत्र राज्य एक एक करके यवनों द्वारा पराजित होंगे। आज की घटना असा धारण है क्यों कि आम्भीक को यह बात तीर की भाँति चुभ गई है। आम्भीक और पर्वतेश्वर एक दूसरे के विरोधी हैं इस कारण आम्भीक यवनों से युद्ध न करके उनका स्वागत करेगा और आर्यावर्त को नष्ट भ्रष्ट कर देगा।

शब्दार्थ शपथ पूर्वक=सौगन्ध सहित। अचल=चिरस्थाई। साधन सम्पन्न=आवश्यक वस्तुओं से प्राप्त। प्रयोजन=अर्थ, मतलब जीविका=उदरपूर्ति के साधन।

पृष्ठ ६१ शब्दार्थ अग्निमय=आग से जलता हुआ अस्त्रागार =हथियार रखने का स्थान। चञ्चला=स्थिर न रहने वाली। रण लक्ष्मी=युद्ध रूपी देवी लक्ष्मी। नील लोहित प्रलय जलद=नीले तथा खून की भाँति रंगीन प्रलयकारी बादल। मयूर=मोर

एक अग्निमय .... मयूर से नाचेंगे।

व्याख्या चाणक्य और चन्द्र गुप्त के चले जाने पर भारतवर्ष की भावी स्थिति पर विचार कर रहा है वह सोच रहा है कि आर्यावर्त

शब्दार्थ अनुपयुक्त=अयोग्य। अकारण=बिना किसी कारण के। अनाधिकार=अपनी सीमा से बाहर। कष्टदायक=दुखदाई। दुर्दान्त=भयानक। वर्वर=विकट। निरवकाश=जिसे समय न हो अतीत=जिनका अन्त न हो। अनागत=न आये हुये।

मानव कब .... किस बात की।

व्याख्या अलका सिंहरण को तक्षशिला परित्याग करने के लिये कहती है और जीवन तथा सुख की ओर ध्यान दिलाती है। इसके उत्तर में सिंहरण कहता है कि मनुष्य सदैव एक सी दशाओं में नहीं पलता। उसके विचार शीघ्र परिवर्तित हो जाते हैं और वह मनुष्य होते हुये भी भीषण राक्षस तथा पशुओं की भांति अज्ञानता पूर्ण कार्य करने लगता है। वह पत्थर से भी अधिक कठोर हो जाता है दया का लेश भी उसके हृदय में नहीं। करुणा के लिये तो उसे समय ही नही मिलता। जब मनुष्य की दशा इतनी चंचल है तो फिर बीते हुये सुखो का सोचना व्यर्थ है, आने वाले भविष्य के लिये अभी से डरना अनावश्यक है। सिंहरण कहता है कि वर्तमान समय को मैं अपने अनुसार बना लूंगा फिर मुझे चिन्ता करने की कोई आवश्यकता नहीं।

पृष्ठ ६२ शब्दार्थ अनुकम्पा=कृपा। कृतज्ञ=धन्य, उपकार मानने वाला। समग्र=सम्पूर्ण। मनोबल=मन की शक्ति। अनुरोध=प्रार्थना। स्नेहानुरोध=प्रेम पूर्वक आग्रह। बाध्य=मजबूर। प्रखर धारा=तीव्र धारा। यवन-वाहिनी=यवनो की सेना। चेष्टा=प्रयत्न। प्रस्थान=जाना।

प्रश्नोत्तर १ तक्षशिला विद्यापीठ आज कल के विश्व विद्यालयों की भांति न था। उस विद्यापीठ में पढ़ने वाले छात्र पच्चीस वर्ष तक की अवस्था तक ब्रह्मचर्य का पालन करते हुये विद्याध्ययन करते थे। विद्या प्राप्त करने से पूर्व श्रेष्ठ चरित्र का होना आवश्यक समझते थे। वहाँ के छात्रों का प्रथम कर्तव्य विद्याध्यन करना था अन्य कार्य उनके लिये गौण थे। इसी का परिणाम था कि भारतवर्ष को चाणक्य

और चन्द्रगुप्त जैसे विद्वान और शक्तिशाली राजा की प्राप्ति हुई।

तक्षशिला विद्यापीठ के छात्र गुरु की आज्ञा पालन करना अत्यन्त आवश्यक समझते थे। गुरु की आज्ञा उनके लिये राजा की आज्ञा से भी अधिक महत्व रखती थी। आम्भीक द्वारा सिंहरण को आज्ञा देने पर सिंहरण कहता है गुरुकुल में केवल आचार्य की आज्ञा शिरोधार्य होती है अन्य आज्ञायें अवज्ञा के कान से सुनी जाती है।

तक्षशिला के छात्र अस्त्र शस्त्रों की भी शिक्षा ग्रहण करते थे। वहाँ का प्रत्येक सिपाही था। ताकि देश की आवश्यकता के समय देश की रक्षा अपने वैरियों से कर सके। चन्द्रगुप्त और सिंहरण उन्हीं छात्रों में से थे जिन्होंने सिकन्दर के आक्रमण के समय अपने देश की रक्षा के लिये सिकन्दर की विसाल वाहिनी का सामना किया।

वहाँ का प्रत्येक छात्र आत्माभिमानी था। वे आत्म सम्मान के मूल्य को समझते थे। आत्म सम्मान के लिये अपने प्राण न्यौछावर करने को प्रस्तुत रहते थे। उनका विचार था कि संसार की नीति और शिक्षा का सारांश आत्म सम्मान की रक्षा करना है।

तक्षशिला के छात्रों के उपरोक्त गुणों से यदि हम वर्तमान छात्रों की तुलना करते हैं तो हमें जमीन आसमान का अन्तर दिखाई देता है। आज छात्रों के इस सर्व श्रेष्ठ गुण की कमी है जिसे ब्रह्मचर्य कहते हैं। कोई भी ऐसा स्नातक न मिलेगा जिसने पचीस वर्ष तक की अवस्था तक ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करके शिक्षा प्राप्त की हो या कर रहा हो। आज कल छात्रों का ध्यान चरित्र निर्माण की ओर बहुत ही कम है। उनका अधिकांश समय चंचलता और उच्छृंखलता में व्यतीत होता है।

गुरु की आज्ञा का तो कहना ही क्या। सब प्रकार से सुख प्रदान करने वाले माता पिता की आज्ञा का पालन तक वर्तमान छात्र करते नहीं। गुरु की आज्ञा पालन करने में उन्हें अपमान प्रतीत होता है। यदि आज्ञा उनके अनुकूल होती है वही उन्हें अच्छी लगती है शेष

आज्ञायें उनके द्वारा अवज्ञाकाल से सुनी जाती है। वर्तमान छात्रों में आत्म सम्मान की भावना बहुत कम मिलेगी। गिने चुने ही ऐसे छात्र मिलेगें जो अपने आत्म सम्मान की रक्षा करनेवाले हों अन्यथा अधिकतर ऐसे मिलेंगे जो निर्ल्लज्ज होंगे। उन्हें शिक्षा प्राप्त करने से कोई मतलब नहीं उनका ध्यान तो सदैव हड़ताल करने व्यर्थ की बातों में समय नष्ट करने की ओर रहता है। जिन छात्रों में गुण होते हैं वे तो उन्नति करते ही हैं किन्तु वर्तमान समय के अधिकांश छात्र श्रेष्ठ गुणों से सम्पन्न नहीं कहे जा सकते।

प्रश्नोत्तर २ सिंहरण और आम्भीक के वार्तालाप में दोनों का अपना भिन्न भिन्न दृष्टिकोण है। सिंहरण तक्षशिला विद्यापीठ के छात्र के नाते आम्भीक से आदरसहित बातें करता है किन्तु आम्भीक अपने को तक्षशिला राज्य का युवराज समझ कर अभिमान पूर्वक बातें करता है। आम्भीक पहले सिंहरण से उसका परिचय पूछता है और इसी समय चाणक्य को भी सम्मिलित कर लेता है और उसके ऊपर कुचक्र रचने का अभियोग लगाता है। सिंहरण इसका प्रतिवाद करता है। वह कहता है कि निःशस्त्र और निस्सहाय छात्र कोई कुचक्र नहीं रच सकते और वह गांधार नरेश की वाहीक यात्रा की घटना को खोल देता है जिससे उसका परिणाम यह होता है कि आम्भीक को क्रोध आ जाता है और सिंहरण भी अधिक व्यंग्य पूर्वक बातें करने लगता है। क्रोधित आम्भीक सिंहरण पर तलवार का वार करता है किन्तु चन्द्रगुप्त उसी समय अपनी तलवार से आम्भीक की रक्षा कर लेता है। आम्भीक अन्त में लज्जित होकर अलका के साथ वहां से चला जाता है।

प्रश्नोत्तर ३ चाणक्य तक्षशिला विद्यापीठ का छात्र रहकर गुरुदक्षिणा चुकाने के लिये विद्यापीठ में अध्यापन का कार्य कर रहा था। वह राजनीति और नीतिशास्त्र का प्रकाण्ड पण्डित था। उस समय भारतवर्ष छोटे छोटे राज्यों में विभाजित था साथ ही वे एक दूसरे से द्वेष रखते थे। वह जानता था कि आर्यावर्त के छोटे २ राज्य

यवनों की विशाल वाहिनी का सामना नहीं कर सकते और एक एक करके सभी नष्ट हो जायेंगे। दूसरे उस समय के निवासियों में प्रादेशिक भावनायें अधिक थी। चन्द्रगुप्त अपने को मागध और सिंहरण अपने को मालव समझता था। दोनो में ही व्यक्तिगत तथा प्रादेशिक आत्म सम्मान की भावना अधिक थी। चाणक्य ने उन्हें आत्म सम्मान के वास्तविक रूप को बताया। उसने बताया कि तुम्हारा आत्म सम्मान मागध और मालव तक ही सीमित न रहना चाहिये। तुम्हें अपने को आर्यावर्त की सन्तान समझना चाहिये। देश के सम्मान में अपना सम्मान और अपमान में अपना अपमान समझना चाहिये। उसने कहा कि तुम्हारे आत्म सम्मान की परीक्षा शीघ्र ही भविष्य में होने वाली है क्योंकि यवनों का आक्रमण भारतवर्ष पर होने वाला है सबसे पहले आक्रमण आम्भीक के राज्य तक्षशिला पर होता किन्तु उसने कायरों की भांति आत्म समर्पण कर दिया है यह तुम्हारा और तुम्हारे देश का अपमान है केवल आम्भीक का नहीं। अगला आक्रमण शीघ्र ही किसी और होगा तुम्हें उसका सामना करने के लिये तैयार रहना चाहिये। वह आक्रमण चाहे पुरु के राज्य पर हो मगध पर हो या मालव पर वह किसी एक राज्य पर आक्रमण नहीं किन्तु तुम्हारे देश पर आक्रमण है तुम्हें अपने देश की रक्षा के लिये अपना सर्वस्व निछावर कर देना चाहिये। इस उपदेश का प्रभाव चन्द्रगुप्त और सिंहरण पर ऐसा पड़ा कि पुरु युद्ध के समय उन्होंने भी सिकन्दर का सामना किया और मालव पर आक्रमण करते समय तो सिकन्दर को उन्होंने ऐसा छकाया कि वह भारतीय वीरों की वीरता से पूर्ण परिचित हो गया।

प्रश्नोत्तर ४- आम्भीक और सिंहरण के चरित्रों में बहुत अन्तर है। आम्भीक व्यर्थ ही चाणक्य और सिंहरण के वार्तालाप में बाधा उपस्थित कर देता है। यद्यपि वह स्वयं अपराध कर चुका है और कायरता पूर्वक सिकन्दर को पहले ही आत्म समर्पण कर चुका है फिर भी वह उन पर कुचक्र रचना का अभियोग लगाता है। ब्राह्मण

चाणक्य से अहंकार पूर्वक कहने लगता है कि तुम मेरे अन्न से पलकर मेरे विरुद्ध कुचक्र चला रहे हो।

वह सिंहरण द्वारा सच्ची बात कहने पर शीघ्र क्रुद्ध हो जाता है और कठोर शब्दों में उसे धमकी देने लगता है। जब सिंहरण और अधिक रहस्योद्घाटन करता है तो वह उसे मृत्यु दण्ड की धमकी देता है और अपनी तलवार खींच लेता है। बिना सोचे समझे वह निःशस्त्र सिंहरण पर तलवार का वार कर देता है। यह सब उसके निर्बल चरित्र को बताने वाली बातें है।

सिंहरण एक निर्भीक क्षत्रिय युवक है। उसे देश की रक्षा की चिन्ता है। उसे गांधार नरेश का यह नीच कार्य अच्छा नहीं लगा इसी कारण वह चाणक्य से इस सम्बन्ध मे विचार विमर्श कर रहा था। आम्भीक द्वारा दुर्विनीत बताने पर वह कहता है कि विनम्रता सय निर्भीक होना मालवो का वंशानुगत चरित्र है। वह गुरु की आज्ञा का पालन करने वाला है। अन्याय को वह सहन नहीं कर सकता। आम्भीक द्वारा उसे बन्दी घोषित करने पर वह कह देता है कि मालव कदापि बन्दी नहीं हो सकता। क्रोधाभिभूत आम्भीक की तलवार का वार सहन करके भी वह क्रोधित नहीं होता उसे कुचक्रों से स्वयं अपनी रक्षा के लिये कहता है।

सिंहरण का हृदय देश प्रेम से ओत प्रोत है। उस पर चाणक्य का पूर्ण प्रभाव है इसी कारण वह भी जाति के प्रेम को छोड़कर अपने को आर्यावर्त का सिपाही समझता है। उसको आम्भीक की कायरता पसन्द नहीं। वह कहता है कि गान्धार का पतन मेरा अपमान है क्योंकि गान्धार आर्यावर्त से भिन्न नहीं।

आम्भीक और सिंहरण के चरित्रों मे सिंहरण का चरित्र श्रेष्ठ है और वही अनुकरणीय है। आम्भीक जैसे देशद्रोही और कायर का चरित्र अनुकरण करने योग्य नहीं।

प्रश्नोत्तर ५ चाणक्य की राजनीति साधारण राजनीति न थी उसकी राजनीति दृढ़ सिद्धान्तों पर आधारित थी। उसकी राजनैतिक

विद्वता के कारण ही चन्द्रगुप्त अल्प समय में ही भारत जैसे विशाल साम्राज्य का अधिकारी हो गया। जिस समय चाणक्य ने राजनैतिक जीवन मे प्रवेश किया उस समय भारत की दशा अत्यन्त ही निराशा जनक थी। देश अनेक छोटे २ राज्यों में विभाजित था वे राज्य एक दूसरे से लड़ते रहते थे और सदैव अपने विरोधी को नीचा दिखाने के प्रयत्न मे लगे रहते थे। आम्भीक और पुरु में पहले से ही बैर था जिसक कारण आम्भीक ने पुरु को नीचा दिखाने के लिये सिकन्दर को आत्म समर्पण किया। देश पर विदेशी आक्रमण हो रहा था। ऐसे विकट समय मे कोई सुलझे हुये मस्तिष्क का राजनीतिज्ञ ही देश को भयानक गर्त में जाने से रोक सकता था। चाणक्य को एक योग्य साधन की आवश्यकता थी वह भी उसकी इच्छानुसार ही उसे मिला। चन्द्रगुप्त जैसे वीर को पाकर उसकी भावनायें साकार रूप धारण करने लगी। उस काल में यदि देखा जाय तो देश का मस्तिष्क चाणक्य था और शरीर चन्द्रगुप्त। इन्हीं दो के कारण देश की दशा सम्भली अन्यथा आज न जाने देश का इतिहास क्या होता।

इससे पूर्व कि चाणक्य देश के राष्ट्रों को एक इकाई में बाँधता सिकन्दर का भारत पर आक्रमण हो गया। चाणक्य उस समय साधन हीन होते हुये भी देश की रक्षा के लिये प्रयत्न करता है। वह अपने छात्रों को देश प्रेम का पाठ पढ़ाता है। उनके अन्दर से प्रादेशिक भावनायें निकाल कर एक देश आर्यावर्त की भावनायें भारत है। वह जानता है कि देश के नवयुवक ही राष्ट्र निर्माता हैं उन्हीं के द्वारा देश की रक्षा हो सकेगी। उन्हे अपने आत्म सम्मान की परीक्षा देने का निमंत्रण शीघ्र भविष्य के लिये देता है और वास्तव में सिकन्दर आक्रमण के समय चन्द्रगुप्त और सिंहरण ने अपूर्व वीरता का परिचय दिया। चाणक्य ने ही सिकन्दर की सेना में झूठी बातें फैलाकर विद्रोह जिसके कारण सिकन्दर की सेना ने आगे बढ़ने से साफ मना कर दिया।

चाणक्य इस बात को जानता था कि एक तन्त्र स्थापित होने पर

ही देश शक्तिशाली हो सकेगा इसलिये सिकन्दर के चले जाने पर चन्द्रगुप्त के साथ मिलकर उसने दृढ़ सामराज्य की नींव डाली।

वर्तमान समय में चाणक्य की नीति भारत के लिये आवश्यक है। क्योंकि यद्यपि देश में एक राज्य है फिर भी उसमे कई रियासतें हैं कई प्रदेश हैं। देश के लोगों मे प्रान्तीयता की भावना अधिक है। क्योंकि समय समय पर भाषावार प्रान्त बनाने की आवाजें उठती हैं। लोग अपने स्वार्थ के आगे देश को कम महत्व देते हैं। व्यक्तिगत सम्मान उनके लिये देश के सम्मान से ऊँचा है। इन सब बातों से देश उन्नति नहीं कर सकता। यदि वर्तमान भारत चाणक्य नीति को अपनायेगा तभी उसकी उन्नति होगी। जब देश का प्रत्येक नवयुवक देश प्रेम पर अपना सर्वस्व निछावर करेगा तभी देश का भाग्य सितारा आकाश में चमकेगा।

प्रश्नोत्तर ६ अस्त्रशस्त्र=(अस्त्र और शस्त्र) समाहार द्वन्द्व समास।

वंशानुगत=(वंश आगत) कर्म धारय लुप्त पद समास।

राजकुमार=(राजा का कुमार) सम्बन्ध तत्पुरुष समास।

निरापराध=(निर+अपराध) अव्ययी भाव समास।

क्रोधाभिभूत=(क्रोध से अभिभूत) करण तत्पुरुष समास।

जलद=(जल देने वाला अर्थात बादल) बहुव्रीहि समास।

प्रत्यक्ष=अव्ययी भाव समास

क्षुद्रहृदय=(क्षुद्र है हृदय जिसका) बहुव्रीहि समास।

साधन सम्पन्न=(साधन से सम्पन्न) करण तत्पुरुष समास।

दुर्विनीत=(दुर+विनीत) अव्ययी भाव समास।

अचल=(अ+चल) अव्ययी भाव समास।

१२ नमक का दरोगा

(श्री० मुंशी प्रेमचन्द)

सारांश नमक के विभाग के खुल जाने पर लोग चोरी से इसका व्यापार करने लगे। इस विभाग की नौकरी के लिये सभी

ललचाने लगे। इसकी दरोगागीरी के लिए तो वकील भी उत्सुक होने लगे।

मुंशी वंशीधर थोड़ी सी फारसी पढ़कर नौकरी की खोज में निकले पिता ने समझा दिया कि अपनी आय पर विशेष ध्यान रखना। घर से निकलते ही नमक के विभाग में दरोगा हो गये। पिता प्रसन्न हुए पड़ौसी जलने लगे।

एक दिन रात को वह मीठी नींद मे सो रहे थे कि नाव के पुल पर गाड़ियों का शब्द सुनाई दिया। आने पर मालूम हुआ कि नमक से भरी गाड़ियाँ जिले के बहुत बड़े जमींदार पं० अलोपीदीन की हैं और कानपुर जा रही है।

वंशीधर ने जब गाड़ियों को रोक दिया तब पं० अलोपीदीन आये और ४० हजार तक की रिश्वत देने को तैयार हो गये किन्तु वंशीधर उसे ठुकरा कर पं० अलोपीदीन को हिरासत में ले लिया। अदालत मे पहुंचते ही पं० अलोपीदीन छूट गये किन्तु वंशीधर कर्तव्य पालन के अपराध में नौकरी से अलग कर दिये गये। वंशीधर के पिता इस समाचार से बहुत दुखी हुए।

पं० अलोपीदीन वंशीधर के कर्तव्य पालन से बहुत प्रभावित हुए और उन्हे अपनी रियासत का मैनेजर बनाने के लिये उनके घर पर आये। मुन्शी वंशीधर ने कृतज्ञता प्रकट करते हुए इस गौरव को सहर्ष स्वीकार कर लिया।

प्रश्नोत्तर १ मुंशी वंशीधर के पिता ने उन्हें बताया कि घर की दशा बुरी है। मैं मरणासन्न हूं। लड़कियाँ विवाह करने योग्य हैं। अतः ओहदे की ओर कम और आपकी ओर अधिक ध्यान देना। वेतन पर ध्यान कम देना किन्तु ऊपरी आय पर अधिक। ऊपरी आय परमात्मा देता है अतः उसमें बरकत होती है।

प्रश्नोत्तर २ व ३ नमक के दरोगा पद पर प्रतिष्ठित हो जाने पर मुंशी वंशीधर ने पं० अलोपीदीन की नमक से भरी गाड़ियाँ रोक दीं। गाड़ियों के रुकने पर पं० जी आये। पं० जी का लक्ष्मी पर अखण्ड

विश्वास था। वे कहा करते थे कि लक्ष्मी का स्वर्ग में भी राज्य है। राज्य और नीति उसके दास हैं। उन्होंने मुंशीजी से कहा कि वे घाट के देवता की पूजा अवश्य करेंगे। उन्होंने चालीस हजार तक देने को कहे किन्तु धर्म ने इन चालीस हजार की बड़ी सेना को पैरों तरे कुचल दिया।

प्रश्नोत्तर ४ (अ) धर्म निष्ठता के पुरस्कार स्वरूप बंशीधर नौकरी से अलग कर दिये गये। मजिस्ट्रेट ने तजबीज में लिखा कि पं० अलोपीदीन के विरुद्ध दिये गये प्रमाण निमूल भ्रमात्मक है। उनकी उद्दण्डता और अविचार के कारण एक भले आदमी को कष्ट झेलना पड़ा।

(ब) मुंशी बंशीधर कर्तव्य निष्ठ व्यक्ति हैं। उन्हे धन से धर्म अधिक है राज्य। उन्होंने यद्यपि फारसी की स्वरूप शिक्षा पाई है किन्तु इस शिक्षा में जो उत्तम बातें उनको ही उन्होने अपनाया है व्यर्थ की बातो को निःसार समझ कर छोड दिया है। यद्यपि उनके पिता ने उन्हें ऊपरी आय पर विशेष दृष्टि रखने को कहा था किन्तु पिता का यह उपदेश 'ऊपरी आमदनी ईश्वर देता है। इसीसे उसमें बरकत होती है।' उन पर कुछ भी प्रभाव नहीं डालता है और वे कर्तव्य को ही अपना दृढ़ साथी बनाकर नौकरी ढूँढने चल देते हैं।

बंशीधर कर्तव्य परायण व्यक्ति है। वे निर्भीक और सच्चे अधिकारी हैं। लोभ उन्हे छू नहीं गया है तभी तो वह भी गाड़ियों की टन टनाहट सुनकर मीठी नींद छोड़कर आते है और अलोपीदीन की न तो मिन्नतें और न चालीस हजार की विपुल घबराहट उन्हे व तर्क से च्युतकर पाती है। वे इस अतुल धन राशि पर लात मार कर पं० अलोपीदीन को गिरफ्तार कर लेते हैं।

कर्तव्य पालन करते हुए दंड भोगने में उन्हें आनन्द आता है। नौकरी छूटने पर वे क्षण भर के लिये भी नहीं पछताते हैं। बंशीधर में कृतज्ञता है और सचाई के लिये श्रद्धा है जब वे पं० अलोपीदीन की सचाई देखते हैं तो उनकी रियासत कर मैनेजरी सहर्ष स्वीकार

कर लेते हैं।

६ (क) यह वह समय था जब थोड़े बहुत फारसी पढ़े लिखे व्यक्ति सरकारी पदों पर प्रतिष्ठित हो जाते थे। ये लोग रिश्वत खोर थे। और रिश्वत को अपना हक समझकर उसी पद पर प्रष्ठित होना चाहते थे जिसमे आय बहुत हो। लोगों में चोरबाजारी बढ़ रही थी। रिश्वत देकर गरीब जनता को लूटना और अपना पेट बढ़ाना यही पूँजीपतियों का मुख्य काम था। किन्तु ऐसे पापाचार के समय कुछ वंशीधर जैसे कर्तव्य परायण और निर्लोभ व्यक्ति भी थे जो धन को धर्म के आगे तुच्छ समझते थे।

(ख) (१) हम सदा कर्तव्य परायण बने रहे।

(२) धन को कर्तव्य के सामने तुच्छ समझें।

(३) कर्तव्य पालन का जो भी पुरस्कार मिले उसे सहर्ष स्वीकार करें।

(४) श्रद्धा और उदारता का आदर करें।

प्रश्नोत्तर ७ हिन्दी साहित्य मन्दिर के कुशल पुजारी हिन्दी साहित्य के देदीप्यमान सितारे, उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द्र जी का जन्म संवत १६३७विक्रमी में काशीके समीप पाँडेपुर नामक गाँव में हुआ था। आप जाति के कायस्थ थे। आपका जन्म एक दरिद्र परिवार में हुआ था। अतः आपकी शिक्षा-दीक्षा भली भांति नहीं हो सकी। बड़ी कठिनाई से आप ने बी० ए० पास किया। शिक्षा समाप्त होने पर आपने शिक्षा–विभाग में डिप्टी-इन्स्पेक्टर हो गए। परन्तु असहयोग आन्दोलन में आपने उसे भी छोड़ दिया।

सन् १६०१ से आपने लिखना आरम्भ किया। पहले आप उर्दू में कहानियाँ कानपुर के प्रतिष्ठित पत्र "जमाना" में बड़े आदर से निकलती थी।

सन् १६१५ से आपने हिन्दी में पदार्पण किया। आपने आते ही कहानी-क्षेत्र में क्रान्ति उपस्थित कर दी। आपने कहानी तथा उपन्यास लिखने के साथ ही साथ "माधुरी" तथा "मर्यादा" नामक

पत्रों का भी सम्पादन किया। कुछ समय पश्चात आपने बनारस में सरस्वती-प्रेस की स्थापना की तथा 'हंस" मासिक और 'जागरण' साप्ताहिक पत्र निकालने लगे। कुछ दिनों तक आपने सिनेमा-संसार में भी काम किया आपने जीवन पर्यन्त साहित्य सेवा की तथा अन्त में सन १९३६ में स्वर्गवासी हो गए।

प्रेमचन्द्रजी हमारे प्रतिनिधि लेखक हैं। युग की समस्त भावनाएँ आपकी कहानियो तथा उपन्यासो मे विद्यमान हैं। आपने राजा, अमीर, गरीब, किसान, मजदूर, भिखारी, नौकर आदि सभी वर्ग का चरित्र चित्रण बड़ी सफलता-पूर्वक किया है। आपने दीन-हीन को ही अपनी कहानी का विषय चुनकर, पीडित मानवता के प्रति अपनी सहानुभूति दिखलाई है।

उपन्यासों की अपेक्षा आपकी कहानियो का अधिक प्रचार है। आपके कथानक, चरित्र चित्रण एवं कथोपकथन सभी सफल है। आपके कथोपकथन बड़े स्वाभाविक है। आपके चरित्र-चित्रण में मनोवैज्ञानिकता रहती है। आपके पात्र कठपुतलियां न होकर बड़े ही सजीव हैं।

आप भावार्थ को लेकर चलते है, जो आगे चलकर आदर्श का रूप धारण कर लेते है। आप समाज की समस्याओं को दिखला कर उसका हल भी बता देते है।

उर्दू साहित्य से हिन्दी में पदार्पण करने के कारण आपकी भाषा में उर्दू शब्दों का मिश्रण है। आपकी भाषा में चुलबुलेपन और चटपटेपन की विशेषता है। मुहावरों के सुप्रयोग से भाषा मधुर एवं प्रवाहपूर्ण हो गई है। आपकी उपमाएँ हृदय-ग्राही होती है।

आपकी कृतियाँ मौलिकता के कारण इतनी लोकप्रिय हो गई हैं कि उनका अनुवाद भारतीय भाषाओं मे ही नहीं, वरन विदेशी भाषाओं तक में हो गया है। आपके निधन से जो संसार को क्षति हुई, उसकी पूर्ति अभी तक नहीं हुई।

१३ गांधी जी का पुण्य-स्मरण

सारांश यह पाठ श्री पं० माखन लाल चतुर्वेदी जी द्वारा उसी वर्ष का लिखा हुआ है जिस वर्ष महात्मा जी का निधन हुआ था। उनके अनुसार महात्मा जी एक बहुत बड़े भविष्य द्रष्टा थे वे एक ऋषि थे, वीर पुरुष थे और कवि भी थे। महात्मा जी प्रत्येक वस्तु पर भली भाँति विचार करते थे विचार करने के पश्चात् उसे करके देखते थे इसके पश्चात् वे कुछ कहते थे। संसार के लिये जो करुणा की कहानी है वह महात्मा जी की वाणी में करुणा न होकर पुरुषार्थ बन जाती थी। उनकी लेखनी से भाषा की सुन्दरता बढ़ती थी और देश को कल्याण कारी मयी दर्शाती थी।

महात्मा जी देश की दलित जातियों को देखकर अत्यन्त दुखी होते थे। यद्यपि महात्मा जी एक सर्वत्यागी ऋषि की भांति थे किन्तु उनकी बात राजा की आज्ञा की भांति जनसमुदाय द्वारा पालन की जाती थी। उनकी बात के विरुद्ध कोई कुछ न कह सकता था। धन-वान न होते हुये भी उनकी एक आज्ञा पर सैकड़ों संस्थाओं की रक्षा के लिये धन प्राप्त हो जाता था।

हमारे देश की भूमि से एक ऐसी महान आत्मा उठ गई जिसमें असीम प्रेम था जो दुखियो का सहायक था जिसकी एक गर्जना से संसार के साम्राज्य कांपने लगगये थे।

मृत्यु-समय महात्मा जी ८० वर्ष के थे वे ८० वर्ष के जीवन की घटनायें प्रत्येक व्यक्ति को प्रिय हैं। वे इस प्रकार नहीं जैसे कि केवल छोटे बच्चों के कार्य अच्छे लगते हैं और बड़े होने पर उनमें वह मधुरता नहीं रहती। महात्मा जी में देश की आत्मा का समावेश था हमने उसी महान आत्मा को खो दिया।

पृष्ठ ७७ शब्दार्थ द्रष्टा=देखने वाला। क्रिया से तोलता था= कार्य रूप में करके उसके उचित अनुचित पर विचार करता था। लोक जीवन=सांसारिक जीवन। देश का भाग्य लिखती थी=भविष्य

में होने वाली घटनाओं को लिखती थी। दलित पीढ़ियां=वे जातियां जो कई पीढ़ियों से अत्याचार सहन करती आ रही हैं और अब भी नीच गिनी जाती है। अन्तःकरण=हृदय। दुलराई जाती=प्रीत पूर्वक सम्मानित की जाती। चीत्कार=करुणा क्रन्दन, दुख भरा स्वर। मुद्रा स्वरूप, आकृति। मनुहार=आभास, झांकी मानव काव्य=मनुष्य के रूप में काव्य।

इस वर्ष भारतवर्ष ने ... ...उसे हमने खो दिया

व्याख्या--यह गद्यांश श्री पं माखन लाल चतुर्वेदी जी द्वारा लिखित गांधी जी का 'पुण्य स्मरण' नामक पाठ का है। गांधी जी के निधन पर चतुर्वेदी जी अपने उद्गार प्रकट करते हुये कहते हैं कि

इस वर्ष भारतवर्ष में एक महान दुर्घटना हुई है वह यह है कि हमने अपने राष्ट्र पिता महात्मा गांधी को खो दिया वे एक महान व्यक्ति थे जो आन्तरिक दृष्टि द्वारा प्रत्येक वस्तु का निरीक्षण करते थे वे एक ऋषि तथा एक वीर पुरुष थे। यद्यपि उन्होंने कविताओं की रचना नहीं की किन्तु वे स्वयं ही काव्य और उनकी वाणी कविता थी प्रत्येक विषय पर वे भली भांति विचार करते थे उसे क्रिया रूप में करते थे इसके पश्चात् उसे अपने मुख से कहते थे। वे स्वयं पुरुषार्थी थे। दूसरो की दया पर निर्भर रहना अथवा अपने मुख से करुण भरे शब्द निकालना न जानते थे। उनकी वाणी में वह शक्ति थी कि उससे करोड़ों निराश प्राणियों को कार्य करने की शक्ति प्रदान करती थी। हमने अपने बीच से ऐसे महान व्यक्ति को मिटा दिया।

जिसके नेत्रों में ... . भूमि ने खो दिया।

महात्मा जी के नेत्रों को देख कर यह प्रतीत होता था कि इन नेत्रों ने करोड़ों व्यक्तियों के दुखों को देखा है और उनके दुख की आवाज अभी तक इसमें बसी हुई है। उनकी चलती हुई सांस उन व्यक्तियों की करुणा को प्रगट करती थी जो अपनी आवश्यकता की वस्तुओं के अभाव में दुःखी जीवन व्यतीत कर रहे थे। उनकी मुखाकृति इस बात की द्योतक थी कि वे इस विश्व की असमानता को सहन नहीं

कर सकते और उसे बदल देना चाहते हैं। उनका स्वर साधारण स्वर नहीं था उसमें संसार के बड़े बड़े साम्राज्यों को कंपा देने वाली शक्ति थी। हमारे देश ने ऐसी महान आत्मा को अपने देश से खो दिया। पृष्ठ ७७ शब्दार्थ दिवंगत=स्वर्गीय। युग निर्माता=युग बनाने वाले। वर्चस्व=तेज, कान्ति। प्रतिबिम्ब=परछाही, छाया। बिम्ब =वास्तविक रूप।

सच तो यह है .... गांधी को खो दिया।

महात्मा जी के कारण भारतवर्ष का स्थान सभी देशों मे ऊँचा हुआ। उन्हीं के कारण परतन्त्र भारतवासी विदेशों में सम्मान प्राप्त करते थे। वे इस देश की कान्ति थे। जिसके आगे संसार नतमस्तक होता था। उनकी वाणी देश की वाणी थी। साहित्य को यदि प्रति-बिम्ब मान लिया जाय तो महात्मा जी वाणी रूपी शीशे में दिखाई देने वाली वास्तविक वस्तु थे। हमारे देश ने ऐसे ही महान व्यक्ति को खो दिया।

प्रश्नोत्तर १ महात्मा गांधी भारतवर्ष के ही नहीं विश्व के नेता थे। परतन्त्र भारत को स्वतन्त्रता दिलाने वाले थे। इस कारण वे राष्ट्र पिता कहलाये। वे स्वतन्त्रता दिलाने वाले भौतिक साधन की भाँति नहीं थे वल्कि देश की आत्मा थे। उनका मस्तिष्क निरन्तर देश की समस्याओं पर विचार किया करता था। उनकी वाणी करोड़ों निरस-हाय व्यक्तियों का पुरुषार्थ बन जाती थी। उनके अन्दर अपनी एक आत्म शक्ति थी विश्वास था और कार्य शक्ति थी। उनके द्वारा लिखे जाने वाले लेख उनके हृदय के विचारों को प्रगट करते थे जिनके लिये उनकी आत्मा रो रही थी। देश की नीच समझी जाने वाली जातियों के प्रति होने वाले अन्याय से उनका हृदय रो पड़ता था।

महात्मा जी देश की आत्मा थे। उनके नेत्रों से देश के करोड़ों दुखियों का क्रन्दन दृश्य सन्मुख आ जाता था, उनकी मुखाकृति संसार की अव्यवस्था से चिन्तित दिखाई देती थी। वह इस बात को प्रगट करती थी वह इस संसार के पीड़ितों को सान्त्वना प्रदान करने

के लिये विश्व की व्यवस्था को बदल देना चाहते थे। उन्होंने अपना सारा जीवन मानव जाति की सेवा में ही व्यतीत किया।

गांधी जी का सिद्धान्त किसी देश विशेष की सेवा न था। विश्व को अपना कुटुम्ब समझते थे और संसार के मनुष्यों की तथा प्राणी पीड़ित जनता की पुकार उन्हें विकल कर देती थी। जब तक वे जीवित रहे संसार को सत्यपथ का दिग्दर्शन तथा दुःखियो की सहायता करते रहे। उनकी सेवा त्याग और तपस्या का ही फल था कि वर्ष अपनी भयानक विपत्तियो से कुशलता पूर्वक निकल सका और आज भी उनकी प्रेरणा मानव समाज को उचित मार्ग का प्रदर्शन करा रही है। उनके निधन से भारतवर्ष को ही नहीं सारे संसार को महान हानि हुई है।

प्रश्नोत्तर २- हमारे पूर्व पुरुषों में रामकृष्ण ऐसे महापुरुष हुए हैं जिन्होने बड़ी बड़ी राज क्रान्तियाँ की हैं। किन्तु उनकी यह क्रान्ति सशस्त्र थी जिसमें लाखों करोड़ों प्राणियों का संहार हुआ था। किन्तु महात्मा गांधी ने जो क्रान्ति की वह अहिंसात्मक थी. जिसमें देश को कम से कम हानि हुई थी।

महात्मा बुद्ध भी ऐसे महा पुरुप हुये जिन्होंने अहिंसा का आश्रय लेकर देश की दुर्दशा सुधारने का प्रयत्न किया था किन्तु गांधीजी की क्रान्ति जैसी उनकी क्रान्ति सर्वतोमुखी नहीं थी। यह अहिंसात्मक क्रान्ति महात्मा जी की वह विशेपता है जो किसी अन्य महापुरुष में नहीं पाई जाती है।

प्रश्नोत्तर ३ हम राष्ट्र पिता गांधी को अनहोना मानव और काव्य मानव इस लिये कह सकते हैं कि वे चिन्तन की घड़ियों को जब क्रिया से तोलते थे तब वाणी से बोलते थे। लोक जीवन की करुणा के कोटि कोटि स्वर पुरुषार्थ के संकेत बनकर उनकी वाणी में फूट पड़ते थे।

प्रश्नोत्तर ४ श्री माखन लाल जी चतुर्वेदी हिन्दी के उन लब्ध प्रतिष्ठ विद्वानों में से हैं जिन्हों का गद्य पद्य दोनों पर समानाधिकार

है। आपका जन्म चैत्र शुक्ला ११ संवत १६४५ वि० को हुआ था। नार्मल की शिक्षा प्राप्त कर अध्यापकी आरम्भ कर दी। तदन्तर अंग्रेजी का ज्ञान प्राप्तकर पत्रकारका स्वतंत्र जीवन आरंभ कर दिया। आपका 'कर्मवीर' हिन्दी के अन्य पत्रों की ही भाँति हिन्दी जगत में सम्मानित है। आप भारत भक्त देश सेवक भावुक और प्रतिभाशाली लेखक और कवि हैं। 'साहित्य देवता' नामक आपका एक सुन्दर गद्य काव्य है।

आपकी गद्य में भाषा तथा भावों का अद्भुत समन्वयहिता है। वाक्य छोटे छोटे होते हैं किन्तु अर्थ की गम्भीरता लिये होते हैं। समासों का प्राय: अभाव होता है। यत्र तत्र 'कलम' 'जरूरतमंदों' इत्यादि उर्दू के चलते शब्द भी पाये जाते है। कहीं कहीं आपने 'मनुहार' इत्यादि अप्रसिद्ध शब्दों का भी प्रयोग किया है।

प्रश्नोत्तर ५ (१) इस वर्ष······खो दिया प्रधान उपवाक्य
(२) चिन्तन की······ तोलता था -विशेषण

उपवाक्य द्रष्टा की विशेषता खो दिया की विशेषता बताता था। नं १ में तव वाणी से बोलता था। क्रिया विशेषण 'तोलता था' क्रिया की विशेषता है नं २ में सम्पूर्ण वाक्य मिश्रित।

प्रश्नोत्तर ६ अनहोना विशेषण, 'होना' क्रिया से अन उपसर्ग लगाकर।

दलित विशेषण, दलना क्रिया से त प्रत्यय लगाकर।

माधुर्य भाववाचक संज्ञा, मधुर विशेषण से 'य' प्रत्यय लगा कर

जरूरत मन्द विशेषण जरूरत से 'मन्द' प्रत्यय लगाकर।

सर्वस्व विशेषण 'सर्व' सर्वनाम से।

प्रतिबिम्बित प्रतिबिम्ब से त लगाकर विशेषण बना है।

प्रश्नोत्तर ७ देखिये पहिली व्याख्या।

१४- मां गंगे

एक बार इस पाठ के लेखक महोदय अपनी मां तथा दो छोटी बहिनों के सहित गंगा स्नान के लिये गये। उस समय उनकी अवस्था छोटी थी। उन्होंने गंगा के विषय में पहले से ही बहुत कुछ सुन रक्खा था। व्यास तथा वाल्मीकि आदि ऋषियों द्वारा लिखित महाभारत तथा रामायण में भी गंगा का वर्णन पढ़ा था। इनको पढ़कर ज्ञात हुआ कि उस काल में गंगा जी आजकल की भांति पतली धारा में बहने वाली न थी। उस समय वे प्रखर धारा में बहती थी तथा उसके किनारे पर ज्ञानी ऋषि कुटियाँ बनाकर रहते थे। जिस प्रकार बालकों को मां गोदी में बिठालकर नहलाती है उसी प्रकार वे भी तेरी गोदी में स्नान किया करते थे।

लेखक महोदय घर से गाडी में बैठ कर गंगा स्नान के लिये गये थे। यह उनका प्रथम अवसर था जब कि उन्हें गंगा माता के दर्शन होते इस कारण वे मार्ग में गंगा का दर्शन करने के लिये बड़े उतावले हो रहे थे। एक बार तो वे ये सोचकर कि अब गंगा दूर नहीं गाड़ी से उतर कर पैदल ही आगे आगे भागने लगे क्यों कि उन्हे बैलों का धैर्य पसन्द न था। लेकिन दूर तक चलकर भी गंगा नदी न आने के कारण वे थक कर फिर उसी मे बैठ गये। दूसरे दिन प्रातःकाल उन्हें गंगा नदी के दर्शन हुये और वह दौड़कर उससे जा मिले।

गंगा नदी उन्हे मिल तो गई लेकिन उसे देखकर उन्हें बड़ी निराशा हुई क्यों कि उन्होंने उसके जिस रूप की कल्पना की थी वह रूप उन्हे दिखाई न दिया। वहाँ का दृश्य तो अत्यन्त ही कारुणिक था। वहाँ पर ऋषियों के स्थान पर अनेक धूर्त हृष्ट पुष्ट लोग भिक्षा मांग रहे थे और अपने को गंगा का पुत्र बतला रहे थे। गंगा नदी वह लहलहाती हुई गंगा नदी न थी जैसी कि उन्होंने महाभारत तथा रामायण में पढ़ी थी। वहां पर वह प्राकृतिक सौंदर्य न था जिसे देख कर हृदय पुलकित हो जाता। वहां पर ज्ञानी ऋषियों के स्थान पर धूर्त और

भक्कार लोग बैठे थे। यज्ञ और हवन मन्त्रों के स्थान पर उनके भिक्षा माँगने के स्वर सुनाई दे रहे थे और वेदी की हव्या ज्योति के स्थान पर एक घना अन्धकार था। अब तो उस क्षीण धारा से उठने वाला स्वर करुणा से भरा हुआ था।

पृष्ठ ७६ शब्दार्थ निखरा हुआ = स्वच्छ। मदमाती = मतवाली, मस्त स्त्री। प्राणोत्तेजन = प्राणों मे उत्तेजना उत्पन्न कर देने वाला। जीवन प्रद = जीवन प्रदान करने वाला। भवताप = संसार के दुःख। अग्नि तप्त = जले हुये। प्रातःश्री = प्रातःकाल की छवि। प्रतिविम्बित करती हुई = झलकाती हुई। प्रभाती = प्रातःकाल का गीत। विनिद्र होकर = जाग कर। प्रफुल्ल = प्रसन्न। ज्ञान गरिमा = ज्ञान की गुरुता। मोहान्ध = मोह में पड़कर सब कुछ विस्मृत कर देने वाला। अतीत = बीते हुये। उमङ्ग = उत्साह।

जब से होश .... मुनि हो जाते थे।

यह गद्यांश श्री आचार्य चतुरसेन शास्त्री द्वारा लिखित 'माँ गंगे' नामक पाठ का है। शास्त्री जी गङ्गा के विषय मे कहते हैं कि जब से मेरी अवस्था कुछ समझने योग्य हुई है तब से मैं तुम्हे इसी प्रकार सूखी देखता आ रहा हूँ। मुझे यह ज्ञात न था कि तुम कभी हरी भरी और सुन्दर भी रही हो। महर्षि व्यास और वाल्मीकि द्वारा रचित महाभारत और रामायण को पढ़ने पर ज्ञात हुआ कि तुम्हारा रूप सदैव से ही है। उन्होंने तुम्हारे रूप का वर्णन किया। उससे ज्ञात हुआ कि तुम मोती की भांति सौंदर्य शालिनी थी और रङ्ग चान्दी की भांति स्वच्छ था। स्वर में गम्भीरता थी और चाल मे मतवाला पन था। जिस प्रकार नव विवाहिता स्त्री की हंसी मन को प्रसन्न कर देती उसी प्रकार तुम्हारा स्वच्छ निर्मल जल मन को प्रसन्न कर देता है। तुम्हारा जल पहले अमृत जैसा जीवन दायक था। तुमसे स्नान करने से वैसा ही आनन्द होता था जैसा माता की गोद में। और तुम्हारे किनारे आकर वे मुनियों जैसे पुण्यात्मा बन जाते थे।

पृष्ठ ८१ अतीत = भूतकाल की। हौंस = बड़ी इच्छा। आकां-

छित=प्रकाशित। ज्योतिमयी=प्रकाशमान्। सफेद हो गई=धूल रहित हो गई।

पृष्ठ ८२— रणपोत=युद्ध के जहाज। विजयोल्लास=विजय की खुशी। मुँह वाये=दीनता करने वाले। उपत्यका=तलेटी।

पृष्ठ ८२ नीलाम्बर=नीला कपड़ा (नीला जल)। परिधान=वस्त्र। वीतराग=राग हीन। प्रेमोन्मत्त=प्रेम से मतवाले। बटुक=ब्रह्मचारी। द्रव्य ज्योति=सामग्री के जलने से उठने वाला प्रकाश। नरोग्य सुधा=नीरोग रूपी अमृत। भास्कर=सूर्य। देवलोक=स्वर्गवास। अन्तर्धान=छिपना; (मृत्यु)। श्री हीन=कान्ति हीन।

व्याख्या प्रयाग की ······ वेदना की सिसकारी।

शास्त्री जी गंगा की दुर्दशा का वर्णन करते हुए कहते हैं कि हे गंगे, क्या तुम्हें उस समय की याद है जब प्रयाग में यमुना और सरस्वती का तुमसे संगम हुआ था। तुम्हारी धारा सफेद, यमुना की नीली और सरस्वती की धारा तो यमुना में ही मिल गई थी। उस समय विरक्त तथा जटा जूट धारण करने वाले ऋषि मुनि तुम्हारे तटों पर सुख पूर्वक विचरण किया करते थे। ये लोग प्रेम से मस्त हो कर तुम्हारे पवित्र जल में बहुत देर तक स्नान करते थे। विद्यार्थी तुम्हारे कलकल मय तटों पर सामवेद का पवित्र गान करते थे। मुनियों की वेदी से सामग्री के जलने से जो दिव्य प्रकाश होता था उससे सारी दिशाएँ प्रकाशमान हो जाती थी। तुम्हारे किनारे जो यज्ञ होते थे उनसे सुगन्धित वायु भारत को नीरोग बनाती थी। सूर्य अपने तेज प्रकाश से लोगों का नया जीवन देते थे। किन्तु अब तुम्हारा वह रूप नहीं रहा। अब सरस्वती के तो दर्शन ही नहीं होते और यमुना की भी पहली जैसी शोभा नहीं रही है। अब तुम्हारी शोभा तो नष्ट हो गई है केवल तुम्हारा श्री हीन रूप ही रह गया है।

प्रश्नोत्तर १ देखिये पाठ का सारांश।

प्रश्नोत्तर २ प्राचीन काल में गंगा में मोती जैसा अथाह जल था। यह जल अमृत के समान फल दायक था। तुम्हारे तट के

निवासी ऋषि मुनि तथा विरक्त थे। संसार के दुखों से ऊब कर जो लोग तुम्हारे तट पर शक्ति पाने के लिये आते थे। ऋषि बन जाते थे।

प्रश्नोत्तर ३ आचार्य चतुर सेन शास्त्री हिन्दी के लब्ध प्रतिष्ठ और ख्याति प्राप्त लेखक हैं। आपका जन्म सं० १६४८ मे सिकन्दराबाद जिला बुलन्दशहर मे हुआ था। आजकल आप दिल्ली में रहकर साहित्य सेवा कर रहे है।

आपकी भाषा परिमार्जित एवं व्यावहारिक है। पाठक को अपनी ओर आकृष्ठ कर उसके हृदय को गुदगुदाते चलना और उसके मनोरंजन के साथ साथ अपने भावो से अवगत कराते जाना आपकी लेखनी की सफलता है। आप अपनी हृदयस्थ भावनाओं के उथल पुथल का मनोरम चित्र खींचने में बहुत सफल हुए हैं। आपकी व्यथाओं को पढ़कर पाठक कहीं तड़पता है, कहीं रोता है और कहीं हँसता है। पाठक को विश्वास हो जाता है कि वह अपने किसी अभिन्न हृदय के साथ बात कर रहा है। इस प्रकार की शैली में वैक्तिकता की स्पष्ट छाप रहती है।

आप धैर्य को धीरज लिख कर भाषा के चलते पन को स्वीकार करना ही उचित समझते है हिन्दी उर्दू को जो गंगा जमुनी रूप हमें श्री प्रेमचन्द जी की रचनाओं मे मिलता है, वही श्री शास्त्री जी की भाषा में भी पाया जाता है।

संक्षेप में शास्त्री जी उन लेखकों में से हैं जिन्होंऐ भाषा के सजाने में ध्यान कम दिया है किन्तु उसके रूप के स्थिर करने में अधिक। आपने कहीं कहीं उपमा उत्प्रेक्षा आदि से भाषा के सजाने का भी प्रयत्न किया है किन्तु इसमे आपको 'प्रसाद' जैसी सफलता नहीं मिली है। सरल भाषा, छोटे छोटे वाक्य, शब्द चयन सुन्दर और वाक्य योजना आपकी वह विशेषता है जो परवर्ती लेखकों के लिए ग्राह्य और अनुकरणीय हो सकती है।

प्रश्नोत्तर ४ जर्जरित = विशेषण, जरा से त प्रत्यय लगाकर,

तथा द्वित्व करके बना है।

थकावट = भाव वाचक संज्ञा 'थकना' क्रिया से 'वट' प्रत्यय लगा कर बना है।

आलोकित = विशेषण-आलोक से 'त' प्रत्यय लगा कर बना है।

सिसकारी = संज्ञा 'सिस कारना' क्रिया से 'ई' प्रत्यय लगा कर बना है।

प्रश्नोत्तर ५ ज्ञान-गरिमा = ज्ञान की गरिमा सम्बन्ध तत्पुरुष।

उद्योग धन्धा = उद्योग और धन्धा द्वन्द्व।

नीलाम्बर = नीला जो अम्बर कर्म धारय।

प्रेमोन्मत्त = प्रेम से उन्मत्त करण तत्पुरुष।

१५ किताबें

संसार में ऐसी अनेक वस्तुएँ हैं जो प्रतिदिन दिखाई देती हैं किन्तु हम उन्हें साधारण समझ कर उन पर विचार तक नहीं करते। पुस्तकें भी उन्हीं वस्तुओं में से एक है। जो हमें यह कहती हुई प्रतीत होती है कि "हे मनुष्यों ! तुम हमें पढ़ो और भली भाँति मनन कर उसी के अनुसार चलो। इससे तुम्हारा जीवन सफल हो जायगा।"

पुस्तकों में संसार का ज्ञान-भण्डार छिपा हुआ है। वह सफलता का मार्ग दिखाने वाली है। पुस्तकों में संसार के श्रेष्ठ मस्तिष्कों के विचार भरे हुए हैं जो मोतियों से भी अधिक मूल्यवान है।

पुस्तकों के लिखने वाले संसार छोड़ कर चले गये। किन्तु उनका नाम आज भी अमर है। उनके लिखे वाक्य पुस्तकों में आज भी हमें उनके जीवित होने का सन्देश सुनाते हैं। गद्य और पद्य के रूप में उन्होंने अपनी हँसी दुख के आँसुओं को प्रकट किया जो आज तक भी हमें हँसाते और रुलाते हैं।

पुस्तकें अत्यन्त ही महत्वपूर्ण वस्तु है जिनके अभाव में संसार के लोग अन्धकार का ही अनुभव करेंगे। सभ्यता और संस्कृति की उन्नति पुस्तकों द्वारा ही हुई है। इसी कारण कारलायल ने कहा था

"भारत के राज्य और शेक्सपीयर की पुस्तकों में से मैं राज्य को ठुकरा कर पुस्तकों को पसन्द करूँगा"।

पुस्तकों द्वारा ही हम संसार के आदि काल से लेकर अब तक के हाल को जान पाते हैं। वे देश की उन्नति और अवनति का हाल बताती हैं। हमारा कर्तव्य है कि हम अच्छी पुस्तकें पढ़ें और उन पर भली भाँति विचार करें।

पुस्तकों के पढ़ने से स्वर्गीय आनन्द का अनुभव होता है। पुस्तकालय भी एक स्वर्ग है। उस स्वर्ग के आनन्द का अनुभव तभी हो सकता है जब कि श्रेष्ठ पुस्तकों का अध्ययन किया जाय। बुरी पुस्तकों को पढ़ने से उस स्वर्ग के सुख का अनुभव नहीं हो सकता जो कल्पना से परे हैं। बुरी पुस्तकों के पढ़ने से तो न पढ़ना ही अच्छा है।

शब्दार्थ पृष्ठ ८४ – हाथ लगे=प्राप्त हो जाय। मन की गिरह में बाँध ले=हृदय मे धारण कर ले। कामयाबी=सफलता। खुशनसीब=भाग्यशाली। खातिर=लिये।

व्याख्या किताबें दुनिया की ....कहानियाँ हैं।

यह गद्यांश श्री सुदर्शन जी द्वारा लिखित "किताबें नामक पाठ से लिया गया है। लेखक पुस्तकों की महत्ता बताता हुआ कहता है: -

मनुष्य विचारशील प्राणी है। उसके अपने सुन्दर विचारों को स्थायी बनाने के लिये पुनः पुस्तकों के रूप में एकत्रित किया जो हमारी उन्नति का मार्ग दिखाती हैं। पुस्तकों को यदि कृषि मान लिया जाय तो उससे उत्पन्न होने वाले अनाज मोतियों से बढ़ कर है। जिस भाग्यशाली को उनकी प्राप्ति हो जाती है वह संसार के बड़े-बड़े विद्वानों के मस्तिष्क को उत्तम विचारो की सुन्दर पुस्तकों का रूप दे देते है ये विचार हमारी उन्नति मे बड़े सहायक होते है। जिस प्रकार प्रकाश से हम अच्छे बुरे दोनों रास्ते देख कर अच्छे मार्ग पर ही चलते हैं उसी प्रकार पुस्तकें भी हानिकारक तथा लाभ दायक दोनों मार्गों को दिखा देती हैं और यदि हम

बुद्धिमान होते हैं तो उनकी शिक्षा मान कर लाभ दायक मार्ग पर ही होते हैं। पुस्तकों के पढ़ने से हमारा जीवन सुखमय और आनन्दमय हो जाता है। पुस्तकों के पढ़ने से हमें प्राचीन काल तथा आधुनिक काल की सब घटनाओं का ज्ञान हो जाता है। पुस्तकों मे हमारा प्राचीन इतिहास भरा पड़ा है।

पृष्ठ ८५ इन लोगों ने ... ...आज भी गीले हैं।

ये पंक्तियाँ श्री सुदर्शन द्वारा लिखित 'किताबें' नामक पाठ से लिया गया है। लेखक पुस्तकों की महत्ता बताते हुए कहता है कि पुस्तकों के लेखकों ने वे उत्तम-उत्तम विचार लिखे हैं जो कभी भी समाप्त नही होंगे। ये विचार उन बागों के समान हैं जिसमें कभी पत झड़ नही आता अर्थात् जो सदा नये रहते हैं और हमे सदा आनन्द देते रहते है। ये विचार ऐसे हैं जिन्हे कोई भी नष्ट नहीं कर सकता। साधारण मनुष्यों का रोना और हँसना उनकी उनके रोने हँसने के साथ ही समाप्त हो जाता है अर्थात् वह चिर काल तक स्थायी नहीं रहता है किन्तु विद्वानों ने जो हास्यरस या करुण रस की रचनाएँ की हैं वे आज भी उतनी ही प्रभाव डाल रही है जितनी कि भूत में प्रभाव शालिनी थीं।

पृष्ठ ८६ आँखें खुलती हैं=ज्ञान होता है। शोला=चिनगारी। अमन=शान्ति। हेच=तुच्छ।

पृष्ठ ८७ व्याख्या किताबें हमको ...... सफल हुआ।

किताबों के पढ़ने से हमको पता लगता है कि प्राचीन काल में संसार की क्या दशा थी और लोग किस प्रकार का जीवन बिताते थे। उसने किस प्रकार ज्ञान प्राप्त किया और किस प्रकार शिक्षा का प्रचार किया। हमें यह भी पता लगता है कि उसने प्रकृति पर किस प्रकार विजय प्राप्त की।

पृष्ठ ८८ कुतुबखाना=पुस्तकालय। परिस्तान=स्वर्ग।

व्याख्या- पुस्तकालय............सुन सकते हैं।

पुस्तकालय उस स्वर्ग के समान है जिस पर कभी विपत्ति नहीं

आ सकती। पुस्तकालय को कोई भी पढ़ा लिखा व्यक्ति नष्ट करना नहीं चाहता है। पुस्तकालय स्वर्ग से भी बढ़कर है क्योंकि इसमें सदा ज्ञान का प्रकाश तथा मनोरंजन होता रहता है। इस स्वर्ग में बसन्त का आनन्द बड़ी सरलता से लिया जा सकता है। इस स्वर्ग में बैठ कर बड़े बड़े महापुरुषों और विद्वानो के विचारो से अपने मन को प्रसन्न कर सकते है।

प्रश्नोत्तर १- जबसे मनुष्य जाति संसार मे उन्नति की ओर अग्रसर हुई तभी से उसने अपने श्रेष्ठ विचारो को स्थायी बनाने का प्रयत्न किया है यही कारण था कि प्राचीन काल से ही पत्तों आदि पर उन्हें लिखकर संगृहीत किया। विचारों के उसी संग्रह ने किताबों का रूप धारण कर लिया है।

किताबो का सम्बन्ध व्यक्ति, समाज तथा राष्ट्र से है। किताबो के द्वारा मनुष्य अपनी शारीरिक, बौद्धिक और आत्मिक उन्नति कर सकता है। महान् पुरुषों के विचार इस कार्य मे उसकी सहायता करते हैं। किताबें निराश व्यक्ति को आशा का सन्देश दे सकती हैं। किताबें हमें प्राचीन काल की उन घटनाओं से अवगत कराती है जिनके कारण समाज की उन्नति अथवा अवनति हुई थी। राष्ट्र के उत्थान पतन की कहानियाँ किताबों में भरी पड़ी हैं। जातियों की भूलों तथा उनके दुष्परिणामों एवं भलाईयों तथा उसके सुपरिणामों का विस्तृत व्यौरा किताबों मे इस सुन्दर रूप से अङ्कित रहता है कि मनुष्य उसे देखकर बुराइयों से बच सकता है और भलाइयो की ओर प्रवृत्त हो सकता है।

किताबें ज्ञान का भण्डार हैं। यदि किताबें नष्ट हो जांय और मनुष्य अपना पढा पढ़ाया सब भूल जाय तो वह बहुत समय तक के लिये अज्ञान में पड़ जायेगा।

वर्तमान युग की उन्नति का सारा श्रेय किताबों को ही है। किताबें बताती हैं कि मनुष्य किस प्रकार संघर्ष कर उन्नति की ओर बढ़ता गया। जातियों के उत्थान पतन का इतिहास किताबों में भरा

पड़ा है।

प्रश्नोत्तर २ सारांश देखिये।

प्रश्नोत्तर ३ सारांश देखिये।

प्रश्नोत्तर ४ श्री सुदर्शन जी का जन्म १८९५ में पंजाब में हुआ। आपने बी. ए. तक शिक्षा प्राप्त कर कहानी क्षेत्र में पदार्पण किया पहले आप उर्दू में लिखा करते थे। हिन्दी आन्दोलन से प्रभावित होकर आपने हिंदी में लिखना आरंभ किया। आपकी कहानियां हिन्दी के पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं। 'सुदर्शन सुधा' और 'तीर्थ यात्रा' इत्यादि आपके कहानी संग्रह हैं।

आप भी प्रेमचन्द जी की भाँति "कला के लिये कला" के पक्षपाती न होकर "कला जीवन के लिये" के पक्षपाती हैं। 'समाज सुधार देश प्रेम और भारत के उज्ज्वल भविष्य को लेकर आपकी कहानियाँ लिखी गई हैं। आपकी कहानियों की कथावस्तु बहुत ही रोचक है। कहानी पढ़ने के बाद पाठक मनोरंजन के साथ शिक्षा भी लेता है। उसे समाज के निर्माण की चिन्ता होती है और वह समाज को अपने से अभिन्न समझने लगता है। आपके कथोपकथन का ढंग नाटकीय पद्धति को लिये हुये है।

चरित्र चित्रण करने में तो आप बहुत ही सफल हुये हैं। सभी पात्रों का चित्रण मनोवैज्ञानिकता लिये हुये है। श्री सुदर्शन जी की भाषा कहानी के सर्वदा उपयुक्त है। सरल और सुबोध मुहावरों के प्रयोग ने उसे और भी सजीव बना दिया है। आपका हास्य एवं व्यंग बहुत ही शिष्ट है। कहानियों के अतरिक्त आपने कुछ लेख भी लिखे है। इन लेखों की भाषा अत्यन्त सरल किन्तु प्रभावशालिनी है।

संक्षेप में श्री सुदर्शन जी हिन्दी साहित्य के वह उज्ज्वल नक्षत्र हैं जिन्होंने अपने तेजमय आलोक से भारतीय साहित्याकरण के प्रत्येक क्षेत्र को आलोकित कर हिन्दी को जो अपूर्व देन दी है उनसे हिन्दी साहित्य की श्री समृद्धि में सदैव चार चाँद लगते रहेंगे।

प्रश्नोत्तर ७ इसका उत्तर दी गई व्याख्या में देखिये।

१६ मेरा मकान

सारांश श्री गुलाब राय एम० ए० जिला आगरा के जलेसर नामक कस्बे के रहने वाले हैं। छतरपुर राज्य से लौटने पर आपने आगरा में ही नौकरी कर ली और साथ ही जैन बोर्डिङ्ग हाउस के वार्डन भी हो गये। किसी कारण वश एक वर्ष बाद ही उससे त्याग पत्र दे दिया। अब रहने के लिए मकान बनवाने का विचार हुआ। क्योंकि जलेसर में रहकर बच्चों की शिक्षा का उचित प्रबन्ध नहीं हो सकता था। अतः आपने अपने आर्थिक सलाहकारों की उपेक्षा कर मकान बनवाने का निश्चय कर लिया।

मकान बनवाने के लिये जमीन तलाश की गई। जिस स्थान पर आप जमीन चाहते थे वह बिक चुकी थी। एक गड्ढा (नीचा स्थान) अभी बाकी था। आपने जमींदार की बातों में आकर उसी की रजिस्ट्री करा ली।

जमीन ले लेने पर ठेकेदार और कारीगर तेजी से आने लगे। और व्यय का अनुमान किये बिना ही मकान का काम आरम्भ हो गया। यद्यपि तहखाना इत्यादि बनवाकर व्यय में कम खर्च करने का अनुमान किया गया किन्तु सब व्यर्थ हुआ। अधिक व्यय करने पर भी इच्छानुसार मकान न बन पाया। किन्तु सन्तोष इस बात का रहा कि स्वयं महगाई में आ गये किन्तु दूसरे को नहीं ठगा।

पृष्ठ ६० सआदतमन्द=आज्ञाकारी और योग्य। किन्तु मेरे मत में शासन का अभाव ही शासन की श्रेष्ठता थी=मैं उसी शासन को अच्छा समझता था जिसमें शासन (हुकूमत) बहुत कम रहे। दण्ड विधान के घोर समर्थक थे=दण्ड देना उचित समझते थे। आत्मसंयम=अपने मन तथा इन्द्रियों को वश में रखना। स्वार्थ परायणता=स्वार्थ में लगे रहना। पराकाष्ठा=सीमा। स्थान भ्रष्टा न शोभन्ते दन्ता केशा नखाः नराः=दाँत, बाल, नाखून और मनुष्य स्थान भ्रष्ट होकर शोभायमान नहीं होते। पैर सौर से बाहर निकल जाते=शक्ति से अधिक व्यय हो जाता।

व्याख्या पृष्ठ ६१ मैं यह समझता था ... आज्ञा मिल गई।

यह गद्यांश श्री गुलाबराय एम० ए० द्वारा लिखित 'मेरा मकान' से लिया गया है। बाबूजी जैन हाऊस के त्याग के सम्बन्ध में इस प्रकार कहते हैं :

मुझे यह भली भांति ज्ञात था कि मनुष्य तो स्वर्ग का अधिकारी तभी तक रहता है जब तक उसके पुण्य संचित रहते हैं। पुण्यों के नष्ट होने पर वे स्वर्ग से गिरा दिये जाते हैं। अतः राज्य और अधिकार के सम्बन्ध में यह सोचना कि ये बहुत दिन तक रहेंगे बड़ी मूर्खता थी। जब सम्राट अष्टम ने तुरन्त ही राज्य छोड़ दिया था तो फिर मैं अपने अधिकार से क्यों चिपटा रहता। मैंने तुरन्त त्याग पत्र दे दिया और वह दुःख के साथ स्वीकार कर दिया गया। किन्तु अधिकारियों ने इतनी कृपा की कि मुझे गर्मियों की छुट्टियों में 'हाउस' में रहने की आज्ञा दे दी।

पृष्ठ ६२ जर्जरित काय=दुर्बल शरीर वाले। शाह मदार= एक अत्याचारी बादशाह। सत्ताधिकारी=अधिकार प्राप्त रहने वाले। क्षीणतेज=तेज हीन। लोमस=एक ऋषि जिनकी आयु बहुत बड़ी थी। अनित्यता=नश्वरता। पौरुष धिगैश्वर्यम्=इस पौरुष और ऐश्वर्य को धिक्कार है।

पृष्ठ ६३ शब्दार्थ जिह्वाग्र सरस्वती हंसारूढ़ हो ब्रह्मलोक चली गई=जो उत्तम विचार मस्तिष्क मे आये थे वे सदा के लिये नष्ट हो गये। संसार एक सुन्दर कविता से वञ्चित रह गया। संसार उनकी एक सुन्दर कविता न पढ़ सका। व्यसन=शौक। अन्धा जैसा।

पृष्ठ ६४ काबुल में भी गधे होते हैं=धनी परिवार में भी निर्धन होते हैं। दिल बैठता जाता है=उदास होता जाता था। क्षितिज= वह स्थान जहाँ पृथ्वी और आकाश मिलते हुए दिखाई देते हैं।

पृष्ठ ६६- सुरसा=एक राक्षसी थी जिसने लङ्का जाते समय हनुमान की परीक्षा ली थी। प्रलय-पयोधि उमड़ कर उस छोटे से गढ़े से भर जाने वाला है यह गढ़ा मानो प्रत्यक्ष के सागर के समान

भर जायगा। चूना लगाया=ठग लिया। वसुन्धरा बैंक में जमा होने लगा=नीवों के रूप में पृथ्वी में गाड़ा जाने लगा। इश्तिदाए इश्क=प्रेम का आरम्भ। पस्त: कद=छोटे कद वाला। पस्त हिम्मत =निराश। दिल्ली दूरस्त=दिल्ली दूर है (सफलता दूर है) वबाल जान=जीवन के लिये दुःख दायक। देर आयद दुरस्त आयद=देर से किया गया काम ठीक होता है। दादुर ध्वनि=मेढ़कों का शब्द। साम, दाम, दण्ड, भेद=नीति के चार अंग अर्थात समझा बुझा कर। ऊँट के मुँह में जीरा=बड़ी आवश्यकता के लिये थोड़ा सा।

पृष्ठ ६६ शगल=मनोरंजन। आरी=तंग। साँप छछूंदर की सी गति हो रही थी=साँप छछूंदर को पकड़ कर न तो खा सकता है और न छोड़ सकता है क्योंकि खाने से अन्धा और छोड़ने से कोढ़ी हो जाता है। ब्रह्मानन्द सहोदर काव्य रसास्वादन =ब्रह्मा-नन्द के समान ही आनन्द देने वाला काव्य का आनन्द।

प्रश्नोत्तर २ श्रीमान् बा० गुलाब राय जी हिन्दी के लब्ध प्रतिष्ठ एवं सिद्धहस्त लेखक। तथा योग्य समालोचक हैं। अनेक वर्ष तक छतर-पुर राज्य में उच्च पद पर प्रतिष्ठित रहकर आज कल आप आगरे में साहित्य सेवा में लगे हुए हैं। आगरे से निकलने वाला 'साहित्य सन्देश' आपके ही सम्पादकत्व में निकल रहा है। दर्शन शास्त्र साहित्य पर आपका समानाधिकार है। 'नवरस' एवं हास्य रस पर लिखे हुए ग्रन्थ एवं निबन्ध आपकी साहित्यिक मर्मज्ञता का परिचय देते हैं। आपके 'तर्कशास्त्र' कर्तव्य शास्त्र तथा फिर निराश क्यों। इत्यादि ग्रन्थ भी साहित्य समाज के आदर की दृष्टि से देखे जाते हैं।

बा० गुलाब राय जी उच्च कोटि के निबन्ध लेखक हैं, आपने भावात्मक और विचारात्मक दोनों प्रकार के निबन्ध लिखे हैं। इस प्रकार के लेखों में आपकी भाषा संस्कृत पदावली लिए हुए हैं। आपके तर्क ऐसे अकाट्य होते हैं कि पाठक को तथा उन्हें स्वीकार करना ही पड़ती है।

आपने जहाँ 'आदर्श जीवन' स्वावलम्बन संघर्ष कुव्यसन

इत्यादि गम्भीर विषयों पर लेख लिखे हैं वहाँ 'मेरा मकान' जैसे सरल विषयों पर भी। आपकी भाषा विषयानुकूल गम्भीर एवं सरल है। अर्थात् गम्भीर साहित्यिक एवं दार्शनिक लेखों की भाषा गम्भीर संस्कृत पदावली युक्त तथा उर्दू शब्द विहीन होती है। किन्तु जो सरलता हास्यरस मय लेख है उनकी भाषा सरल मुहावरों के बाहुल्य से युक्त तथा उर्दू शब्दों से भरी हुई होती है इस प्रकार की भाषा में शब्द सरल और वाक्य होते हैं। छोटे तथा समासान्त शब्दों का प्राय अभाव सा रहता है लेखकों को प्रामाणिक बनाने के लिये आप सूक्तियाँ तथा नीति वाक्यों को भी उद्धृतकर देते हैं। एक उदाहरण लीजिए

जमीन मिलते ही कारीगर और ठेकेदार उसी भांति मँडराने लगे जिस प्रकार मुर्दे को देखकर गिद्ध मडराते है। मुझे भी अपनी महत्ता का मान होने लगा। जबसे रियासत छोड़ी थी, लोग मेरा पीछे नहीं छोड़ते थे। और इक्के, तांगे वालों के सिवा कोई मुझे 'हुजूर' नहीं कहता था, एक दम हुजूर साहब, और गरीब-परवर, अन्न दाता सब कुछ बन गया।

प्रश्नोत्तर ३ पैर सौर से बाहर जाना = अपनी शक्ति से अधिक व्यय कर देना।

साँप छछून्दर की गति होना = दुबिधा मे पड़ जाना।

प्रश्नोत्तर ४ प्रत्यात्तर = प्रति + उत्तर। गर्वोक्ति = गर्व + मुक्ति। धिगैश्वर्य = धिक + ऐश्वयम्। विघ्नेश = विघ्न + ईश।

प्रश्नोत्तर ५ अनाहारी = अन = आहारी = नञ् तत्पुरुष। जर्जरित काय = जर्जरित है काया जिसकी बहुव्रीहि। आगा पीछा- आगा और पीछा द्वन्द्व। प्रत्यक्ष अक्ष के प्रति अव्ययीभाव। अन्नदाता अन्न का दाता सम्बन्ध तत्पुरुष। प्रलय पयोधि प्रलय का पयोधि सम्बन्ध तत्पुरुष। दिल्ली दरवाजा दिल्ली का दरवाजा सम्बन्ध तत्पुरुष। मनुष्य डुवान मनुष्य का डुवान सम्बन्ध तत्पुरुष।

प्रश्नोत्तर ७ लोमस ऋषि = एक चिरजीवी ऋषि। जनमेजय का

नाग यज्ञ परीक्षित के पुत्र जनमेजय ने पिता की रक्षा के लिये नागों को यज्ञ में भून दिया था। साम दाम दण्ड भेद की नीति नमो नर्मी से और कभी उसे धमका कर काम निकालना। विश्वकर्मा देवताओं के कारीगर। नूह का तूफान पुस्तक के अन्त में दिये गये परिशिष्ट' में देखिये।

१७ साहित्य माधुरी

सारांश साहित्य में जो माधुरी है वह न तो योगियों की समाधि मे है और न रति रङ्ग में। सूर तुलसी इत्यादि की कविता मे जो आनन्द है वह अत्यन्त दुष्प्राप्य है। जो सुख काव्य रसिकों को प्राप्त होता है वह न तो योगियों को और न बीरों को। वास्तव में काव्यास से संसार सारपूर्ण है।

संसार में परिवर्तन होने पर भी काव्यानन्द मे कोई अन्तर नहीं आने पाया है क्योंकि यह ब्रह्मानन्द सहोदर है। कोई साहित्य को कोरी कल्पना मानते है किन्तु ऐसा वे ही मानते हैं जो साहित्य जौहरी नहीं है। जो कविता को कोरी कल्पना मानते हैं उनके लिये तो कविता मर चुकी है किन्तु जो सरस हैं और साहित्य के पारखी है उनके लिये यहाँ सदाआनन्द है। जो सच्चे साहित्यक होते हैं वे अपने साहित्यानन्द को किसी प्रकार भी छोड़ना नहीं चाहते चाहें लोग उन्हे अकर्मण्य अथवा खूसट कहते रहें क्योंकि इसमे जो आनन्द है वह अन्य नहीं हैं।

पृष्ठ १०१-शब्दार्थ रत्नाकर=समुद्र। मानस मंजरी=आनन्द से भरा हुआ हृदय। कविता-कादम्बिनी=कविता रूपी शराब। रस रहस्य=रस का भेद। रसा सव=रस रूपी मादक पदार्थ।

पृष्ठ १०१ व्याख्या वैसे तो सर्वत्र ....धरी है।

श्री वियोगी जी साहित्य माधुरी की उत्तमता बताते हुए कहते हैं: यों तो ब्रह्मा की सृष्टि आनन्द से भरी है किन्तु साहित्य के सेवन मे जो आनन्द आता है वह आनन्द न तो बच्चों की क्रड़ा में आ सकता है; न वह आनन्द धन के सुखों में आ सकता है और न वह योगियों की समाधि में ही प्राप्त हो सकता है। जो आनन्द

साहित्य रसास्वादन में आता है वह आनन्द माधवी और मारिजका के रस में नहीं आ सकता।

पृष्ठ १०२ शब्दार्थ द्राक्षारस=अंगूरों की शराब । अमीरस= अमृत का रस। भव पारावार=संसार सागर। आत्मानुभूति= आत्मा का ज्ञान। उपलब्ध होता है=प्राप्त होता है। सहृदय जन= उत्तम रस से परिपूर्ण हृदय वाले।

व्याख्या पृष्ठ १०२ इसमें डूबने वाले ...... कर लेते हैं।

श्री वियोगी जी रसास्वादन के आनन्द का वर्णन करते हुए कहते हैं: जो लोग साहित्य के रस का आनन्द लेने लगते हैं उन पर न तो किसी विशेष प्रकार की प्रकृति का प्रभाव पड़ता है और न किसी प्रकार के समय का। इस आनन्द में सदा सुख ही सुख रहता है। जिस सुख को योगी लोग कठिन परिश्रम से प्राप्त करते हैं। उसी सुख को साहित्य रसिक पुरुष बिना परिश्रम के ही पा लेते है।

व्याख्या १०३ संसार .... अखण्ड रही।

श्री वियोगी जी साहित्य माधुरी की नित्यता बताते हुए कहते हैं:-

यह बात ठीक है कि संसार परिवर्तन शील है किन्तु काव्य का जो आनन्द है उसमें कभी भी परिवर्तन नहीं होता है। अर्थात् काव्य के आनन्द में हम जितने ही लीन होते हैं वह उतना ही बढ़ता जाता है। अनेक परिवर्तनो के कारण तथा अनेक हलचलों के कारण भी साहित्य के आनन्द में किसी प्रकार की भी कमी नहीं आई और न इसका कोई रूप ही बदला। ज्ञानियो और दार्शनिकों ने अनेक वाद विवाद कर अपने तर्कों द्वारा अपने अपने सिद्धान्तों का प्रतिपादन कर अपने अपने मतों का प्रचार किया जिससे कभी मत की अधिकता हुई तो कभी किसी की किन्तु साहित्य के आनन्द में कभी भी तनिक सी भी कमी नहीं आई।

पृष्ठ १०४ रसज्ञ=रस का आनन्द जानने वाले। आस्तिक= ईश्वर के अस्तित्व को मानने वाला। अस्ति=है। सुधा=अमृत। अदृष्ट=दिखाई न देने वाली।

पृष्ठ १०२ किसी के मन में " " क्या समझ सकते हैं।

श्री वियोगी जी काव्यानन्द की उत्तमता का वर्णन करते हुए कहते हैं :

कोई काव्य के आनन्द को केवल कोरी गप्प समझता है और कोई इसे केवल मनोरंजन की सामग्री मानता है। कोई इससे कभी-कभी इसी प्रकार आनन्द लेना चाहता है जिस प्रकार चटनी को चाटकर लोग जरा सा आनन्द ले लेते हैं। किन्तु इस प्रकार के विचार वाले लोग काव्य के सच्चे आनन्द को नहीं जानते हैं क्योंकि उनके पास वह हृदय नहीं है जो साहित्यिकों के पास होता है। इस प्रकार या तो वे लोग कहेंगे जो रात दिन काम धन्धों में लगे रहते हैं या वे कहेंगे जो धन पाकर बड़ा अभिमान करने लगते हैं और काव्य प्रेमियों को तुच्छ समझने लगे हैं। या ऐसा वे लोग कहेंगे जिनके पास न तो कोई सहानुभूति है और न दुखियों के लिये जिसके हृदय में दर्द है। किन्तु जो साहित्य के रस का महत्व जानते हैं वे इसे कोरी कल्पना नहीं कह सकते। उनके लिये तो यह ईश्वर के अस्तित्व के समान ही सदा रहनेवाला आनन्द है। वे इसे क्षणिक आनन्द देने वाला न मान कर उसे सदा आनन्द देने वाला मानते हैं। किन्तु इस आनन्द का अनुभव वह नहीं समझ सकता जो केवल तुकबन्दियों से ही आनन्द उठा लेता है।

पृष्ठ १०४ विद्वच्चक्र चूडामणि = विद्वानों में सर्वश्रेष्ठ। भ्रमर = भौंरा। शुष्क = सूखा।

पृष्ठ १०५ अलख जगा रहे हैं = सदा उपासना में लगे हुए हैं। लोप = नष्ट। प्रवृत्त करना = लगाना। आरूढ़ होना = चढ़ना।

प्रश्नोत्तर १ पाठ का सारांश देखिये।

प्रश्नोत्तर २ जो लोग साहित्य को केवल कोरी कल्पना मानते हैं; या केवल क्षणिक मनोरंजन की सामग्री समझते हैं, या जो साहित्य की परख करना नहीं जानते हैं अथवा सहृदय नहीं हैं वे साहित्य का आनन्द नहीं ले सकेंगे। इसके अतिरिक्त साहित्य का

आनन्द वे भी नहीं ले सकेंगे जो भोग विलासों में पड़े हैं या धन के क घमण्ड से मतवाले हैं। जिनके पास न कसक है और न पीड़ा है उन्हें साहित्य का आनन्द नहीं आयेगा।

प्रश्नोत्तर ३ —श्रीवियोगीजी का जन्म सं० १९५३ वि० में छतरपुर रियासत में हुआ था। आपके जीवन का अधिकांश भाग साहित्य सेवा में और हरिजन में व्यतीत हुआ है। अछूतों के उद्धार के लिये आपने बड़ी लगन और तत्परता से प्रयत्न किया है। आपने दिल्ली से निकलने वाले 'हरिजन सेवक' का सम्पादन किया है। भाषा शैली वृज भाषा के परम भक्त एवं उसे वीर बनाने वाले तथा हिन्दी के कवि और सुलेखक श्री 'वियोगी हरि' जी का स्थान महारथियों में से प्रमुख है। वृज तथा खड़ी दोनों भाषाओं पर आपका समानाधिकार है। आपने वृजभाषा जैसी कोमल भाषा में 'वीर सतसई' लिखकर उसे वीर भाषा बना दिया है। आप अलङ्कारमयी कठिन भाषा लिख सकते हैं वहाँ बोलचाल की घरेलू भाषा में मार्मिक तथा प्रभावशालिनी अन्योक्ति भी लिख सकते हैं। आपका 'परिश्रान्तपथिक' इसी प्रकार की सरल भाषा युक्ति शैली का एक सुन्दर गद्य काव्य है। आपकी इस प्रकार की भाषा शैली में ओज प्रवाह तथा भावुकता रहती है। उसमें प्रायः परिचित शब्दों का प्रयोग होता है यत्र तत्र उर्दू शब्दों तथा मुहावरों की छटा देखने को मिलती है। आपके गम्भीर विषयों की भाषा में स्वतः गम्भीरता आ गई है। इस प्रकार की भाषा में समासान्त पदावली का अधिकता रहती है। विषय को प्रामाणिक बनाने के लिये आप स्थान-स्थान पर सूक्तियाँ और उदाहरण भी दे देते हैं। "मैं इन विद्वच्चक्रचूड़ामणियों को दूर से ही नमस्कार करता हूँ।" इत्यादि शिष्ट वाक्यों द्वारा आपने अरसिकों पर छींटा कसी भी की है। आपकी भाषा का नमूना देखिये :

"वैसे तो सर्वत्र ही विधाता की सृष्टि में माधुरी भरी है, किन्तु जो माधुरी साहित्य सौन्दर्य में है, जो माधुरी इस रत्नाकर में है, जो माधुरी मार्मिक जनों की मानस मंजरी में है वह किशोर-लावण्य में,

लक्ष्मी लहरी में, तथा योगियों की समाधि में कहाँ ?''

प्रश्नोत्तर ५ अलख जाना=तत्परता से काम करना। नीरस बांस को चूसना=तुम्हारा यह काम नीरस बांस को चूसना है। इससे कुछ लाभ नहीं होगा। पानी से घी निकलना=तुम इस आदमी से धन चाहते हो। इससे धन पाना तो पानी से घी निकलने के सम्मान है।

प्रश्नोत्तर ८ मर्माहत मर्म+आहत-दीर्घ सन्धि। अत्यावश्यक-अति+आवश्यक यणसन्धि। विद्वच्चक्रचूड़ामणि विद्वत्+चक्र चूड़ामणि व्यञ्जन सन्धि। निरुद्योगी- निः+उद्योगी व्यञ्जन सन्धि।

१८ मुण्ड माल

सारांश। उदयपुर के नवयुवकों में उत्साह की लहर दौड़ रही है। घोड़ों की हिन हिनाहट और हाथियों की चिघांड़ के साथ साथ शस्त्रों की झनकार सर्वत्र सुनाई पड़ रहा है। वीर सजकर निकल रहे हैं और युवतियाँ उन पर पुष्प वर्षा कर रही हैं। अठारह वर्ष के नवयुवक महाराणा राजसिंह आज सोत्साह औरङ्गजेब का दर्पदलन के लिये जा रहे हैं।

हाड़ावंश की सुलक्षणा राजकुमारी के साथ उनका विवाह हाल में ही हुआ है। महाराणा उसे देखकर उससे मिलने के लिये चन्द्र-भवन में चढ़ गये। हाड़ी रानी ने महाराणा की घबराहट को देख कर उनकी घबराहट का कारण पूछा ! महाराणा ने बताया कि औरङ्गजेब रूपनगर के राठौर वंशी राजकुमारी को हठ पूर्वक लेना चाहता है और वह राणा बहादुर को वर चुकी है। हमें राणा बहादुर के साथ जाना है जहाँ से लौटने की कोई आशा नहीं है। केवल तुम्हारी चिन्ता है। किन्तु ऐसे अवसरों पर ही क्षत्रियों की परीक्षा हुआ करती है। हाड़ी रानी ने सान्त्वना देते हुए मोह छोड़ने को कहा। भारत की महिलाएँ स्वार्थ के लिए सत्य का विनाश करना नहीं चाहती। उसने बताया कि वीरों ने-अबलाओं की रक्षा कर उज्वल यश प्राप्त किया

है। आप मेरा मोह छोड़िये मैं आपसे स्वर्ग में मिल जाऊँगी। राणा ने जाते समय सतृष्ण नेत्रों से रानी की ओर देखा। रानी ने सोचा कि यदि राजा का मन मुझमें लगा रहा तो राजा साहस पूर्वक रण न कर सकेंगे। इतने में राणा के सेवक ने आकर रानी से राणा के लिये चिन्ह माँगा। रानी ने अपना सिर काट कर चिन्ह रूप में दे दिया। राणा ने उसे गले में बाँध लिया और साहस पूर्वक युद्ध किया।

व्याख्या पृष्ठ १०७ उदयपुर की धरती''' बखानने में व्यस्त है।

उदयपुर की युद्ध की तैयारियों का वर्णन करते हुए बाबू शिव पूजन सहाय जी कहते हैं राणा के बाजों के जोर से बजने के कारण ऐसा मालूम पड़ता है कि उदयपुर की पृथ्वी काँप रही है। डक्कों की चोट सुनकर घोड़े इधर उधर भाग रहे हैं। काले मेघों की तरह हाथी उमड़ चले आये हैं। सारे नगर में घन्टों का शब्द गूँज रहा है। शस्त्रों की झनकार तथा शंखों की गूँज से दसों दिशाएँ गूँज रही हैं। राजपूतों के झन्डे इस प्रकार लहरा रहे हैं मानो राजपूतों की कीर्ति फैल रही हो। सुन्दरी सौभाग्यवती स्त्रियाँ और कुमारियाँ वीरों पर पुष्प वर्षा कर रही हैं और भाट लोग वीरों का यशोगान कर रहे हैं।

पृष्ठ १०८ -अँटते=समाते। सामरिक=युद्ध सम्बन्धी। नवौढ़ा=नव विवाहिता। सुलक्षणा=अच्छे लक्षण वाली।

व्याख्या पृष्ठ १०८ हाड़ा वंश की .... प्रकट हुआ है।

रानी का वर्णन करते हुए भी सहाय जी कहते हैं: हाड़ा वंश की सुकुमारी कन्या बड़ी सुशील थी और बड़े अच्छे लक्षणों वाली थी। राणा को साथ उसका विवाह हुए दो चार ही दिन हुए थे। अभी उसके हाथ से कंगना नहीं खुला था। उसकी आखें काजल से शोभायमान थी। उसकी पीली और पवित्र चुनरी अभी मैली नहीं हुई थी। सुहाग का पहला सिन्दूर ही अभी मांग में भरा हुआ था। अभी तक वह महलों में अच्छी तरह घूमी भी नहीं है। उसकी बोली कोयल के

समान मधुर थी किन्तु वह अभी सारे महल में नहीं गूँजी थी। उसके पैरों में महावर लगा हुआ है। अभी तक उसके सुनहरे नेत्रों से संकोच दूर नहीं हुआ है। अभी तक उसके सुन्दर मुख को किसी ने नहीं देखा है। आज उदयपुर की परम सुन्दरी रानी उदयपुर की शोभा देखने आई हैं। उसका मुँह ऐसा प्रतीत होता है मानो मेघों में चाँद निकला हो।

पृष्ठ १०६ शब्दार्थ—मुखारविन्द=कमल के समान सुन्दर मुख। उद्वेग=घबराहट। धुमुक=बहुत जोर का। चपला=बिजली। ढलैत =ढाल लेकर लड़ने वाले। कमनैत=धनुपधारी। अनुरूपा=अनुपम सुन्दरी।

पृष्ठ १११-११२ शब्दार्थ—सतीत्व रत्न लुट जायगा=रत्न से भी बढ़कर मूल्यवान् सतीत्व नष्ट हो जायेगा। हृदय रूपी हीरे को परख कर पुलकित हो गया=हृदय को पवित्र जानकर बहुत प्रसन्न हुआ। सतष्णा=इच्छा भारी। प्रशस्त=तेज पूर्ण। रतनारे लोचन ललाम रण रस मे पगे हुए हैं=उनके लाल नेत्र वीरता से इस प्रकार चमक रहे हैं मानों वे युद्ध के लिये अत्यन्त उत्सुक हों।

पृष्ठ ११२-व्याख्या मानों वे उस .... हो जाते हैं।

रानी का आलिङ्गन करते समय महाराणा बड़े सुन्दर लग रहे थे। वे ऐसे प्रतीत हो रहे थे मानो रानी के पारस के समान हृदय से अपने लोहे के समान कठोर हृदय को लगाकर उसे सोना बना रहे हों। वास्तव मे ऐसे हृदयों के आलिङ्गन से शक्ति और वीरता हीन मनुष्य भी वीर बन जाता है। आलिङ्गन के बाद चूड़ामणि ने कहा कि हमारा हृदय ऊंचे सिंहासन के समान है और उस पर तुम जैसी नारियाँ ही विराज सकती हैं अर्थात् तुम जसी स्त्रियों का ही हमारे हृदय पर प्रभाव पड़ सकता है। अच्छा अब हम युद्ध के लिये जाते हैं जिसमें मर कर हम सदा के लिये अमर हो जायेंगे।

पृष्ठ ११३-तुम्हारी ही आत्मा हमारे शरीर मे बैठकर इस रण भूमि में लिये जाती है=तुम्हारी ही प्रेरणा से मैं रण भूमि में आ रहा

हूँ। हम अपनी आत्मा तुम्हारे शरीर में छोड़कर जा रहे हैं=हम शरीर से ही रण में जा रहे हैं किन्तु हमारा मन तुम्हारे ही साथ है। कवच की कड़ियाँ धड़ाधड़ कड़क उठी=उनके हृदय मे बहुत अधिक जोश आ गया।

प्रश्नोत्तर १-रानी ने राणा को विचलित होते हुए देखकर इस प्रकार कहा=सत्य और न्याय की रक्षा के लिये रण में जाने वाले क्षत्रिय को बुरी वासना में नहीं फंसना चाहिये। भारत की महिलाएं नहीं चाहती कि स्वार्थ के लिये सत्य का संहार किया जाय। यदि एक सती का सतीत्व नष्ट हो गया तो राजपूतों का उज्वल यश नष्ट हो जायेगा। वीरों ने अबलाओं की रक्षा कर ही उत्तम यश प्राप्त किया है।

प्रश्नोत्तर २-रानी हाड़ा-हाड़ा वंश की सुलक्षणा सुशीला और सुन्दरी सुकुमारी है। वह विविहता पत्नी है जिसे पति के यहाँ आये हुए दो चार ही दिन हुए हैं। जिसकी हाथ की मेंहदी न तो छुटी है और पैरों की महावर। जिसकी चुनरी अभी मैली नहीं हुई है और जिसका सौभाग्य चिन्ह सिन्दूर अभी तक बदला नहीं गया है न तो अभी तक उसकी पिकवाणी राज महल में गूँजी है और न नूपुरों की ध्वनि ने राज=महल को गुञ्जारित किया है।

वह वीर पुत्री है और वीर पत्नी है। उसके लिये रण भूमि क्रीड़ा भूमि और रण मे मरण अमरता का दिव्य सदेश है। पति को रण में जाता हुआ देखकर वह फूली नहीं समाती है और उसके पथ को मंगलमय बनाने के लिये अपनी नेत्र सुधा का दान देने को उद्यत हो जाती है।

रानी हाड़ी वह वीर पत्नी है जो किसी दशामें भी पति को रण पयान के समय उदास देखना नहीं चाहती पति को मलिन मन देखकर वह पूछ ही तो उठती है="प्राणनाथ मन मलीन क्यों? उमंग में उदासीनता कहाँ से चू पड़ी? आपका चेहरा क्यों उतरा हुआ है।

और जब वह पति से सुनती है कि उसे उसकी चिन्ता है तब

तो वह भोग विलास को धिक्कार कर पति के हृदय में रण के लिये सहारा भर देती है।

पति के रण में चले जाने पर जब उसका सेवक प्रणय चिन्ह मांगने आता है तब वह उसे अपना सिर काट कर दे देती है जिससे कि पति उसका मोह छोड़कर युद्ध मे विजय प्राप्त कर सके।

संक्षेप में हाड़ी वह वीरांगना है जिसके लिये युद्ध एक खेल और प्राणों का बलिदान शुभ्र यश का गान है सत्य और न्याय की रक्षा उसके जीवन के पवित्र सिद्धान्त हैं और उनकी रक्षा के लिये वह सब कुछ छोड़ देने को तैयार है। वह "प्राण जांय पर बचन न जाहिं" की पक्ष पातिनी है और इसी के पालन में सब कुछ नौछावर करने को तैयार है।

प्रश्नोत्तर ४ चहल पहल चहल और पहल द्वन्द समास। चन्द्र बदन चन्द्र रूपी बदन रूपक कर्म धारय। कोमलांगी—कोमल है अंग जिसका बहुब्रीहि।

सहज सुलभ सहज जो सुलभ कर्म धारय। जरा जर्जर जरा से जर्जर करण तत्पुरुष। लोचन ललाम लोचन जो ललाम कर्म धारय। भोग विलास—भोग और विलास द्वन्द।

प्रश्नोत्तर ५ सामरिक समर से स्वार्थ में क प्रत्यय। धूमिल—धूम से ल प्रत्यय लगा कर विशेषण। बसैन बाना से त प्रत्यय। अस्ति से त्व प्रत्यय लगा कर भाव वाचक संज्ञा। कुंचित कुंच से त प्रत्यय लगा कर विशेषण बना है।

१६ रुपया

सारांश संसार में सदैव से ही रुपये का ही मूल्य रहा है। क्या बालक क्या जवान और क्या बुढ्ढे सभी रुपये से प्रेम करते हैं। मनुष्य उससे प्रेम ही नहीं करते बल्कि उसके सेवक भी हैं। उसी के द्वारा मनुष्य की उन्नति और अवनत्ति होती है। संसार में दिखाई देने वाले गुण जैसे सत्य-असत्य, हर्ष, शोक, ममता आदि सब रुपये

के ही कारण हैं। रुपये के स्वर में जो मधुरता है। वह देवताओं के वाद्यों मे नहीं। कोयल के मधुर स्वर में नहीं और न संसार के किसी बाजे मे है। रुपये के स्वर के आगे मनुष्य इन सभी को भूल जाता है।

रुपयों को ठुकरा कर इस संसार में कोई भी सुख प्राप्त नहीं कर सकता। राम रावण युद्ध, महाभारत का युद्ध और ब्रिटेन जर्मनी का युद्ध सब रुपये के कारण ही हुये और जिस पर रुपये की कृपा हुई वही विजयी हुआ। रुपये की शक्तियाँ ईश्वर की शक्तियों से बढ़ी हैं। रुपये के द्वारा संसार में बड़े से बड़ा भले से भला और बुरे से बुरा कार्य किया जा सकता है अतः रुपया ही सब कुछ है।

पृष्ठ ११५ शब्दार्थ वशवर्तिनी=वश में की हुई। क्षमता=शक्ति। अलौकिक=इस लोक से परे। मधुरिमा=मीठापन, मधुरता। वीणापाणि=सरस्वती। लक्ष्मीपति=विष्णु। पाँच जन्य=शङ्खा रत्न काकली=मधुर वाणी। कामिनी=सुन्दर स्त्री। डमरू वाले=शिवजी।

पृष्ठ ११६- भव भयहरण=संसार के दुख दूर करने वाला। धवलवर्ण=श्वेत रङ्ग। रुष्टि तुष्ट=क्रोध और प्रसन्नता। सास्व=विश्वास। प्रत्यक्षवाद=जो कुछ हो वह आँखों के सामने हो। सद्यः फल दानी=शीघ्र फल देने वाला।

ठाकुर जी बोलते नहीं ······ मैं रुपया हूँ।

यह गद्यांश पान्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' द्वारा लिखित 'रुपया' नामक पाठ का है। रुपया अपनी आत्म कहानी कहते हुये यह सिद्ध करता है कि मेरी शक्ति ईश्वर की शक्ति से भी बड़ी है। वह कहता है कि मन्दिर में रखकर पूजी जाने वाली ईश्वर की मूर्ति न बोलती है न पैरों से चलती है और न लोगों को उसपर इतना विश्वास ही होता है कि उसकी सहायता से उनका कार्य हो जायगा। इसके विपरीत रुपये को बजाओ तो वह शब्द करता है। वह एक स्थान से दूसरे स्थान पर हाथों हाथ पहुँच जाता है। अभी बम्बई है तो दूसरे दिन

कलकत्ते में। जिस व्यक्ति के पास रुपया है उसे यह विश्वास है कि मैं रुपये के बल से यह काम कर लूँगा अथवा करवा लूँगा। मनुष्य जितना रुपये को चाहते हैं उतना देवताओं को नहीं। ईश्वर मे भी वह तेज और शक्ति नहीं जो रुपये में हैं। वर्तमान समय में प्रत्येक वस्तु तर्क की कसौटी पर कसी जाती है उसे सिद्ध करने के लिये उदाहरण चाहिये अथवा उसे आँखों के सामने करके दिखाना चाहिये। रुपये मे ये सम्पूर्ण गुण विद्यमान है। वह दिखाई भी देता है शीघ्र फल देने वाला है उसमे आकर्षण है वह जबकि ईश्वर दिखाई नहीं देता कठोर तपस्या करने के बाद फल देता है उसके रूप रङ्ग का पता नहीं जो आकर्षित करे। अतः युग के अनुसार रुपया ही ईश्वर हैं और ईश्वर से भी अधिक शक्तिमान है।

पृष्ठ ११६, ११७ शब्दार्थ मर्यादा=लज्जा। 'सर्वधर्मान। परित्यज्यमामे के शरण व्रज=सम्पूर्ण धर्मों को त्याग कर मेरी शरण में आओ।

प्रश्न १ लेखक ने रुपये को ईश्वर से बड़ा क्यों माना है।

उत्तर रुपया ईश्वर से बड़ा इसलिये माना है कि वर्तमान समय में रुपये की ही महत्ता है। जिसके पास रुपया है वह सब कुछ कर सकता है जिसके पास रुपया नही वह कुछ नहीं कर सकता। दर दर घूमने वाला भिखारी संसार के दुखों से दुखी है उसे यदि रुपया मिल जाता है तो वह अनेक सुखों का भोग करने लगता है अतः रुपया जन दुःख हरण और अशरण शरण है। रुपये के द्वारा ईश्वर द्वारा रचित प्रकृति में परिवर्तन कर दिये जाते हैं और ईश्वर अपनी प्रकृति को बदलती हुई देख कर भी उसे अपने अनुकूल नहीं बना सकता बल्कि रुपये वाला अपनी इच्छानुसार उसे बदल डालता है। ईश्वर जहाँ वर्षा नहीं करना चाहता वहाँ रुपया वर्षा कर सकता है। ईश्वर जहां पहाड़ बनाता है। वहाँ मनुष्य रुपये से मैदान बना लेता है। इस प्रकार रुपया ईश्वर से अधिक शक्तिशाली है।

लोगों ने ईश्वर को बोलते हुये नहीं सुना किन्तु रुपया बोलता है।

ईश्वर की मूर्ति को एक स्थान से दूसरे स्थान पर चलते हुये नहीं देखा किन्तु रुपया चलता है। ईश्वर के उपासकों को ईश्वर पर इतना विश्वास नहीं रहता कि उनका कार्य ईश्वर की सहायता से हो ही जायगा जबकि रुपया रखने वाले की सहायता से यह विश्वास रहता है कि उनका कार्य अवश्य हो जायगा। रुपये के आगे मनुष्य ईश्वर को भूल जाता है। रुपये में ईश्वर से अधिक आकर्षण है। मनुष्य को जितना ध्यान रुपये का रहता है उतना ईश्वर का नहीं। अतः रुपया ईश्वर से बड़ा है।

प्रश्न २ आजकल धन देवता की पूजा की प्रधानता से कौन कौन सी खराबियां हो रही हैं? उनका संक्षेप में उल्लेख करो।

उत्तर- धन के द्वारा जन समुदाय की उन्नति तथा अवनति दोनों ही हुई हैं। सदुपयोग ने मनुष्य की उन्नति की है और दुरुपयोग ने अवनति की है। अधिकतर यह देखा गया है जिन लोगों को धन मिल जाता है वह अभिमान में आकर अनेक अनुचित कार्य करने लगते है। संसार में धन ही उनकी प्रिय वस्तु हो जाती है उसको प्राप्त करने के लिय वे मनुष्य की समाज की और राष्ट्र की उपेक्षा करने लगते हैं धन प्राप्त करने के लिये जमींदार किसानों का शोषण करते हैं। साहूकार निर्धनों का और मिल मालिक मजदूरों का शोषण करते हैं ब्लैक मारकिट करके राष्ट्र और समाज दोनों का ही अहित करते हैं। वर्तमान समय में ये कार्य नित्यप्रति बढ़ते जा रहे हैं और लोग धन प्राप्त करने के लिये नये २ साधनों का अविष्कार कर रहे हैं। डकू बनकर लड़कों को उड़ाना, स्त्रियों को बेचना और उससे भी अधिक बुरे कार्यों को अपनाने लगे हैं।

प्रश्नोत्तर ३ मेरा जन्म अमेरिका की एक खान में हुआ था। मैं अपनी मां की गोद में आनन्द के साथ रहता था। मुझे न कोई दुःख था न अशान्ति। मेरे साथ मेरे अन्य भाई भी थे जिनसे हिल-मिल कर मेरा समय आनन्द पूर्वक व्यतीत हो रहा था।

'सब दिन जात न एक समाने' बाबा तुलसीदास जी की चौपाई

के अनुसार मेरे सर पर आपत्तियों की काली घटायें मड़राईं। एक दिन कुछ लोग खोदते-खोदते मेरे घर के पास भी पहुँचे। उन्होंने मुझे गर्व पूर्वक मेरी मां की गोदी से छीन लिया और पकड़ कर बाहर ले आये। मुझे रेल के डिब्बे में सवार कराके न्यूयार्क भेज दिया गया जहाँ मुझे एक कारखाने मे शरण मिली। मैं बाहर मैदान में पड़ा रहा जहाँ मुझे गर्मी, वर्षा और जाड़े का सामना करना पड़ा। अब मेरी विपत्तियों का और भी बढ़ना आरम्भ हुआ। मुझे बिजली की भट्टी में डालकर इतना तपाया गया कि मेरी चिर सहचरी मिट्टी तथा अन्य बन्धुओं से मेरा बिछोह हुआ और मुझे गलाकर अपने सभी स्वजनों से अलग कर दिया गया। मैंने हृदय पर पत्थर रख सब कुछ सहन किया। मुझे अब अपनी कुरूपता से छुटकारा मिल गया था इस कारण मुझे कुछ संतोष हुआ।

एक दिन अनायास कुछ लोगों ने समुद्र के किनारे बंदरगाह पर लाकर डाल दिया। मैं अपने इस भाग्य पर आश्चर्य कर रहा था। मुझे दूसरे दिन जहाज पर लाद दिया गया और मुझे अब अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि मैं समुद्री यात्रा पर था। कई दिन पश्चात मुझे बम्बई बंदरगाह पर लाकर उतारा गया।

बम्बई से मुझे फिर एक कारखाने पर भेज दिया गया जहाँ मुझे फिर नई आपत्तियों का सामना करना पड़ा। मुझे फिर इतना तपाया गया कि मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि इस बार मुझे अपना अस्तित्व ही खोना पड़ेगा। मुझे गला कर सांचे में ढाला गया। सांचे से निकलने पर तो मेरा रूप अत्यन्त ही सुन्दर था। मुझे चन्द्रमा की भाँति गोल सुन्दर मुखड़ा मिला। बाहर निकलने पर तो मेरा बड़ा आदर सत्कार हुआ। अब तो मुझे बालक, वृद्ध, स्त्री पुरुष सभी चाहते हैं सभी मुझ से प्रेम करते हैं। अब मैं अपने सौभाग्य पर प्रसन्न हूं।

प्रश्नोत्तर ४- पाण्डेय बेचन जी शर्मा 'उग्र' उन साहित्यकों में से

हैं जो अपनी उग्र लेखनी से हिन्दी मे युगान्तर उपस्थिति कर सकते हैं आपका जन्म सन् १६०१ में चुनार में हुआ था। हिन्दू सेन्ट्रल स्कूल से अधूरी शिक्षा प्राप्त कर आप साहित्य क्षेत्र मे कूद पड़े और कहानी आत्म कहानी, लेख नाटक उपन्यास इत्यादि से साहित्य की वृद्धि और पुष्टि करने में जुट गये। उग्र जी आदर्शवाद के पक्षपाती न हो कर यथार्थवाद के पक्षपाती हैं। आप आदर्शवाद के नाम से समाज की बुराइयों की ओर से न तो स्वयं आँख मीचना चहते हैं और न समाज को ही अज्ञानान्धकार में रख कर उसे प्रत्यक्ष और यथार्थ की ओर से धोखे में डाले रखना चाहते हैं।

आप भावा वेश में जो कुछ भी लिखते हैं उसमें भावों की उग्रता तथा भाव व्यञ्जना की प्रगल्भता रहती है। आपके वाक्य छोटे औरशब्द सरल होते हैं किन्तु उन शब्दों में प्रवाह और प्रभाव रहता है। आप विशुद्ध अथवा परिमार्जित हिन्दी के पक्षपाती न हो कर बोलचाल की हिन्दी के पक्षपाती हैं प्रचलित उर्दू अथवा अंग्रेजी शब्दों को आप धड़ल्ले से अपना लेते हैं। आपकी भाषा का नमूना देखिये: "ठाकुर जी बोलते नहीं, मैं बोलता हूँ उनसे बड़ा हूँ। ठाकुर जी चलते नहीं मैं चलता हूँ उनसे मेरी अधिक साख है। देवताओं मे वह आकर्षण नहीं, जो मुझ में है। ईश्वर में वह तेज तथा शक्ति नहीं जो मुझ में है।"

प्रश्नोत्तर ५ बुढ़ौती बूढ़ा से भाववाचक संज्ञा। भनभनाहट भनभनाना से भाववाचक संज्ञा। तुष्टि तोष से भाववाचक संज्ञा। बेरहमी बेरहम से भाववाचक संज्ञा। मधुरिमा मधुर से भाववाचक संज्ञा। पराजित पराजय से त प्रत्यय लगाकर विशेषण।

प्रश्नोत्तर ६ पाञ्चजन्य श्री कृष्ण के शंख का नाम विजय के समय बजाया करते थे। सप्तशती— दुर्गाचरित्र के सात सौ मन्त्रों की पुस्तक। यह दुर्गापाठ भी कहलाता है। नवदुर्गाओं में इसका विशेष रूप से पाठ किया जाता है। प्रत्यक्षवाद— इसमें आदर्श भूत

को न देखकर प्रत्यक्ष की ओर विशेष ध्यान दिया जाता है। महाभारत कौरव पाण्डवों के विशाल युद्ध का नाम इसमे पाण्डवों की विजय और कौरवों की पराजय हुई थी। प्रकृति—सृष्टि के दो अंग हैं पुरुष और प्रकृति। पुरुष के आदेशानुसार प्रकृति सृष्टि की रचना करती है।

२० ताज

सारांश संसार का प्रत्येक व्यक्ति सदैव से ही इस प्रयत्न में रहा है कि किसी प्रकार वह इस अनित्य संसार में अपने को अमर रख सके यदि शरीर को नहीं तो कम से कम वह संसार में एक ऐसी याद गार छोड़ जाय जो सदैव ही बनी रहे। पिरेमिड बड़े बड़े मकबरे कीर्तिस्तम्भ और विजय द्वार आदि इसी उद्देश्य से मनुष्यों द्वारा बनवाये गये हैं। समय के आगे इनकी भी नहीं चली है वे भी नष्ट होने से नहीं बचे हैं।

कुछ मस्तिष्कों ने अधिक चतुराई से काम लिया है और उन्होंने ऐसे स्मृति चिन्ह बनवाये हैं जो समय के भयंकर प्रवाह में भी अपना अस्तित्व रख सके है। ताजमहल भी उन्हीं अद्वितीय कृतियों में से एक है।

ताजमहल का निर्माण मुगल साम्राट शाहजहां ने अपनी प्रियतमा मुमताजमहल की स्मृति मे कराया था। शाहजहां को सिंहासन पर बैठे हुये अभी तीन वर्ष ही हुये थे कि उसकी जीवन सहचरी को बच्चे को जन्म देने के कारण अपने जीवन का मूल्य देना पड़ रहा था। रात्रि के अन्धकार में शाहजहाँ अपनी प्रेयसी से अन्तिम मिलाप करने गया। दोनों के नेत्र एक दूसरे से मिले, कुछ मौनालाप हुआ कुछ वार्तालाप हुआ और अन्त में मुमताजमहल अपने जीवन साथी को छोड़कर संसार से सदैव के लिये विदा हो गई।

यद्यपि शाहजहाँ का सर्वस्व लुट गया किन्तु फिर भी उसने आशा

न छोड़ी। अपनी प्रियतमा की स्मृति में उसने ताज का निर्माण कराया जिसकी इमारत आज भी हमें संदेश देती है कि उसने अनेक राज्यों का उत्थान पतन देखा है उसके निर्माण कर्ता संसार से सदैव लिये के चले गये किन्तु वह आज भी दो प्रेमियों के प्रेम की प्रतिमा बना हुआ खड़ा है। जिस समय यह मकबरा बन कर तैयार हुआ होगा और शाहजहां नगर वासियों के सहित इसे देखने गया होगा उस समय न जाने उसके हृदय में कितने और कैसे भाव उत्पन्न हुये होंगे।

ताज के दर्शक आज भी दो आंसू बहाये बिना नहीं रह सकते। कौन ऐसा व्यक्ति है जो उस अद्वितीय प्रेम की साकार मूर्ति को देखकर चकित नहीं रह जाता। मनुष्य ही नहीं पत्थर भी उन दो प्रेमियों की याद में आंसू बहाते हैं। वर्षा ऋतु में एक बूंद। उस साम्राज्ञी की कब्र पर आज भी टपक पड़ती है। इस प्रकार शाहजहां ने अपनी मृत्योन्मुख प्रियतमा को दिये हुये वचन को पूरा कर उसके प्रेम को चिरस्थायी बनाया। आज भी ताज के श्वेत पत्थरों से आवाज आती है। "मैं भूला नहीं हूँ, आज भी मुझे उसकी स्मृति है।"

पृष्ठ ११८ शब्दार्थ कृति=निर्मित वस्तु। चिरस्थायी=सदैव रहने वाली। अनन्तर=बाद। सिहरना=कांपना। स्मृति चिन्ह=यादगार में बनवायी हुई वस्तुऐं। पिरेमिड=मिश्र में बनी हुई प्राचीन राज्यों की कब्र।

मनुष्य को स्वयं ....सिहर उठता है।

यह गद्यांश डा० कुमार रघुवीरसिंह द्वारा लिखित 'ताज' नामक पाठ का है। लेखक मनुष्य की भावनाओं के सम्बन्ध में कहता है कि—

मनुष्य इस संसार में अपने ऊपर अभिमान करता है। वह यह समझता है ईश्वर की बनाई हुई वस्तुओं में वह सर्व श्रेष्ठ है। मनुष्य जाति का इतिहास यह बताता है कि प्राचीन काल से ही मनुष्य इस प्रयत्न में लगा हुआ है कि किसी प्रकार उसे अमृत प्राप्त हो जाय जो उसे अमरत्व प्रदान करे किन्तु आज तक वह सफल नहीं हो सका

है। ज्यों ज्यों उसकी अवस्था बढ़ती है उसे अपनी मृत्यु निकट आती दिखाई देती है जो उसे विकल कर देती है। वह इस भय से कांपने लगता है कि आगे आने वाले समय में वह ही नहीं संसार में दिखाई देने वाली सम्पूर्ण वस्तुऐं भी एक एक करके नष्ट हो जायगी।

मनुष्य चाहता है .... विकल हो उठते हैं।

प्रत्येक व्यक्ति यह जानता है कि उसका अन्त अवश्यम्भावी है किन्तु फिर भी वह इस सत्य को भुला देना चाहता है। वह उस सुख की इच्छा करता है। जिसमें निमग्न होकर संसार के होने वाले विनास से अपनी रक्षा कर सके। बहुत से व्यक्ति ऐसे हैं जो इस विचार से ही तड़फने लगते है कि भविष्य में उन्हीं ही नहीं उनके द्वारा बनवाई हुई सारी वस्तुऐं ही इस संसार से नष्ट हो जायगी। इस संसार में उनकी याद करने वाला भी कोई न होगा। ऐसे विचार रखने वाले व्यक्ति संसार में अपनी अमिट यादगार छोड़ जाने के लिये बेचैन रहते हैं।

पृष्ठ ११६ शब्दार्थ मानवीय = मनुष्य की। अवलम्बन = सहारा। विद्यमान = स्थित, मौजूद। यत्र तत्र = जहाँ तहाँ। मूक भाव = मौन भाषा में। विफलता = असफलता। विक्षिप्त = पागल। अद्वितीय = अनोखा। कृति = रचना। प्रवाह = बहाव। अदृश्य = दिखाई न देने वाला। स्मारकों = स्मृति चिन्हों।

बहुतों के ऐसे प्रयत्नों .... अट्टहास कर रहे हैं

व्याख्या मनुष्यों ने अपने को चिरस्थायी बनाने के लिये अनेक प्रकार की इमारतें, विजय द्वार, कीर्ति स्तम्भ आदि बनवाये किन्तु समय ने उन्हें भी न रहने दिया और उसके खण्डहर मात्र रह गये हैं। वे खण्डहर आज भी मनुष्य की असफलता पर हँसते हैं और अपनी दुर्दशा पर रोते हुये प्रतीत होते हैं। अपनी असफलता के प्रत्यक्ष सप्रमाण को पाकर भी मनुष्य अभी तक अपनी भूल [illegible] सुधारने का प्रयत्न नहीं करता। मनुष्य की इस मृगतृष्णा पर [illegible] चकित कर देने वाली भयानक हँसी से हँसते हैं।

उन्होंने समय को .... अद्भुत उदाहरण है।

व्याख्या ईश्वर ने मनुष्य को मस्तिष्क प्रदान किया है जिसकी सहायता से मनुष्य अपनी स्मृतियों को समय के भीषण प्रवाह से बचा सकता है। वह अपने अनोखे सौन्दर्य बन्धनमें समय को बाँधने में सफल हुआ हैं। वह अपने स्मारकों को स्थायी बना सकने में सफल हुआ हैं। ताजमहल भी उसी मनुष्य के मस्तिष्क की सफलताओं का एक सुन्दर उदाहरणहै।

पृष्ठ १२० शब्दार्थ अचिरस्थायी = क्षणिक। विलीन = अस्त। सहचरी = साथिन। जीवन दीपक = जीवन रूपी प्रकाश। मौन लाप = मूक भाषा के बातचीत।

पृष्ठ १२१- शब्दार्थ -वियोग = बिछोह। हताश = निराश। किस्मत = भाग्य। सिंहासनारूढ़ = गद्दी पर बैठना। पाला पड़ रहा था = नष्ट हो रहा था। अदृष्ट = छिपा हुआ।

अन्तिम क्षण थे .... तैयारी कर रही थी।

व्याख्या शाहजहाँ की प्रियतमा मृत्यु शय्या पर पड़ी हुई थी अपने प्रेमी को छोड़ कर प्रेमसी सदैव के लिये इस संसा से विदा हो रही थी और भारत सम्राट शाहजहाँ जो अपनी शक्ति से सब कुछ कर सकता था अपनी सहचरी के प्राणों को बचाने में असमर्थ था। निराश प्रेमी हाथ पर हाथ रख अपने भाग्य पर रो रहा था। गद्दी पर बैठने से पूर्व शाहजहाँ ने न जाने कितने सुखों की कल्पना की थी न जाने कितने कार्य क्रमों की रचना की थी, आज वे सब उसकी आँखों के सामने हीं नष्ट हो रहे थे और उसकी जीवन सङ्गिनी उससे विदा हो रही थी।

पृष्ठ १२१ शब्दार्थ प्रेयसी = प्रेमिका। दार्शनिक = दर्शनशास्त्र के जानने वाले। विलग = पृथक। सन्तप्त = जलते हुये। विरहाग्नि = प्रेमी अथवा प्रेमिका के बिछोह की दुःखाग्नि। व्यथाओं = कष्टों। तटस्थ = भाग न लेने वाला।

दार्शनिक कहते हैं .... मुक्त भोगी ही कह सकता है।

व्याख्या ज्ञानी जन कहते हैं कि मनुष्य का जीवन पानी के बुलबुले के समान है जो बनते और बिगड़ते रहते हैं। मनुष्य का शरीर तो धर्मशाला की भांति है जिसमें आत्मा यात्री की भांति आकर कुछ समय तक ठहरती है, फिर छोड़कर चल देती है। इसमें मिलन और बिछोह का सुख और दुःख करना व्यर्थ है। किन्तु यह विचार सांसारिक संग्राम से दूर रहने वाले व्यक्तियों को ही शान्ति प्रदान कर सकते हैं विरह की अग्नि में जलते हुये हृदय को शान्ति नहीं पहुँचा सकते। संसार से पृथक रहने वाला व्यक्ति जीवन संघर्ष की सफलता और असफलताओं को क्या जाने। इसे तो वे ही जान सकते हैं जो इस युद्ध में भाग लेते हैं।

पृष्ठ १२२ शब्दार्थ समग्र=सम्पूर्ण। क्रूर=दुष्ट। भग्नावशेष=खण्डहर। जगतमाता=संसार की माँ अंचल=गोद। स्तब्ध=शान्त। मृत्यु-मुख=मरती हुई।

वह सुन्दर शरीर ... ... अञ्चल में समेट लिया।

व्याख्या मुमताज महल का सुन्दर शरीर पृथ्वी पर पड़ा रह गया और उसकी आत्मा अनन्त में विलीन हो गई है। शाहजहाँ के पास अपना सर्वस्व खो कर केवल उसकी सुख देने वाली याद, सदैव रहने वाला बिछोह का दुःख, दुःख भरी उसासें और जलते हुये हृदय के आँसू रह गये। सौन्दर्य की वह प्रतिमा कराल काल के द्वारा नष्ट कर दी गई जिसके टूटे फूटे अवयवों को पृथ्वीमाता ने अपनी गोद में रख लिया और उस प्रतिमा का पुजारी बिलखता ही रह गया।

पृष्ठ १२३ शब्दार्थ शुष्क हड्डियों=सूखी हुई हड्डियां। अगाध=अपार। श्वेत स्फटिक=सफेद संगमरमर। सुचारु=अत्यन्त सुन्दर व्यक्त=प्रगट। शनैः शनैः=धीरे धीरे। अतीव=अत्यन्त। पार्थिव जिह्वा=रक्त मास आदि पदार्थों से बनी हुई जीभ। उत्थान और पतन=बनना और बिगड़ना। समाधि=मृत व्यक्ति की स्मृति में बनवाई गई इमारत। सानी=बराबरी का।

भारत की वह सुन्दर कला .... खोज नहीं मिलता।

समय की गति बड़ी विचित्र है। भारतवर्ष की महान कला का साकार ताज आज भी अपने सौन्दर्य से संसार को मोहित कर रहा है किन्तु उसके बनाने वाले इस संसार से सदैव के लिये विदा हो गये। ताजमहल आज भी शाहजहाँ के अपनी प्रियतमा के प्रति अगाध प्रेम को प्रदर्शित कर रहा है। भारत सम्राट ने भारत के महान शिल्पकार तथा कलाकारों द्वारा इस अपूर्व समाधिक का निर्माण करा कर अपने अपूर्व प्रेम का जो परिचय दिया है उसकी समानता करने वाला संसार में आज तक कोई नहीं हुआ।

पृष्ठ १२४-१२५ शब्दार्थ पूर्णाहुति=पूरा होना। समारोह=जन समुदाय। दर्शक=देखनेवाला। वाह्य=बाहरी। सुप्तस्मृतियाँ=सोयी हुई याद। मध्याह्न=अवस्था का मध्य भाग प्रसिन=छिपा रहना। तेजोरूपी=कान्तिमान। घनीभूत सुन्दर पुञ्ज=एकत्रित सुन्दर समूह।

पृष्ठ १२६ शब्दार्थ उद्यान=बाग। वासनाए=इच्छायें अतृप्त=अपूर्ण। वैभव=ठाठ बाट। विधुर=पत्नी हीन। मनुष्य जीवन की..................स्वरूप उसे अधिक सोहता है।

ताज महल यमुना के तट पर खड़ा हुआ मनुष्य के दुःख पूर्ण जीवन की कहानी का स्वरूप है। वह बताया करता है कि मनुष्य का जीवन कितना अपूर्ण है। मनुष्य इस संसार में बहुत कुछ करना चाहता है किन्तु उसकी इच्छायें पूर्ण नहीं हो पाती कि काल उसे घर दबाता है और वह निस्सहाय होकर संसार से चला जाता है। शाहजहाँ का साम्राज्य नष्ट हो गया उसके वैभव की वस्तुएं तख्त ताऊस आदि सब कुछ विलीन हो गये। ताज महल पर भी वह पूर्ण शोभा नहीं रह गई है। उसके जड़े हुये रत्न न जाने कहाँ चले गये। लेकिन ताज महल आज भी अपने स्थान पर मनुष्य जीवन की करुण कहानी का स्वरूप बनकर अपने स्थ[illegible]र खड़ा हुआ है। ताज अपने सम्पूर्ण ठाठ-बाट को खोकर भी अप[illegible] रूप से भी अधिक शोभायमान हो रहा है।

पृष्ठ १२७ शब्दार्थ भग्न हृदय=टूटे हुये हृदय। बस रहा है=बसा हुआ है। अन्तर्हित=छिप जाना। स्खलित=गिरे हुये। त्यक्त=छोड़ा हुआ। विद्यमान=स्थिति। अक्षय=कभी नष्ट न होने वाला। सौरभ=सुगन्ध।

व्याख्या किन्तु आज भी .... सोहता है।

ताज महल को बने हुए बहुत दिन हो गये किन्तु उसकी सुन्दरता में आज भी कोई कमी नहीं आई है मानो यह पुराना ताज महल लोगों को बता रहा है कि बहुत दिन हो जाने पर भी उत्तम वस्तु की सुन्दरता और उसके आकर्षण में कोई कमी नहीं आती। ताज महल अपनी सुन्दरता से लोगों को अपनी ओर आकर्षित कर मुमताज महल के वियोग से शाहजहाँ को जो अत्यधिक दुःख हुआ उसकी याद दिला देता है। यद्यपि ताज महल का पुराना सौन्दर्य अब नहीं रहा है वह फीका पड़ गया है किन्तु उसका यह सौन्दर्य हीन स्वरूप पहले से अच्छा लगता है क्योंकि उसके इस रूप को देखकर दर्शकों को बहुत पुरानी स्मृतियों का भी स्मरण हो आता है।

व्याख्या वे कठोर पत्थर भी .... आ जाती है।

प्रति वर्ष एक बूंद साम्राज्ञी की कब्र पर टपकती है इसी की कल्पना करते हुए लेखक कहता है कि मानो शाहजहाँ के अत्यधिक दुःख को देखकर पत्थरों का दिल पिघल जाता है और उसकी एक बूंद सम्राज्ञी की कब्र पर गिर पड़ती है। यमुना नदी ताज महल के नीचे बहती हुई ऐसी प्रतीत होती है मानो वह सागर को शाहजहाँ की दुःख भरी कथा सुनाने जा रही हो। बरसात में यमुना नदी में बाढ़ आ जाती है वह ऐसी प्रतीत होती है मानो शाहजहाँ के दुःख को देखकर यमुना के हृदय में आंसुओं की बाढ़ आ जाती है।

व्याख्या उन श्वेत पत्थरों से .... चिर स्थाई बनाया।

ताज महल में गूंज होती है वह ऐसी प्रतीत होती है मानो शाहजहाँ कब्र में से कह रहा है कि मुझे मुमताज महल की याद है। ताज महल के देखने पर दर्शक को अनुभव होता है कि पुरुष के समान

कोमल मुमताज महल जो असमय में ही मर गई थी आज भी पत्थरों के रूप में विराजमान है पुरुष के समान कोमल मुमताज महल का शरीर नष्ट हो गया और उसकी आत्मा अन्त में लीन हो गई। अब तो इन पत्थरों के रूप में केवल उसकी स्मृति रह गई है। मृत्यु का यों तो कोई रूप नहीं है किन्तु शाहजहाँ ने ताज महल का निर्माण कर अपनी प्रेयसी की मृत्यु को वह सुन्दर स्वरूप दिया जिसकी संसार में तुलना नहीं है। यद्यपि मनुष्य का प्रेम बहुत दिन तक टिकाऊ नहीं होता किन्तु शाहजहाँ ने ताज महल का निर्माण करा कर अपने प्रेम को और उस प्रेम से उत्पन्न होने वाले दुःख को चिरस्थाई बना दिया है।

प्रश्नोत्तर १ मनुष्य अपने को चिरस्थाई बनाना चाहता है क्यों कि एक न एक दिन सर्वस्व के नष्ट हो जाने के कारण उसका शरीर कांप जाता है। अतः वह भौतिक संसार में अभिष्ट स्मृतियाँ छोड़ जाना चाहता है। इसके लिये उसे विश्वास है कि उसके नष्ट हो जाने पर भी ये स्मृतियाँ सदा बनी रहेंगी। अतएव अतीत स्मृतियाँ मनुष्य के लिये आकर्षण पूर्ण रहती हैं।

प्रश्नोत्तर २ मुमताज महल शाहजहाँ की जीवन सहचरी थी। शाहजहाँ को देखकर मुमताज महल के नेत्र खुले। दोनो का मौनालाप हुआ और उस मौनालाप में न जाने क्या क्या उथल पुथल हो गई। शाहजहाँ का सर्वस्व लुट रहा था अतः वह हाथ पर हाथ रक्खे हुए रो रहा था। उसकी सारी आशा और उमङ्गों पर पाला पड़ गया था। वह प्रेमाशवको मुख से लगाना ही चाहता था कि वह पृथ्वी पर गिर कर मिट्टी में समा गया। और शाहजहाँ हाथ मलता रह गया।

प्रश्नोत्तर ५ जिस प्रकार कि असमय में आँधी का झोंका आ कर दीपक को बुझा देता है उसी प्रकार मुमताज महल की भी अकाल में (समय से पहले) ही मृत्यु से शाहजहाँ को बहुत दुख हुआ और वह अपनी सुध बुध खोकर कि कर्तव्य विमूढ़ हो गया। उसे अपने

दुर्भाग्य पर बहुत दुःख हुआ। मुमताज महल के साथ जीवन के अनेक सुखों के भोगने की उमंगें उसके हृदय में थीं वे सब की सब नष्ट हो गईं। परम सुन्दरी मुमताज महल काल के गाल में इसी प्रकार चली गई। जिस प्रकार कोई खिलता हुआ पुष्प बे समय मे टूट पड़े उसी प्रकार मुमताज महल भी अपनी मृत्यु की अवस्था से बहुत पहले मर गई।

प्रश्नोत्तर ६ कीर्ति स्तम्भ कीर्ति को चिरस्थायी बनाने के लिये जो स्तम्भ बनाये जाते हैं उन्हे कीर्ति स्तम्भ कहते हैं। जैसे अशोक के स्तम्भ।

मृगतृष्णा। प्रत्यक्ष में लाभ की आशा स्पष्ट दिखाई पड़े किन्तु वास्तव में लाभ न हो।

पूर्णाहुति यज्ञ के समाप्त होने पर पूर्णाहुति होती है। अतः उत्तम काम की समाप्ति को भी पूर्णाहुति कहने लगे हैं।

तख्त ताऊस मोर के आकार का एक प्रसिद्ध राजसिंहासन जिसे शाहजहाँ ने बनवाया था।

प्रश्नोत्तर ७ 'मनुष्य की अभिलाषा' मनुष्य सब जीवों से अपने को श्रेष्ठ समझता है। वह अपने को अमर करना चाहता है। मनुष्य निकट आती हुई मृत्यु का नाम सुनकर चौंक जाता है। अतः वह इस डर को भुलाने के लिये सुखोपयोग में लगा रहता है।

२१ रामचन्द्र की राजनीति

सारांश मर्यादा पुरुषोत्तम राजा राम के जन्म लेने से पूर्व क्षत्रिय आपस में लड़ रहे थे और ब्राह्मण उनकी उद्दण्डता से दुखी होकर तपोवनों में विश्व विद्यालय खोलकर राज्य कार्य से तटस्थ हो गये थे। राष्ट्रीयता नष्ट हो गई थी और इसी कारण विदेह राज का स्वयम्बर निमन्त्रण महाराज दशरथ के पास नहीं आया था।

लङ्का का राजा विद्युत् शक्ति का स्वार्थी बन हो चुका था और उसने अपनी स्मृति से अपनी नगरी लङ्का को सोने जैसी ही बना दिया था। अब लङ्केश्वर भारत को अपने अधीन,करना चाहता था। आर्य

दानवों से मेल न रखकर उनसे दूर रहना चाहते थे। और आर्य संस्कृति के कई तत्वों को स्वीकार करने वालों को भी वे वानर (मनुष्य कोटि में संदिग्ध जीव) ही मानते थे। अतः रावण ने दानवों को अपने पक्ष में मिलाकर आर्य संस्कृति के केन्द्र ऋषियों के आश्रमों को नष्ट करवा देना चाहा।

दानवों को मिलाने के बाद रावण ने बालि इत्यादि वानरों को मिलाना चाहा। वह सीता स्वम्वर में बिना बुलाये इसी लिये आया कि जिससे वह कुछ राजाओं को फोड़ ले। अनार्य वाणापुर को स्वयम्वर मे देखकर वह उसके साथ वहाँ से हट गया।

ब्राह्मणों ने इस स्थिति से सजग होकर परशुराम जैसे क्रान्तिकारी को जन्म दिया किन्तु यह शासक न होकर केवल सैनिक ही रहे जिससे राष्ट्रीय सङ्गठन करने में असफल रहे।

विश्वामित्र को ब्राह्मणत्व और क्षत्रियत्व दोनों का अनुभव था। उन्होंने ऐसा प्रयत्न किया कि राम के द्वारा राक्षसों का विनाश हो गया तथा दशरथ एवं जनक राम के द्वारा प्रेम सूत्र में बंध गये।

राजा राम एक कुशल सैनिक और निपुण शासक थे। उनकी शासन कुशलता के कारण ही उनकी चौदह वर्ष की अनुपस्थिति में भी अयोध्या पर कोई आक्रमण नहीं कर सका। राम ने जो सबसे बड़ा काम किया वह यह कि उन्होंने नीच ऊंचों का सम्मेन्व पूर्णतया स्थापित कर दिया।

आर्य और अनार्यों के एक करने के बाद राम ने न तो किसी स्वार्थ की इच्छा की और न वे भोग विलास अथवा सम्पत्ति के ही लालच में पड़े। उन्होंने जो युद्ध किए वे विवश होकर किये और किसी की सम्पत्ति स्वयम न लेकर उन्ही के उत्तराधिकारियों को दे दी। राम ने साम्राज्य विस्तार के लिये कुनीति का कभी आश्रम नहीं लिया।

राम जानते थे कि विकृत अङ्ग के काट देने पर जिस प्रकार शरीर स्वस्थ रहता है उसी प्रकार नीचों के नष्ट कर देने से ही समाज सुखी रहता है अतः उन्होंने रावण को मार कर विभिषण को सुख

पूर्वक राज्य दिया। राम की अहिंसा किसी जीव को न मारने वाली थी और इसी अहिंसा का पालन कर उन्होंने समाज को सुखी बनाने का पूरा पूरा प्रयत्न किया।

पृष्ठ १२८ शब्दार्थ- मर्यादा पुरुषोत्तम=संसार के आदर्श पुरुषों में श्रेष्ठ। अविर्भाव=उत्पत्ति। प्रसार=फैलाव। उद्धत=उद्दण्ड। उपेक्षा=लापरवाही। निर्बाधि=बिना किसी रुकावट के। विलुप्त प्राय=लगभग नष्ट हुई थी। अस्तव्यस्त स्थिति=दशा का ठीक-ठीक न होना। उपनिवेशाकांक्षी=उपनिवेश (छोटे राज्य) की स्थापना करने का इच्छुक। लङ्काधिप=लङ्का का स्वामी। भौतिक विज्ञान=फिजिक्स। निरीक्षण किया=भली भांति देखा। आत्मसात्=अपने में मिलाना। दानव=राक्षस।

पृष्ठ १३० शब्दार्थ मैत्री=मित्रता। मानव=मनुष्य। केन्द्र=मुख्य स्थान। नरेश=राजा। उदासीन=जो न मित्र हों और न शत्रु हों। दूरन्देश=भविष्यकी बात सोचने वाला। सम्बन्ध स्थपन=सम्बन्ध जोड़ना। क्षुद्र=नीच। संहार=विनाश। सजग=सावधानी।

लोग भी .... न हो पाया।

रावण के अत्याचार देखकर ब्राह्मण सावधान हो गये। अन्याय को दूर करने के लिए और धर्म की रक्षा करने के लिये ब्राह्मणों में परशुराम जैसे वीर ब्राह्मण पैदा हुए जिन्होंने समाज में अनेक परिवर्तन कर दिये। किन्तु परशुराम में सैनिक की अर्थात युद्ध करने की ही योग्यता थी, शासन करने की नहीं थी। उन्होंने क्षत्रियों से अनेक बार राज्य छीन कर ब्राह्मणों को तो दिया किन्तु वे राष्ट्र के सङ्गठन करने में बिल्कुल असफल रहे।

पृष्ट १३१ शब्दार्थ अकृत कार्य=असफल। स्वतः=स्वयं। सद्वैद्य=अच्छा वैद्य। सदौषधि=अच्छी औषधि। अनुसन्धान=खोज। सुचारू=ठीक ठीक तरह। सम्पादन=पूराकरना। प्रवृत्त हुए=लगे। अनिमन्त्रित बिना बुलाए हुए। दूरस्थ=दूर दूर रहने वाले।

संस्थापित=प्रतिष्ठित। स्नेह सूत्र= प्रेम का सम्बन्ध। सूत्रपात= आरंभ। सतृष्णता=बहुत बड़ी इच्छा। आत्मीयता=अपनी जैसी समानता।

व्याख्या विश्वामित्र······ ········ सूत्रपात किया।

विश्वामित्र स्वयं राजा रह चुके थे अतः उन्हे ब्राह्मण और क्षत्रिय के कर्तव्यों का ज्ञान था। अतः उन्होने समाज का सङ्गठन तथा उसके दोषों के दूर करने के लिये रामचन्द्र जैसे योग्य पुरुष को इसी प्रकार ढूँढ लिया जिस प्रकार एक अच्छा वैद्य रोगी को नीरोग करने के लिए अच्छी औषधि ढूँढ लेता है, या जौहरी आभूषण के लिए अच्छा रत्न खोज लेता है। वे ही राम को अपने तपोवन में लाये जिससे राक्षसों का विनाश हुआ। यह उन्हीं का काम था कि राम जनकपुर गये और वहाँ उन्होंने अपना पराक्रम दिखा कर सीता के साथ विवाह किया जिससे महाराज दशरथ और जनक का सम्बन्ध स्थापित हुआ।

व्याख्या रामचन्द्रजी··················साहचर्य प्राप्त किया।

रामचन्द्र केवल युद्ध कुशल ही नहीं थे वे उत्तम शासन करना भी जानते थे। परशुराम ने राम को राज कार्य मे कुशल देख कर राज नीति के कार्यों में भाग लेना छोड़ दिया था। राम शासन करने में कितने कुशल थे इसका ज्ञान इसी से हो जाता है कि राम के चौदह वर्ष तक अयोध्या में न रहने पर भी न तो किसी राजा ने अयोध्या पर आक्रमण करने का साहस किया और न उनके ही किसी सम्बन्धी ने उनके राज्य के हड़पने की हिम्मत की। राम ने राजनैतिक सङ्गठन के साथ साथ सामाजिक सङ्गठन भी किया और वह यह था कि उन्होंने आर्यों और अनार्यों में दृढ़ सम्बन्ध स्थापित करा दिया जिससे नीच से नीच मनुष्य भी उन्हें अपना ही समझने लग गया।

पृष्ठ १३२ साहचर्य=साथ साथ रहना। अनार्य=नीच। ऐश्वर्य-सिद्धि=सम्पत्ति के लिये प्रयत्न। सौहार्दभाव=हृदय का

पवित्र भाव। अविनश्वर=सदा रहने वाला। अनिवार्य= आवश्यक।

पृष्ठ १३३ सद्भाव=उत्तम विचार। शासन प्रक्रिया शासन ढङ्ग। अहित=हानि। धर्मभाव से प्रेरित होकर=धर्म रक्षा को ध्यान में रखकर।

व्याख्या जगत में ....वध किया।

राजा प्रजा की रक्षा करने के कारण ईश्वर का प्रतिनिधि माना गया है। यदि वह अपने कर्तव्य को ध्यान में रख कर उत्तम शासन करता है किसी से भी द्वेष न रख कर अत्याचारियों के साधनों को नष्ट कर देता है या समाज को हानि पहुँचाने वाले मनुष्यों को नष्ट कर देता है तो उसका यह कार्य भी अहिंसा ही माना जायगा क्योंकि एक की हिंसा से अनेकों रक्षा हो जाती हैं। राम ने इसी धर्म को ध्यान में रख कर रावण तथा बालि का वध किया था।

प्रश्नोत्तर ३ राम ने आर्य ऋषियों तथा अनार्य हरिजनों के बीच ऐसा सम्बन्ध स्थापित किया जिससे वे आत्मीयता का अनुभव कर उनके साथ रहने की सदा इच्छा रखने लगे कोल किरात इत्यादि अनेक अनार्य जातियाँ उनके मौन प्रभाव से प्रभावित होकर उनकी ओर खिंच गईं और बड़े बड़े ऋषि भी उनके आगे सिर झुकाने लग गये।

राम ने आर्यों और अनार्यों को वश में कर लेने के बाद राम किसी भी स्वार्थ में नहीं फसे। न उन्होंने ऐश्वर्य चाहा और न प्रसिद्धि। उन्होंने युद्धों को बहुत बचाया किन्तु अहिंसा के नाम पर वे युद्ध से पीछे भी नहीं हटे। उन्होंने किसी का राज्य न लेकर उसी के बन्धु को उसका राज्य सौंप दिया। उन्होंने कूटनीति का आश्रय न लेकर अपने शील और सदाचार से भारत पर ही नही सारे विश्व पर अपना साम्राज्य स्थापित कर लिया।

प्रश्नोत्तर ४ राम के राज्य में नीच ऊँच का सम्बन्ध बहुत दृढ़ था और दोनों एक दूसरे से सहानुभूति रखते थे और परस्पर मिलकर

काम करते थे। राम के सद्व्यवहार से कोल किरात इत्यादि नीच जातियाँ तथा अगस्तय वाल्मीकि इत्यादि बड़े बड़े ऋषि प्रभावित हो गये थे।

राम ने न कभी सम्पत्ति की इच्छा की और न राज की। उन्होंने न किसी की खुशामद चाही और न सेवा। उन्होंने न किसी का राज्य छीना और न सम्पत्ति। उन्होंने समाज के कल्याण के लिये अत्याचारियों का वध किया और उसका राज्य उसी के बन्धु को दे दिया। उन्होंने युद्ध को बहुत बचाया और अनिवार्य होने पर ही उसे किया।

किन्तु आज कल एक राज्य दूसरे राज्य के हड़पने की घात में रात दिन लगा हुआ है। ऊँच नीच का भाव बढ़ा हुआ है। स्वार्थ मय जगत एक दूसरे को निगल जाना चाहता है। युद्धों का बाजार गर्म है। पारस्पारिक सद्भावना तथा सहानुभूति का नितान्त अभाव है।

यदि हम चाहते है कि संसार में शांति हो युद्ध सदा के लिये रुक जाय। ऊंच नीच का भाव दूर हो जाय परस्पर प्रेम बढ़े तो हमे राम राज्य की स्थापना लिये प्रयत्न करना चाहिये।

प्रश्नोत्तर ५ मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र महाराज दशरथ के ज्येष्ठ पुत्र है। साम्य भाव उनमे कूट कूट कर भरा हुआ है। वह पिता के आज्ञाकारी पुत्र है और पिता की आज्ञा से बड़े भारी राज्य पर लात मार कर चौदह वर्ष के लिये वन चले जाते हैं।

वह एक कुशल शासक है। उनके शासन की उत्तमता के ही कारण चौदह वर्ष की उनकी अनुपस्थिति मे भी कोई शत्रु न तो उनके राज्य पर हमला कर सका और न कोई बन्धु ही उनके राज्य की ओर आँख उठा सका।

राम के लिये ऊंच नीच दोनों समान थे और उन्होंने दोनों को एक कर उनमे वह आत्मीयता पैदा कर दी कि दोनों एक दूसरे के

लिये जान देने को तैयार रहते थे।

राम में स्वार्थ का नितान्त अभाव है। राज्य का लोभ उन्हें छू तक भी नहीं गया है। वह न खुशामद चाहते हैं और न कोई सेवा।

वह किसी का राज्य हड़पना नहीं चाहते है बल्कि अत्याचारी को मार कर उसका राज्य उसी के बन्धु को दे देते हैं -

राम में वह शील, वह सौन्दर्य और वह सद्‌भावना है जिससे भारत ही प्रभावित नहीं होता अपितु सरा विश्व उससे प्रभावित होकर उनका गुण आज भी गाता है और भविष्य में भी गाता रहेगा।

२२ कहानी

सारांश बालक ज्यों ही बोलना आरंभ करता है त्यों ही वह अपनी दादी या नानी से कहानी सुनाने का आग्रह करता है। लोग उसे कहानी की असत्यता बता कर और कामों की ओर प्रवृत्त करना चाहते हैं किन्तु बालक की कहानी सुनने की इच्छा शान्त नहीं होती है। बालक जब युवा हो जाता है तब तो उसकी कहानी सुनने या पढ़ने की इच्छा और भी बढ़ जाती है।

दुनिया की कहानी इस प्रकार चलती है। पहले जल और अग्नि का निर्माण हुआ और उनकी आपस में धातु और पत्थर बनाने लगे।

फिर घास उगी, पेड़ बढ़े, पशु दौड़े और पक्षी उड़े। मनुष्यों ने जन्म लेकर अनेक प्रकार के अविष्कार किये जल, थल और नभ को नाप डाला। सृष्टि के व्यवस्थित हो जाने पर साहित्य का आरम्भ हुआ। मनुष्य ने अपने अनुभवों को परस्पर सुनाना आरम्भ किया और इस प्रकार कहानी साहित्य बढ़ने लगा।

विधाता रचित इतिहास और मनुष्य रचित कहानी इन्हीं दो से मानव का संसार बना है। मनुष्य की कहानी के लिये अशोक या अकबर की कथा जितनी सत्य है उतनी ही राज पुत्र की भी। साहित्य

में जितनी सत्यता हनुमान या दुर्योधन की है उतनी ही सत्यता इस राजकुमार की भी है जो सात राज्यों का धन खोजने निकल पड़ा था।

व्याख्या उस समय........ .. .. पानी नहीं निकलता

जिस समय लोगों ने बच्चे को बताया कि तीन चौके बारह तो सत्य हैं और राज पुत्र की कहानी असत्य है उस समय बालक अपने मन में उन समुद्र की कल्पना कर रहा था जो संसार के किसी नक्शे में नहीं है। इस समय बच्चा अपनी कहानी में इतना तन्मय हो जाता है कि उसे तीन चौके बारह के सुनने का ऐसा हलका ज्ञान रहता है कि उस समय उस पर विशेष ध्यान नहीं रखता और विशेष ध्यान के न देने के कारण वह तीन चौके बारह उसे याद नहीं हो पाते। उस समय तीन चौके बारह उसे इसी तरह याद नही होते जिस प्रकार मृगजल से पानी नहीं निकलता। नोट मृगजल गर्मी में प्यासे मृग दूर खड़े होकर धूप की झिलमिली में पानी सा देखते हैं किन्तु पास जाकर जल नही पाते हैं।

पृष्ठ १३६ शब्दार्थ योजना=काम करने का ढंग। स्पृहा= इच्छा। शैशव=बचपन। दमादम=लगातार।

पृष्ठ १३७ प्रदक्षिणा=परिक्रमा। वासना=उत्कट इच्छा। साधना=किसी काम के लिये नियम पूर्वक लग जाना। कामना= इच्छा। संघर्षण=कशमकश। आवर्तन=घुमाव फिराव।

व्याख्या इसके बाद..... .. ..शुरु हुई।

जल अग्नि की सृष्टि के बाद प्राणियों की सृष्टि का आरंभ हुआ। घास पेड़ इत्यादि बढ़ने लगे और पक्षी आनन्द के साथ क्रीड़ा करने लगे। कोई पूजा पाठ में लगकर मिट्टीके बर्तन से सूर्य को अर्घ्य देकर उसकी उपासना में लगा तो कोई सांसारिक सुखों में लीन होकर स्वतंत्रता के साथ सन्तान बढ़ाने लगगया। कोई जहाजों द्वारा संसार को परिक्रमा करने में लगा तो कोई वायुयान द्वारा संसार का भ्रमण

करने लगा। जीवों के इस प्रकार के व्यापार से सृष्टि में एक नई चहल पहल आगई।

मनुष्य को······ ·········· ········· ·····कहानी कहते हैं।

मनुष्य जीवन का सार। इतिहास कहानी साहित्य में ही विद्यमान है। पशु का मनोरंजन, भोजन, निद्रा और सन्तान पालन से हो जाता है किन्तु मनुष्य के मनोरंजन के लिए कहानी-साहित्य की आवश्यकता होती है। मनुष्य जीवन मे क्या-क्या घटनाएँ घटती हैं। सुख दुःख संयोग वियोग का मनुष्य जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है। और उससे प्रभावित होकर वह उसके बदले में क्या करता है इन सबका ज्ञान हमें कहानी साहित्य के पढ़ने से होता है इच्छा किस प्रकार वासना में बदल जाती है, मनुष्य की तृष्णा किस प्रकार बढ़ती जाती है, साधना और स्वभाव का किस प्रकार सम्बन्ध है, इच्छा के साथ घटना के मेल होने से किस प्रकार कशमकश होती है और उससे मनुष्य जीवन में क्या परिवर्तन हो जाते हैं इन सब बातों का ज्ञान हमें कहानियों से प्राप्त होता है। जिस प्रकार नदी का प्रवाह बिना रुके बहता रहता है उसी प्रकार कहानी साहित्य भी बिना रुके चलता चला जाता है। इसी कारण हम आपस में एक दूसरे से समाचार पूछते रहते हैं। इसके बाद फिर क्या हुआ इस कौतूहल के साथ मनुष्य के सुख दुःख कहानियों में भरे पड़े हैं। हम मनुष्य जीवन की इन्हीं घटनाओं को कहानी कहते हैं।

प्रश्नोत्तर १ सृष्टि के आरम्भ के साथ कहानी का भी आरम्भ हुआ। बच्चा ज्यों ही बोलने लगता है त्यों ही वह दादी नानी से कहानी सुनाने का आग्रह करता है। उसका यह आग्रह कहानी साहित्य को जन्म देता है और क्रमशः वह बढ़ने लगता है। मनुष्य की चेतना ज्यों ज्यों बढ़ती जाती है त्यों त्यो वह मनोविज्ञान का आश्रय लेकर इसे विकसित कर देता है कि कहानी का रूप सत्य सा प्रतीत होने लगता है।

प्रश्नोत्तर २ मनुष्य जीवन का इतिहास कहानी से ही होता है।

बच्चा ज्यों ही बोलने योग्य होता है त्यों ही कहानी सुनने की ओर प्रवृत्त होता है। बच्चा ज्यों ज्यों बड़ा होता जाता है उसकी कहानी सुनने या पढ़ने की इच्छा भी बढ़ती जाती है और उसकी यह इच्छा उसके जीवन के साथ ही समाप्त होती है।

जिस प्रकार पक्षियों का जीवन आहार निद्रा और सन्तान पालन है उसी प्रकार मनुष्यों का जीवन कथा है। सुख दुःख और संयोग वियोग की घटनाओं से मनुष्य-जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है और इच्छा, वासना, तृष्णा और कामनाओं की कशमकश मनुष्य जीवन पर क्या प्रभाव डालती है इसका ज्ञान हमे कहानी से ही होता है। मनुष्य जीवन में कहानी का प्रवाह आदि काल से रहा है और अन्त-काल तक रहेगा। यह प्रवाह मानव जीवन मे बहुत महत्त्व रखता है। जब तक मनुष्य जीवन में यह प्रवाह है तभी तक वह सजीव मनुष्य है।

प्रश्नोत्तर ४ विधाता एक दिन अपने कारखाने में अग्नि से जल और जल से अग्नि गढ़ने लगा। पृथ्वी में वाष्प पैदा हुई और धातु और पत्थरो के समूहों का निर्माण होने लगा।

इसके बाद प्राण सृष्टि का आरम्भ हुआ। घास उगी पेड़ बढ़े और पक्षी उड़े। कोई पूजा पाठ में लगा और कोई सासांरिक भोगों मे। किसीने जल यात्रा आरम्भ की किसी ने थल यात्रा और किसी ने नभ यात्रा।

पशु पक्षियों ने आहार निद्रा और सन्तान पालन तक ही अपने को सीमित रखा और मनुष्य ने अपने सुख दुःख और संयोग वियोग तथा जीवन पर पड़ने वाले उनके प्रभावों को एक दूसरे पर व्यक्त करना आरम्भ किया। मनुष्य ने एक दूसरे की, घटनाओं को बड़े कौतूहल के साथ गूँथा और यही जीवन की कहानी कहलाई। और इस प्रकार मानव-जीवन के साहित्य में कहानी का अभ्युदय हुआ।

शारदा प्रेस आगरा द्वारा शरद प्रकाशन मन्दिर के लिए मुद्रित।